संपादक
गणेश खुगशाल 'गणी'

यां मा क्वी संदेह नी छ कि जब समाज को विकास होण लगद त वे मा कति सांस्कृतिक छोंक फुटदन, लोक संस्कृति बि तौं मा एक छ ज्व अपणी अन्वार ल्हेकि दिखेण लगद पर यांमा कैतै छ्वटु अर कैंतै बड़ु बोलणो ठिक नी छ। यन सोचण से राजनीतिक, दार्शनिक अर साहित्यिक क्षेत्र मा आपस कि लेणि-देणि का द्वार ढके जांदन। लोक साहित्य साख्यूं बिटि चलीं सांस्कृतिक परम्परा को प्रमाण होंद अर जो यांको ख्याल नि रख्यालो त समाज तैं टोटा होलो।

गोविन्द चातक

धाद

साहित्य अर संस्कृति की मासिक पत्रिका

● वर्ष : 2 ● अंक : 6 ● जनवरी, 2017 RNI No. UTTGAR/2015/63986 ● मोल ₹ : 20/-

संकल्पना : लोकेश नवानी
संस्थापक सम्पादक : सुशीला बडोला
सम्पादक : गणेश खुगशाल 'गणी'
संसाधन : विनोद घनशाला, जगदीश बडोला
जगदीश नेगी
अन्वार : राकेश 'राका'
आकल्पन : चन्द्रविजय अरोड़ा
भितरा रेखांकन : लता शुक्ला
कार्टून : आशीष कुमार
सम्पादकीय कार्यालय : धाद
126, विकास मार्ग पौड़ी-246 001
दूरभाष : +91-9412079537
ई-मेल : dhad.garhwali@gmail.com
एक सालै सदस्यता : 220/- रुप्या
दिल्ली सम्पर्क : ए-162/UG-4, दिलशाद कॉलोनी,
दिल्ली-110 095
सम्पर्क :09013285624

पत्रिका मा छप्यां विचार लिख्वारु का अपणा विचार छन, यां खुणै सम्पादक मंडल को राजि होण जरूरी नी छ।
facebook : http ://www.facebook.com/dhaadpatrika

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक गणेश खुगशाल 'गणी' द्वारा
प्रगति प्रिंटिंग प्रेस, एजेंसी चौक पौड़ी,
पौड़ी गढ़वाल से मुद्रित कराकर 'धाद' कार्यालय : 126
विकास मार्ग पौड़ी-246 001 से प्रकाशित.
संपादक : गणेश खुगशाल 'गणी'

मकरैण हर हम

बगत बौगदो पाणि सि छ जैमा हमारा सुख-दुख, हंसी-खुशी, बैर-भाव, छाया-माया, बार-त्योहार, रीति-रिवाज, यख तक कि सर्या जीवन बगणौ रौंद। बगत का ये बगदा बौला मा हि हम अपणा-अपणा रंग-ढंगु मा छपत्वळैणा रंदौ, क्वी छालै रै जांद बैठ्यूं अर क्वी क्वी ग्वता मरि-मरी पार चलि जांद। क्वी डुब जांद अर कति दौं क्वी कै थामी क्वी कै के सारो ल्हेकि अर क्वी कै सारु दे कि खड़ा हाणा रौंदन, बस ई जीवन छ। अर एक दुसरा दगड़ खड्डु होणु ही समाज छ। अर जनि जिन हम कट्ठा ह्वे कि खड़ा होंदो तनि-तनि हमारा मन को उत्साह अर उल्लास बि फलण-फुलण बैठ जांद अर जख अपणि रंगत का दगड़ि लोगु का झुमटा लगा तखि हमारा उच्छव होया, यनि परम्परा त छ हमारा तीज-त्योहरूं कि।

अंग्रेजी मैनों को बदलेंदु साल अर पन्दरा दिन बाद सुर्ज को उत्तरैण होणो अर य उत्तरैण हमारा लोक मा अपणि तरौं का माथम को दिन जख गंगा न्हाणें परम्परा, प्रयागु मा गंगा स्नान, मकरैण, उत्तरैण, माघ की परम्परा। जख देखा ये दिन अपणा भाव अर भावना से उत्साह का दगड़ि जुड़दा थौळ, घर-घरूं में चढ़यां तैका, स्वाळा-भूड़ौं की किसराण, तिलु का लड्डू, खिचड़ी अर खिचड़ी मा कंकर्याळो घ्यू हमारा लोक की अपणि परम्परा, साख्यूं बिटि हमारी यीं पीढ़ी तक पौंछी छ।

मकरैण का पर्व की हमारा मुल्क मा अपणि अलग परम्परा छन। कुमौ मा उत्तरैण त गढ़वाल में मकरैणि अर उत्तरकाशी मा माघ, रंवाई जौनसार मा मरोज, बाड़ाहाट मा कंडार द्यबता का ढोल दगड़ि बाड़ाहाट को थौळ शुरू होंद त गढ़वाल मा कखि अपणि ताकत दिखौणों गैड खैंचणै (रस्साकस्सी) परम्परा छ त कखि गिंदी कौथीग की।

गिंदी कौथीग बि अपणि तरौ को कौथीग होंद जै कौथीग मा जन देखदरा पौंछदन जगु-जगु बिटि तनि खेलदारा बि अपणि-अपणि पट्टयूं बिटि। यो खेल अपणि तरौं को निरालो खेल छ। एक ही लक्ष्य छ कि जितणो छ अर यीं जीत का वास्ता गिंदेर अपणि आन-बान-शान लगै देंदन। अर यां को मान कै एक खिलाड़ी को नि होंद यो मान सर्या पट्टी को होंद, यानि य जीत-हार बि सामूहिक छ यनु भाव कै और खेल मा नि दिखेंदो।

सयूं अर लयूं

बोलदन कि सयूं अर लयूं कखि नि जांदो। मतलब जो सयालो अर लयालो स्यूं अपणा भितर ऐ जांद अर हमारि सम्पत्ति ह्वे जांद। अर य सक्या होयीं बि चैयेणी छ। पोर्‌वा साल येई मैना गढ़वळि का जण्या-मण्यां गितांग चन्द्रसिंह राही जी को स्वर्गवास ह्वे। तौं पर व्यंगकार अर कवि नरेन्द्र कठैत जिन धाद मा लेख कि अपेक्षा करि (जो स्वाभाविक बि छ जब गढ़वाळि मा यी छपेणी छ त और कैका सार रौण) हैंकि तरफ धाद की स्थिति य छै कि 11 तारीख राही जी का बारा मा सूचना मिलि त तब तक धाद छपेणों चलि गे छै।

सोशल मीडिया का ये जमाना मा अपणि बात बोलणो बड़ो माध्यम उपलब्ध छ। वेका समणि पत्रिका क्या छ (पत्रिका छपणो टैम अर छपाणो मशीन बि चयेंद) सोशल मीडिया मा त चट लेखो और पौंछा दुन्या कोणा-कोणा तक। तब सोशल मीडिया मा बवाल सि मचिगे तब लगि कि जन यो 'जड़्या नि खै कड़या खै' वाळो हिसाब ह्वेगे। पर गढ़वाळि का विद्वान लेखकोन बड़ि सूझ-बूझ का दगड़ि अफु पर नियंत्रण रखिकन शांत ह्वेकि यो मामलो अपणा आप ही सुळझै जो अपणा आप मा बड़ो काम छौ, असल मा लोकभाषा का लिख्वार छैं ही कथगा छन (यानि भौत नि छन) अर वो बि इनि अळझि जाला त काम कनुक्वे होलो? दुसरी तरपां गढ़वाळि भाषा तैं ल्हेकि हिन्दी अर अंग्रेजी मा तीखि टिप्पणी करण वळा कम नि छन। जो 'हैंका तैका मा अपणो भूड़ु पकौणा' माहिर छन। सि त फिर अपणा काम मा मि स्ये जांदन पर नुकसान त लोकभाषा को कर देदन इनै त छन जौ खुणि बोल्दन 'बण्या भाजिगे अर कठगो कोचिगे'।

लोकभाषा का लिख्वारु की सूझबूझ से यो बवाल थमेगे, येा अपणि भाषा का वास्ता घुट्यां घूंट छन। गढ़वाळि भाषा कि पत्रिका धाद को यो काम कै एका बसौ नी छ आप सब्यूं की मेनत को सुफल छ य 'धाद' अर हम सब मिल जुलि की ही यींतै अगनै ल्हिजै सकदौ बढ़ै सकदौ अर य त निमित्त मात्र छ असल मुद्दा त भाषा को छ।

• गणेश खुगशाल 'गणी'

ये मैने धाद
- मकरैणि हर हम 3

लोकमत 5

मकरैणि
- मकरैणि को पर्व गिन्दी कौथिग – चक्रधर कण्डवाल 6
- मकरैण–मकर संगराँद – वीणापाणी जोशी 10
- बाड़ाहाट को थौळु – आरती बधाणी 12
- मरोज त्योहार – सुरेन्द्र पुण्डीर 15
- मकरैणी संगरांद अर मेळा थौळा – राजेश जोशी 17
- जौनसार की मकरैंण – जी०डी० भट्ट 20

कविता
- रंवाल्टी कविता – दिनेश रावत 22

साहित्य
- गढ़वाळी साहित्य मा शृंगार रस – डॉ० सुरेन्द्र दत्त सेमल्टी 24

कथा
- पंदेरी तीस, घट्ट की भूख कख छै – कमल रावत 26

हुनर
- विजय की विजय गाथा – दीपक बेंजवाल 30

इत्यास
- बैजू की बामणी अर रामा धरणी – राकेश मोहन कण्डारी 33

विज्ञान
- सोलर ड्राइंग नाज सुखौणो को महत्वपूर्ण जरिया – डॉ० ईशान पुरोहित 35

व्यंग्य
- उत्तराखण्डी चुनौ को मण्डाण – सुरेन्द्र भट्ट 37

भाषा
- बोलचाल से फल्दि–फुल्दि च भाषा! – वीरेन्द्र पंवार 40

खबरसार
- एक समळौण्यां आयोजन दून लिटरेचर फेस्टिबल – धर्मेन्द्र सिंह नेगी 43
- लोकभाषाओं की संभावना अर चुनौती – गिरीश सुन्दरियाल 46
- याद करे गेनि चन्द्र सिंह राही – डॉ० रमेश चन्द्र घिल्डियाल 48

याद ऐगी पाड़ कु ह्यूंद

धाद दिसम्बर मैना कु अंक मिली। कबर पेज पर लिखीं गीत कि लैन 'ह्यूंद का दिन फिर बौड़ि ऐ गिन' देखि के ही पाड़ मा बितायां बचपन का दिन याद ऐगिन। भैर बरखा की झिणमिण और भितर चुलड़ा मा भुजेण भट-बौंरा। सैरि कुटुमदारि अर वोर-पोर का लोग चुलड़ि घेरि की बैठीं अर भट-बौंरू कि दावत का बीच कथा कान्यूं का दौर। कनि-कनि कथा। ह्यर्यां अब त सिरप याद औंदिन। अब यना मौसम मा कबि गौं मा जावा भि त न त वु लोग मिलदा, न भट बौंरूं का दावत होंदी अर न ही चुलड़ा जगौण क लखड़ा। सब्बूं का गैस धर्यां छन। जु दाना स्याणा कथा सुनौदरा छा वु या त भग्यान ह्वेगिन अर क्वी बच्यां भी छन त वु कथा लगौण भूलि गैन सैत।

खास बात य रै कि धाद कु यो अंक वे दिन मिली जै दिन भैर सगैं लगीं छै। रजै का प्वटगा बैठ्यां-बैठ्यां एक ही सिटिंग मा पूरी पत्रिका पढ़ि दे। पत्रिका पढ़दि दौं नेगी जी कु दादा अर ह्यूंद गीत याद आणूं छौ। पूरु गीत याद कनै कोशिश करणू छौ कि अगनै का पन्नू मा वु गीत मिलिगे।

ये गीत का अलावा गिरीश सुन्दरियाल जी कि कविता ह्यूंद भी दिल तैं छूण वाळि च। हौर अंकु का जन ही ये अंक मा भी गढ़वाळि का विद्वान लेखकूं की रचनाऊं का सगैं का बीच खूब आनन्द ले मिल। खुगशाल जी की सम्पादकीय हर बार की तरौं ये बार भी जिकुड़ी मा कबलाट करिगे। कन बात बोलि खुगशाल जी कि बल 'बगत बदलेगे, मनख्यूं मा टैम नि रैगि अपखुणि न अपणौ खुणि। सच्ची बात च। कै मा नि च टैम। बस मैना मा धाद ऐ जांदि त फिर से वु पुरणि याद नई ह्वे जांदिन। गौं-गौळा याद ऐ जांदान। जंदरा-उरख्यला का दिनु की याद ऐ जांदि। भागम-भाग की यीं जिन्दगी में आप हम जना लोगूं तैं अपणि जड़ूं से जोड़िक रखणौ जु प्रयास कना छन वु वास्तव में बन्दनीय प्रयास छ। उम्मीद छ कि धाद हमेशा यनी हम लोगूं तैं धै लगाणि रैलि। ये अंक का सब्बि विद्वान लेखकूं तैं पाड़ कु ह्यूंद याद दिलाण का वास्त भौत-भौत बधाई।

• अतुल भट्ट
गुड़गांव

मकरैणि को पर्व गिन्दी कौथिग

चक्रधर कण्डवाल

कृतियाँ : रेडियो पत्रकारिता, मीडिया के वर्तमान सन्दर्भ, मीडिया शब्दकोष अर ब्राडकास्टिंग के मूल तत्व
उत्तराखण्ड का लगभग 100 मेलों की रिपोर्टिंग, सेवानिवृत्ति का बाद बि आकाशवाणी का 'वाणी' पाठ्यक्रमों से जुड़्या छन

सम्प्रति : लोकभारती सदन, पदमपुर सुखरौ देवी रोड, कोटद्वार, गढ़वाल

मोबाइल : 9639309968

गढ़वाळ का इतिहास अर लोक परम्पराओं मा लगभग 150 गढ़ों को यदा-कदा जिक्र हून्द। वे मा शक्तिशाली अर समर्थवान, ताकतबर 52 गढ़ों का इतिहास तैं सही अर ठीक-ठाक मनै गे। जै का नामी-गिरामी सरदार, थोकदार, सूबेदार छया। यी सभी 52 गढ़ नरसिंह गढ़ छया। बाकी जु छया, वू नागगढ़ी, भैरवगढ़ी या माण्डलिक गढ़ छया।

पं० हरिकृष्ण रतूड़ी, डॉ० रणवीर सिंह चौहान, राय बहादुर पातीराम, डॉ० शिवप्रसाद डबराल 'चारण' आदि कई विद्वानों न भी लगभग यी मान कि लगभग 15वीं सदी से गढ़वाळ की उपस्थिति छयी। कनकवंश काब्य को रचयिता बालकृष्ण भट्ट भी बतौन्द न कि मेदिनी शाह का जमाना मा हरिद्वार मा जब कुम्भ को आयोजन ह्वे छयो तो भारत भर से सैकड़ों राजा शामिल ह्वेनी अर वो न अपणा-अपणा तम्बू लगैनी अर मेदिनी शाह तैं जगह नी मिली। गुस्सा मा मेदिनीशाह न अपणो तम्बू चण्डीघाट मा लगै दिनी अर तब गंगा से प्रार्थना करि कि 'मेरि गंगा होली त मी म आली' अर बतौन्दा छन कि गंगा चण्डीघाट की तरफ ऐगे। हमारा लोकगाथाओं, जागरों अर गीतों मा भी कई सच इनी प्रकार से प्रकटे होंदन। ज्ञान का दर्शन की भी मान्यता छ कि तर्क अर बुद्धि कै भी सच तैं उद्घाटित त कर सकदन लेकिन वों तैं स्थापित नी कर सकदा न। वैं तैं मात्र लोक या समाज ही स्थापित करद। गढ़वाळ का इतिहास का सन्दर्भ मा भी यी बात पता लगद।

गढ़वाल क यों 52 गढ़ों का विवरण से पता लग दू कि 'गिंदी' को यो अद्भुत खेल मात्र चार गढ़ों मा प्रचलित रै। यि गढ़ छना—

1. **अजमीर गढ़ :** जै क मन सबदार पयाल छया जो अजमीर पट्टी छ।
2. **गढ़कोट गढ़ :** ये का थोकदार छा बगड़वाल बिष्ट-यी ढांगू पट्टी मा छ।
3. **ढांगू गढ़ :** गंगा सलाण मा स्थित छ:। ये का क्षेत्र मा ढाँगू उदयपुर पट्टी आन्दन।

4. **लंगूर गढ़ :** लंगूरी अर भटपुड़ी क्षेत्र मा स्थित छना। यू क्षेत्र काण्डाखाल डाडामंडी क नजदीक छः।

आज यि 'कौथिग-प्रमुख तौर पर यों स्थानों मा आयोजित होंदन—

1. थलनदी
2. डाडामंडी
3. कटघर
4. कलसी
5. देवीखेत
6. चाक्योंसैंण
7. मवाकोट
8. किशनपुर
9. दालिमखेत
10. सांगुड़ा
11. परसुण्डाखाळ
12. घुसगलिखाळ

गिन्दी को खेल घुसगलिखाळ और परसुण्डाखाळ मा वे तरह से नी खिलैन्द, जै तरह से अन्य जगहों मा। हाँ! यों द्वि जगहों मा मात्र ढोल दमोऊ प्रतियोगिता होंदन-जै मा लोकवादकों की ढोल दमोऊ बजाणा का हुनर तैं दिखैं जान्द। कुछेक कलाधर्मी अर उत्साह धर्मी लोग 15-20 वर्षो से ये काम तैं करणा छन।

डाडामंडी अर कटघर मा त अनुमान छः कि गिन्दी को यो खेल 100 वर्ष से ज्यादा समय कु छः। बतान्द छन कि गढ़वाळ मा काग्रेंस की स्थापना 1919 का लगभग ह्वे, जब बैरिस्टर मुकुन्दी लाल अर गढ़केशरी अनुसूयाप्रसाद बहुगुणा का प्रयासों से यो काम ह्वे। वे टैम मा काग्रेंस क लोग यों मेलों मा ऐकन प्रचार-प्रसार करदा छया अर मेला मा लोगुं तैं आजादी क बारा मा भी बतान्द छया। जबकि थलनदी मा यो खेल ये से भी पैली बिटि शुरू छायी। जयहरि गाँव क स्वर्गीय मटरसिंह जी को त अनुमान छौ कि यो कौथिग लगभग 250-300 वर्ष पुराणों छः। भृगुखाल इन्टर कॉलेज का पूर्व प्रधानाचार्य एवं कस्याली निवासी स्वर्गीय दौलत सिंह नेगी भी ये कौथिग तैं आयोजित करण मा काफी वर्षों तक जुड़यां रैनी वू भी मानदा छया कि या परम्परा राजस्थान बटिक अर्यी लगदी। अजमेर उदयपुर और लंगूरी अर कटघर आदि पट्टियों को नाम राजस्थान की परम्पराओं से मेल खांदन।

प्रसिद्ध विचारक मैथ्यू आर्नाल्ड बोलदन कि संसार मा जु भी श्रेष्ठ सोचे ग्याई, अर बोल्ये गेई, वा ही संस्कृति छ। आदमी की बुद्धि, मन अर आत्मा की सतत साधना से ही संस्कृति फलदी-फुलदी छ। पी० डब्ल्यू० ब्रोयन न भी ब्वाल—Cultural Landscape is the concrete expression of human activities and natural environment, संस्कृति को विकास एक आदमी का द्वारा नी होंद-बल्कि समुदाय द्वारा होंद, वे का कार्यकलाप सामाजिक तानो-बानों से पुष्ट होंदन। वे की भाषा, लिवास, रहन-सहन, लोक-जीवन, त्योहार, मेला, गीत, लोकमानव का उल्लास वे मा रंग भरदन। वे का जीवन मा जमीन छ, हवा छ-पाणी छ, नदी-नाला छन अर जीवन प्रदान करण वाळा, ऊर्जा दीण वाळो सूरज छ।

ये वास्ता मकर संक्रांति को दिन सूरज की उपासना को दिन छ। ये दिन पर हमारा देश मा गंगा-सागर, प्रयाग, पुष्कर, नासिक, हरिद्वार अर देवप्रयाग मा स्नान की बि परम्परा छ। उत्तराखण्ड मा ही उत्तरामणी मेला बागेश्वर, उत्तरकाशी मा माघ देवप्रयाग मा मकरैणी अर गंगा सलाण का ढांगू, उदयपुर, अजमेर की पट्टियों मा थलनदी, डाडामंड़ी, कटघर, कलसी, देवीखेत, चाक्योंसैंण, दालिमखेत, मवाकोट, किशनपुरी, सांगुड़ा मा 'गिंदी' उर्ययेंदन। माघ मैना की संक्रान्ति से दिन बड़ा अर रात छोटी होण शुरू होंदन। सूरज को ताप बढ़ण शुरू होंद।

हमारी लोक परम्परा मा मैत अर्यी बेटी को ससुराल लौटण को भी विदाई पर्व छ-मकरैणी। विदेशों मा भी ईरान मा यो दिन अहूरमज्द, जापान मा यमातू अर यूनान मा अपोलों पर्व का रूप मा भी मनै जान्द। यूनान मा ये दिन हेलियस देवता की पूजा होंद।

गढ़वाळ की यीं धरती मा मानवीकरण का कई उदाहरण यख की संस्कृति मा घुल्यां-मिल्यां छन। ढोली, औजी, बादी, बढ़ई, हलवाहा भले ही जाति व्यवस्था मा छोटि जाति मा गणै जावन पर वू सभी रिश्ता मा ददा, बाडा, चचा, फूफा, मामा, भैया-भाबी ही हून्दन। बेटी, बाह्मण, औजी क दगड़ा मा अटूट रिश्ता छ। हमारी परम्परा मा यो सबि पूजनीय छन। यूं तैं सबसे पहली न्यूतेण जरूरी छः यी हमारा हर खुशी मा शामिल छना। **पैले न्यूती बेदमुखी बरमा, आज चयेन्दा बरमा जी को काज/तब न्यूतो औजी को बेटा आज चयेन्द बढ़ै**

को काज। बोलण को मतलब यो छ कि मकर संक्रान्ति का दिन पुरोहितों तैं खिचड़ी देण को भी रिवाज छ–ये वास्ता ये तैं खिचड़ी संक्रान्ति भी बुलै जान्द। गिंदी कौथीग कि बात करण से पैली इन बताण बि जरूरी छ: कि यो जो चार गढ़ छा, जै क्षेत्र मा आज भी गिंदी प्रचलन मा छ, वख पूस की संक्रान्ति बिटि माघ की संक्रान्ति तक एक मैना ससुराल बिटि बेटि मैत आंदन। यि अपणि सुविधा से आंदन–जांदन, ये टैम पर खेती–बाड़ी को काम कम होंद। ग्यूं कि बुवाई का अलावा सार खाली रौंदन—**बग्वाल बीती, द्वि सारी रीति।**

गिंदी का सम्बन्ध मा एक परम्परा और भी छ कि खाली खेतों मा पूस की संक्रान्ति से लेकन माघ की संक्रान्ति तक पूरा एक मैना खाली खेतों मा 'हिंगोड़ा गिंदी' खिले जान्द। यू खेल लगभग हॉकी की तरह होंद। बांस, रिंगाल या स्थानीय लकड़ी की बणी स्टिक होंद अर गिंदी रबड़ की ह्वा या चमड़ा की ह्वा या कपड़ा की ह्वा–गौं का सभी लोग खेल मा शामिल ह्वे सकदन।

मकरैणी को या बड़ी गिंदी ही खिलै जान्द। बुजुर्ग बतान्द न कि कभी ठांगर, कस्याली, नाली, कांडी, बाजारी कठूड़, सौड़ बनचूरी, सरा, दिखेत, ढौंरी, खरीक आदि कई बड़ा गौं मा संक्रान्ति से पैली हिंगोड़ा गिंदी तैं देखण को प्रवासियों का दगड़ दूर–दूर से भी लोग आन्दा रैनी। आज यो कै–कै गौं मा ही देखण मा आंद।

गिंदी का ये खेल तैं हम राजस्थान की धरती से अयां ये वास्ता भी मानणें छवां कि वख क टांक जिला क आवां कस्बा मा हर साल 14 जनवरी को 'दड़ा महोत्सव' होंद। वे उत्सव मा बारहपुरा गाँव क लोग भी थलनदी, डाडामण्डी, कटघर, देवीखेत आदि स्थानों की तरह इकट्ठा ह्वेकन इनी बिना रैफरी का ये खेल तैं खेलदन। कुछ विद्वान इतिहास कार इन बि मानदा न कि औरंगजेब का शासन काल मा कुछ लोग राजस्थान छोड़िक यों पहाड़ों मा ऐनि अर अपणा दगड़ा मा वू यी परम्परा तैं यख लैनि। अर अपणी पछ्याण क खातिर वोन यों पट्टियों तैं उदयपुर, अजमेर, लगूंरी, भटपुड़ी, ढांगू नाम देनी। गढ़वाळ राज्य की स्थापना मा 52 गढ़ों मा 4 गढ़ ये ही क्षेत्र मा छन। वन बि 1658 से 1707 तक दिल्ली मा औरंगजेब को शासन छयो। गढ़वाळ का राजाओं का शासन तैं अगर हम 1500 से भी माणदा त केवल 1640 से लेकि 1664 तक दून क्षेत्र मुगलों का ही अधीन छौ अर गोरख्याणी का समय 1804 से 1815 तक गढ़वाळ गोरखों का अधीन रै। ये ही संक्रमणकाल की अवधि मा राजस्थान से बि लोग यूं डांडा कांठों मा ऐनि। गिंदी की या परम्परा बि तबि बिटि यख होलि इन मणे सकेंद।

परम्पराओं मा गिन्दी

मकरसंक्रान्ति क दिन थलनदी गेंद मेला मा द्वि दल शामिल रैंदन। एक तरफ उदयपुर और दूसरी तरफ अजमेर पट्टी क गिन्देर थलनदी क मैदान मा द्वफरा मा शामिल हून्दन। गिंदी वजन मा 10–15 कि० ग्राम की होंद। जै तैं बणाणे की जिम्मेदारी नाली ग्रामसभा का बिष्ट परिवार की होंद। अजमेर पट्टी का गाँव नाली गाजा–बाजों का साथ महाबगढ़ का ध्वजा का दगड़ गिन्दी ल्हेकि थलनदी का मैदान मा पौंछ्दन। शिक्षाविद श्री दिनेशचन्द्र नेगी बतौन्द न कि कभी ढोलसागर का ज्ञाता अगमदास पाण्डव जागर का दगड़ अजमेर का गिन्देरों मा जोश भरदा छा–फिर वे का बाद कमाल अर दूणी अर अब केवलदास प्रेमदास यी जिम्मेदारी तैं निभाणा छन। पूजा मा पुजारी कि ज्वा जिम्मेदारी होंद वनी यों मेलों मा बाजीगरों की भी होंद। महाबगढ़ को ध्वज मेला मा अलग से दिखेन्द। दूसरी तरफ उदयपुर का गिंदेर भी कस्याली गाँव की तरफ से नाचदा–नाचदा मेला स्थल पर पौंछ्दन उदयपुर का बाजीगर बच्चूदास अर गब्बूदास भी कै से कम नी छन–ढोल–दमौ की आवाज सुणदरौं मा जोश भरद। श्री जयवीर सिंह पुराणा गिन्देरों तै याद करद बतान्दा न कि तिमल्याणी का उमराव सिंह खत्री, कस्याली का झगड़ सिंह, रणजीत सिंह, जितार सिंह, रिखेड़ा का महिमानन्द कूंतणी का सदानन्द, पठोला का ब्रह्मानन्द सरीखा कई लोग अलग ही देखन्दा छाई। क्या कद–काठी का लोग छया–वु बोलदन कि कत्ती दफै गिन्देर द्वि–तीन दिन पैली भी पहुँच जान्दा छया अर अपणा रौ–रि तेदारों का घर रैन्द छया। वू अगनै बतान्द न कि थलनदी की गिंदी की अपणी सीमा रेखा घराट का नजदीक छ। गिन्दी कभी त द्वि–चार घण्टा मा निपट जान्दी छै–कभी रात तक चलणी

रैन्द। ये मा खेल कि अवधि नी छ। खिलाड़ियों की संख्या भी निश्चित नी।

ऐतिहासिक मेला थलनदी कई स्वतंत्रता संग्राम सैनान्यूं कि शरण स्थली रै–ये मेला मा छवाण सिंह, जगमोहन सिंह नेगी, शत्रुघ्न प्रसाद बड़ोला, बृजमोहन रतूड़ी आदि कई लोग समय–समय पर आणै रैनी। मेला तैं व्यवस्थित अर ढंग से चलाण मा आजाद हिन्द फौज का सेनानी अर पूर्व ब्लाक प्रमुख श्री खुशहाल सिंह रावत को बड़ो हाथ छ। वू 1974 से 1985 तक गेंद मेला समिति थलनदी का अध्यक्ष रैनी अर वों का ही प्रयास से यू मेला सांस्कृतिक कार्यक्रमों क माध्यम भी बणि। वूं की बेटि श्रीमती मुन्नी नेगी बतान्द कि मेला तीन दिन तक चलदू–खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम रैन्द। लोगु तैं जरूरत को सामान भी मिलदू। सबसे बड़ी बात यह छ कि दूर दराज से अयां रिश्तेदारों से मुलाकात ह्वे जान्द। अर मैत की धियाण मिल जादन।

इनी मेला डाडामंडी मा भी लगदू। बतौंदन कि बौंठा का श्री छंवाणराम तिवाड़ी जी का प्रयत्नों से अर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी मायाराम बड़थ्वाल, आदित्यराम दुतपुड़ी, जमेली क रणवीर सिंह तोमर का सहयोग से ये मेला की शुरुआत ह्वे। बाद मा समय–समय पर भैरवदत्त धूलिया, उमराव सिंह रावत, पीताम्बर देवरानी, कुँवर सिंह नेगी 'कर्मठ' भी आजादी का वास्ता लोगों तै जोड़णो ये कौथीग मा औंदा। यख भी पुल क आर–पार सीमा रेखा छना। ये मा भी द्वि–दल छना। भटपुड़ी अर लंगूरी। भटपुड़ी मा बौंठा, भलगाँव बल्ली, मदनपुर, धुलगाँव आदि प्रसिद्ध गौं छ। बौंठा गौं क तिवारी परिवार दुर्गा का झण्डा निशान लेकन गिंदी बणैकन लादन। लगूंरी पट्टी मा जमेली, भैड़गाँव, लगूंरी, सैंज, सिराई आदि कई प्रसिद्ध गौं छन।

इनी मेला ये दिन पर ही कटघर मा लगदू। हिंवळ नदी क किनारा पर लगण वाळा ये मेला मा हिवंळ पार अर हिंवळ वार की द्वि–पार्टी छन–ढांगू अर उदयपुर। ढांगू की तीन पट्टी–मल्ला, तल्ला, बिचला ढांगू मा कठूड़, डोबरी, बड़ेथ, ग्वील, गैंड, ठटोली, पाली आदि कई प्रसिद्ध गौं छना। उदयपुर मा मल्ला और वल्ला उदयपुर–जै मा रावतगाँव, बगड़गाँव, सुनारगाँव, पाट, तिमली आदि प्रसिद्ध गौं छना। यख भी दोपहर मा गिन्दी की शुरुआत कटघर क खुला मैदान मा होंद। श्री गिरधारीलाल जी बतौदन कि–गिंदी डोबरी गाँव वाळा वणादन अर वी लोग ही ध्वज क साथ गिंदी तैं मेला स्थल पर लांदन। कि थलनदी दूर होण का कारण ढौंर का स्वतंत्रता संग्राम सेनानी बाघसिंह कठूड़ का राघवानन्द जी, कटघर का लाला मुन्नालाल जी का प्रयासों से आजादी से पैली कटघर मा गिन्दी मेला को आयोजन शुरू ह्वे।

ये का बाद क गिंदी कौथीग 1947 का बाद का छना। देवीखेत मा भी रेंजर लक्ष्मण सिंह बिष्ट का प्रयासों से अर ढौंरी का प्रताप सिंह का सहयोग से गेंद मेला शुरू करे गे। ये मा भी द्वि–दल छना–धार पार, धार वार–जै मा दिखेत, कन्डाखणी ढौंरी आदि अर दूसरी तरफ तिमली, डाबर, डंगला आदि गौं। यख दिखेत का बिष्ट गेंद बणादना अर ध्वज लेकन मेला स्थल पर आन्दान। ये प्रकार से ही कलसी मा भी कोठार का श्री जीतार सिंह, बमोली का कृपाल सिंह रावत, अर श्री आलम सिंह नेगी का प्रयत्नों से गेद मेला को आयोजन कई वर्षों से होणो छ। हिंवल नदी क किनारों पर बस्यां द्वि–तरफ का गौं द्वि–टीमों मा बटयां छना। गिंदी बारी–बारी से द्वि–तरफ का लोग बणादना अर स्थानीय लोगों की सहभागिता से सम्पन्न होंद।

चाक्योंसैण भी हिंवलनदी क किनारा बस्यूं क्षेत्र छः। यख भी आजादी का बाद गेंद मेला की शुरुआत ह्वे। हिवंळ नदी का वार सुराड़ी, चुर्रा, सौड़, सैणा, खुडीला, विरमोली एक तरफ अर पार कुण्टी, सिमल्या, छाम, सौड़खेत, हिलोगी अर बिजौंली आदि गौं मा प्रतिर्स्पधा होंद। ये क्षेत्र क विरमोली गौं क सौड़ लग्गा का भारत का वर्तमान सेनाध्यक्ष जनरल विपिन रावत जि छन।

दालिमखेत भी काण्डाखाल अर बड़ेथ गाँव का बीच को लग्गा छः। डांडा मा लगण वाळा यू मेला कुछ सालों से आयोजित हूण छः।

ये प्रकार से सांगुड़ा मा भी गत कई वर्षों से गेंद मेला आयोजित होंद। कोटद्वार क नजदीक मवाकोट, किशनपुरी मा भी कुछ बर्सू बटिक गेंद मेला की धूम छः।

❑❑

मकरैण-मकर संगराँद

वीणापाणी जोशी

जन्म : 10 फरवरी, 1937
सम्मान : उत्तराखण्ड गौरव सम्मान, कलाश्री सम्मान, जयश्री सम्मान
कृतियां : 'पिठैं पैरालो बुराँस' गढ़वाली काव्य-संग्रह, 'श्याम भँवर कुछ बोल गया' हिन्दी काव्य संग्रह
सम्प्रति : गोपाल कुंज 26/7, इन्द्रपथ देहरादून, उत्तराखण्ड

भारतवर्ष एक उत्सवधर्मी देश छ अर देवभूमि उत्तराखण्डा जनमानस मा सदनी एक सृजनात्मक अर सकारात्मक चिन्तन विराजमान रौंद। जै से वो प्रकृति दगड़ि तालमेल स्थापित करि कि समै-समै पर जीवन को कुछ हिस्सा आध्यात्म अर आनन्द से जोड़ि की सुख से मनखिजोनि को फैदा उठै सको। कै बि त्योहार का पैथर सिरफ धीरज अर उछाह हि न बल्कि वे को वैज्ञानिक आधार बि रै अर मनोवैज्ञानिक संदर्भ बि। देवभूमि उत्तराखण्ड त अफ्वी तीर्थ छ, किलैकि यख नगाधिराज हिमालै छ, ह्यूँवाल छन अर वे का खुकल्या मा सदानीरा प्राणदायिनी नदी छन।

चौदा जनवरी (मौ) का मैना को सौरमण्डल को स्वामी भगवान सूरज दक्षिणायण मकर राशि मा प्रवेश करद। ह्यूँद को असर कम होण से अर मौ का मैनो श्रीगणेश को मकरैण परब बोले जाँद। कुमौं मा मकर संगराँद तै उत्तरैणी अर घुघुतिया त्यार बि बोलदन अर गढ़वाळ मा खिचड़ी संगराँद बोले जाँद। वे दिन खिचड़ी बणै कि खाण को अर तिल गुड़ खाण को भारी महत्व होंद। हमरा पुरखा बोलदा छा कि जो लोग गंगा जमुना अर दुसरी नद्यूँ मा न्ह्येणु नि जै सकदन। ऊँका न्हयेणा पाणी मा बि तिल अर गंगाजल जरूर ढोळ देण। मकरैणि का दिन पवित्र नद्यूँ मा न्ह्येणु अर खिचड़ी दान कन्नै की परम्परा गढ़वाळि न बल्कि सैरा हिन्दुस्तान मा छ। स्नान का बाद सरधावान लोग म तिल-गुड़ उड़दै दाळै खिचड़ि अर घी, तिलड्डु जरूर दान करदन। जख-जख पवित्र नद्यूँ को संगम छ, जन देवप्रयाग, रुद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग, नंदप्रयाग अर विष्णुप्रयाग, कुमौ का बागेश्वर मा श्री बाघनाथ का मंदिरा धोरा सर्यू अर गोमती का संगम पर साख्यूँ बिटिन भारी मेळा लगद। वख पूरा कुमौ बटे लोग औंदन अर मेळा मा लोकगीत अर लोकनृत्य झोड़ा, छपेली अर कत्ति किसमा बेळम करि की उत्सव मनौंदन। सांस्कृतिक कार्यक्रम बि होंदन। उत्तरकाशी मा पुरणा समै से सांस्कृतिक अर धार्मिक माघ मेळा को आयोजन होंद। पैलि त एक मैना तक चलदु छौ पर अब एक हफ्ता बि मुश्किल से कौथिग अर मेळा होंद।

मकरैण से एक दिन पैलि पंजाब मा लोहड़ि को त्योहार मनये जाँद। वख बि 13 (तेरा) जनवरी सेखन्त का दिन रात आग जगै कि वे मा र्‌योड़ि, गुडपट्टि, मुंगफळी, गजक, वगैरा अग्नि मा भेंट करी चढ़ैकि लोग खूब परिक्रमा करदन। तब समौण आपस मा बटदन नौना-बाळा लोकगीत गाँदन अर नाच करि आनंदित होंदन। मेळा का नौ पर सबकि भेंट ह्वे जाँद। मेळा का माध्यम से जनता की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक गतिविधि बि होणि रंदन। खिचड़ि सगराँदा दिन खिचड़ि त जरूर बणद पर रस्वड़ा मा उड़दै दाळ्या पकोड़ा स्वाळि, भूड़ि हरीं भुज्जि अर मिट्ठु भात खुसका बि बणद। असम मा 'बीहू' दक्षिण भारत मा ये उत्सव 'पोंगल' नौ से मनये जाँद। यू दिनौं पहाड़ मा ग्यूँ जौ कि फसल, बीच-बीच मा कुरफोल्यो हर्‌यूँ घास होण से पुंगड़ि स्वाणि दिखेंदन। जब घर मू लैदो होलू त सब्बि कुछ भरपूर होलो मतलब यो छ कि तेहवार का पिछने घर की समृद्धि, भरीं गोठ फल-फुल्लु को बगीचा अर सबसे खास बात मनखि कि किसाणि। जो बार-त्योहार मनौणु प्रेरणा देंद।

इन बि बोलदन कि गुरु गोरखनाथ जी का समै बिटिन खिचड़ि दान की प्रथा सुरू ह्वे। खिचड़ि बणौण अर खाण का अलावा खिचड़ि दान को बि रिवाज रै। मैं तैं अपणु बचपन याद औंद जख खिचड़ि संगराँदै भौत जग्वाळ रौदि छै। पैळि बिटिन तिल, मरसु अर गुड़ ल्हेकि, तिल साफ ध्वेकि मर्सु छाणि कि सुधारि कि सुखै कि धरदा छा जैसे भुनदि दां करारा होला तो जल्दी भुने जाला। घर मु माँ बडी चच्चि बौजी, दीदी सब बड़ा उछाह से पैला दिन ब्यखुनि दां तिल अर चौंळ भूनी तैं लड्डू बणैदा छा। एक च्या को चम्मच मर्सू भूनी बिंडी ह्वे जादुँ छौ। उबरि हम तैं रौंस लगदी छै कि अरे! यु त जरा सि दिखेणु छौ कथगा बिंडी ह्वेगि। फिर गुड़ कि तीन तार की चासणि बणै की वे मा तिल अर मरसु अलग-अलग ढोळदा छा। अर पाण्या हाथ न गरम-गरम लड्डु बणौदा छा। यो बि भौत अच्छु लगदु छौ कि एक बड़ि थाळि भरी तिलड्डु अर हैकि थाळि पर मर्सा लड्डु भरी पूजा ठौ मा धर देंदा छा। सुबेर मु न्हये धुये कि पैलि पूजा करि कि सबसे पैळि अपणा पितरो याद करि कि लिप्याँ-घस्याँ चुल्हा खाँदा मा धरदा छा। वे का बाद देवतौं मा पूजा मा चढ़ौंदा छा। तब दानै थालि मा धरि की वे का बाद घरा लोगों तैं प्रसाद दिये जाँदु छौ। वे मौसम पर तिल अर गुड़ का सेवन से पेट को हाजमा बढ़िया रौदू। अर शरीर मा नै ताकत को संचार होंद। फिर वे जमाना मा मतलब जब हम छोटा छा अड़ोस-पड़ोस मा बि अवजा घरो मा बि प्रसादा लड्डू देंदा छा।

सफेद तिल पितृकारज और काला तिल देवकारज मा प्रयोग होंदन। सफेद अर भुरण्या तिलों से भौत किस्मै मिठै बणद। तिल पहाड़ै महत्वूपर्ण फसल छ। आजकल हम देखदां कि बनिबन्या रोग डालौ पर फसल पर लगणा छन। अर विदेसी दवै (पेस्टिसाईड) छिड़की जमीन कि उपजौं ताकत कम होंदी जाणी छ। कुछ दिन त फैदा ह्वे जाँद पर नै-नै किस्मा हौरी रोग पैदा ह्वे जाँदन। हमारा शास्त्रों मा लिख्यूँ छ खासकर वृक्ष विज्ञान[1] मा बोलदन—

शुचिर्भूत्वा तरोः पूजां कृत्वा स्नानानुलेपनैः।
रोपयेत रोपितांश्चैव पत्रैस्तैरेव जायते।।
मृद्वी भू सर्ववृक्षाणां हितांतस्यां तिलान् वपेत्।
पुष्पितां तांश्च मृद्वीयात् कमैर्तप्रथमं भुवः।।

"मतलब पवित्र डाळै पूजा करी डाळा लगावन। पैळि जमीन खैणी गाराढुंगा बिरै कि साफ करी पैलि वीं धरती मा तिल बूतन, जब ऊँ तिलै डाल्यूँ पर फूल ऐजावन तब हळ लगै कि ऊँ डाल्यूँ अल्टा-पल्टी करी माटमा मिले देवन। यो भूमि को पैलो संस्कार छ। ये से धरति की उपजौ सक्ति बढ़द।" अर फसल स्वस्थ होंदं। बच्चों ते बेळमौणू माँ द्वी छोट्टि माटै कोरि दिवड़ि ल्हेकि वे का बीच मा चंदि की चवन्नी अर तिलड्डू को सामान भरदेंदी छै। अर वे का भैर द्वी हाथों न एक बडू लड्डु बणै कि एक सुन्दर नै कपड़ा पर गिन्दु जनगोळ सिलि कि अर एक मोटा नाला धागा न सिलदेंदि छै। वो एक तरौं को खिलौणा होदूं छौ। नाळौ धागु रिगैं कि हम बच्चा वे गिंदु से खेन्ना रौंदा छा। अर जब घर मा तिलड्डू खतम ह्वे जाँदा छा तब हम बच्चा वे कपड़ै सिलै उधेड़ि की वे का भितरो माल खाँदा छ अर चवन्नी तैं आपस मा बाँट लेंदा छा। वे जमाना मा चवन्नी की कीमत भौत बड़ी होंदी छै।

तिल को तेल आयुर्वेद की नजर से भौत गुणकारी होंद। स्वील्यूँ पर मालिसा काम औंद। कत्ति किसमै दव्युँ मा बि पड़द। पूरा मौ का मैना तिलों को प्रयोग कन्न से सरीर मा ऊर्जा बणी रौंद। मतलब यो छ कि मकरैण का त्योहार का कारण अजाणा मा ही भौत लाभ होंद।

❑❑

बाड़ाहाट को थौळु

आरती बधाणी

पांडवु कि क्रीडा भूमि अर भगवान् परशुराम कि तपस्थली बाड़ाहाट नगर (उत्तरकाशी) को इतिहास देखे जाओ त पता चलदो कि गुप्तवंशीय राजा समुद्र गुप्त का समौ मा बाड़ाहाट का नौ सि एक जनपद का नौ को उल्लेख मिलदु उ बाड़ाहाट क्वी हौर नी बल्कि वर्तमान को उत्तरकाशी जिला मुख्यालय थौ, यान्कु प्रमाण ये स्थान विशेष को नौ बाड़ाहाट होणु छ, सन 1119 ई० मा केदार भूमि जितण वाळा पश्चमी नेपाल का अशोक मल्ल न भि अपणी विजय पताका यख फहराई थै। 12वीं बिटी 15वीं सताब्दी तक बाड़ाहाट-उत्तरकाशी श्रीनगर का परमार राजों अर वूंका उप सामन्तों क अधीन रै, अर वर्ष 1949 तक टिहरी क शाह राजों का अधीन रै। यू क्षेत्र नागवंशियों की राजधानी भी रै अर समृद्ध क्षेत्र रै यनू उल्लेख इतिहास मा मिलदू। आजादी क समय यु जनपद नि छौ बल्कि टिहरी जिला कि एक तहसील थौ, जींतैं 24 फरवरी 1960 को टिहरी सि हटैक उत्तरकाशी जिला बणाये गै जैकु मुख्यालय पौराणिक, ऐतिहासिक व धार्मिक महत्व वाळू बाड़ाहाट गौं चुणे गयी। उत्तरकाशी कि अनेकों पछाण छन जौंमा यख कि लोक संस्कृति प्रमुख छ जींकु एक अंग यख क लोक उत्सव छन जौं तैं थौळु , मेळा, जातरा आदि बोले जांदू। सालभर अपड़ा अनूठा रीति रिवाजू सी गौं-गौं मा होंणा वाळा थौळा-मेळा, यख क कण-कण मा समाईं लोक संस्कृति कि झलक अर यूँ त्यारु मा दिखे जांदी। इ थौळा मेळा लोगु तैं ऊंकी जर्वतु क साथ-साथ मिलण जुलण को भि बढ़िया मौका देंदा।

सबसी बढ़िया बात य छ कि पौराणिक परम्परा अर अनुष्ठान को रळौ मिसौ वाळा ई आयोजन बिना कै सरकारी मदद क आयोजित होंदान, यख क रैबासी जुग-जुग बिटी खुशी अर उल्लास क साथ सामाजिक सहभागिता सि मिली जुलिक यूँ आयोजनु तैं करना छन। यूँ ही मेळों मा एक मेळु छ मकरेणी मा स्नान करनौ आंया देव डोलियों का समागम की परंपरा अर भारत-तिब्बत व्यापार को प्रतीक "बाड़ाहाट को थौळु"। जु आज व्यापार का अन्य माध्यमों से माघ मेळा क नौ सि जाणे जांदु। हर साल मौ कि मकरैणी को होण वाळा भारत-तिब्बत

जन्म : 7 जुलाई, 1981
सम्प्रति : अध्यापन
अभिरुचि : पठन-पाठन, लेखन, संगीत

व्यापार कि याद दिलौन्दु, पुराणा समौ मा तिब्बती व्यापारी याक, चौंर गायों, खाडु पर सामान लादी यख औंदा था अर पालतू जनवरों, जड़ी-बूटियों, लखड़ा कांगला, उनी कपडों कू हाट लागौन्दा था। यै वस्तु विनिमय का माध्यम से होण वाळा व्यापार मा संस्कृति को विनियम भी होंदू थौ। पुराणा समौ बटी यख मकरैणी पर्व मा आराध्य कंडार देवता कि डोली कू श्रीक्षेत्र बाड़ाहाट मा प्रवास अर गंगा स्नान की परंपरा थै। यख देव थात चमाळा की चौंरी पर कण्डार देवता की पूजई का साथ बाड़ाहाट का थौळ की शुरुआत होंदी थै। देवता अपड़ा श्रीक्षेत्र बाड़ाहाट प्रवास मा महंत खोळा (विश्वनाथ मंदिर का पुरी जाति क महंत परिवारु को खोळा) मा कुछ दिनु विराजमान होंदु थौ, पर गौं को सैर का रूप मा विकसित होण पर ये क्षेत्र मा होण वाळा परम्परागत बाड़ाहाट मेळा को जिम्मा पैली जिला प्रशासन न अर बाद मा जिला पंचायत उत्तरकाशी न लिनी त मेळा को आयोजन एक सरकारी व्यवस्था सी होंण लगी अर थौळू सरकारी मेला होण लगी, थौलू से मेळा होण का क्रम मा स्थानीय जन्ता कि आत्मीयता कम होण लगी अर यु पौराणिक सांस्कृतिक-धार्मिक थौळ पूरी तरह व्यावसायिक बणिगे अर तब यु बाड़ाहाट को थौळ न रैक माघ मेळा ह्वेगी।

मकरैणी क दिन देव डोली का साथ पूरा क्षेत्र क लोग कण्डार देवता का परम्परागत जड़भरत घाट पर स्नान क वास्ता जांदा था यांका बाद देवता अपनी थात चमाळा कि चौंरी पर विराजमान होंदा। यख मकरेणी स्नान तैं औण वाळा सम्पूर्ण बाड़ाहाट पट्टी अर अन्य क्षेत्रों का द्यो देवतौं कू बाड़ाहाट का रज्जा श्री कण्डार देवता सी समागम से थौळू कू आयोजन धार्मिक होण का दगडी सांस्कृतिक मिलन को बेहतर माध्यम बणी जांदू। यख सभी भक्तों को न्युरु बोली ग्रामीण लोगु कि समस्या, कष्ट, दु:ख, विपदों हरि, अर भक्तु को न्युरु बोलण क बाद देवता महंत खोळा चलि जांदा था। तीन दिनु तक चलण वाळो यो थौळ सुनार खोळा (बाड़ाहाट निवासी चौहान व पंवार जाति का परिवारों का खोळा) मा ग्यारह उरख्याळयों मा परम्परागत पैरवार पैरिक गौं कि बेटी ब्वारी च्यूड़ा दुफारी कुटिक येतैं देवता का कल्यो का खातिर तयार करदी थै अर थौळु संपन्न होण पर यु देव प्रसाद सभी रैबास्यों अर भग्तु मा बांटे जांदु थौ, यूँ तीन दिनु मा थौळ ढोल दमौ कि थाप पर चमाळा कि चौंरी मा रांसो तांदी लांदा था, थौळ को आखरी दिन गांडीयों (घेंघा रोगी) को थौळू का वास्ता होंदु थौ अर यांका बाद बाड़ाहाट क्षेत्र कु आराध्य देव कंडार देवता संग्राली गौं मा स्थित अपड़ा थान का वास्ता प्रस्थान करदु थौ य परम्परा सदियों तक चळ्दी रै अर समय क साथ धीरा-धीरा परम्पराओं कि रोशनी धुमैलि होंदी रै पर यु सुखद रै कि यख का रैबस्योंन यु द्यू बुझण नि दिनी अर भूकंप, बाड़, भूस्खलन, जनि अनेकों बिपरीत परिस्थिति का बाबजूद भि बाड़ाहाट को थौळू ज्यूंदु रै।

सन् 1960 मा टिहरी सि अलग ह्वैक बाड़ाहाट गौं उत्तरकाशी जिला मुख्यालय क रूप मा विस्तार लेण लगी पर यु दुर्भाग्य रै कि जिला बणना का पहली सी ही यू क्षेत्र हमेशा अपदा सि लड़दु रै, पर जिला बणना का बाद यनी घटना लगातार होणी रै। सन् 1803 कू भूकंप, सन् 1978 कि बाड़, 1991 को भूकंप, 2003 वरुणावत भूस्खलन अर यांका बाद 2012, 2013 कि भीषण बाड़ यूँ आफतुन् यख वीरेण वाळा लोक उत्सव बाड़ाहाट को थौळू कई बार प्रभावित करी, 2012 कि बाड़ ना जु तबाही मचायी वांका कारण सरकारी तौर पर मेळा कु आयोजन रद्द करणु पड़ी पर यख का रैबस्योंन वै दु:ख तैं भुलैक बाड़ाहाट का थौळ (माघ मेला) को आयोजन अपणा आप करणा कि सोची यांका वास्ता 30 दिसम्बर 2012 को बाड़ाहाट क्षेत्र का संग्राली, पाटा, बग्याल गांव, बसूंगा व बाड़ाहाट का लोगुन बैठक करी बाड़ाहाट को थौळू पंच पंडों आयोजन समिति कु गठन करी व अपड़ी सांस्कृतिक विरासत बचौणक 35 साल बाद बाड़ाहाट थौळ आयोजित करणा को सामूहिक निर्णय लिनी पौराणिक काल सि आयोजित होण वाळा बड़ाहाट का थौळ तैं अपड़ा मूल स्वरुप मा आयोजित करना क साथ-साथ कुछ नया मौलिक लोकरंगीय तत्व भि जोड़िक आयोजन करणा को मन बणैक सभी रैबासी बाड़ाहाट का थौळ का वास्ता कट्ठा ह्वेन, ये प्रयास कु मुख्य श्रेय युवा पत्रकार व रंगकर्मी सुरेन्द्र पुरी तैं जांदु जौंका कारण सब कठ्ठा ह्वैन, पुराणा समौ कि तीन दिनु क आयोजन कि परम्परा का मुताबिक ही यांमा बाड़ाहाट क्षेत्र कि समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर तैं अग्नै ल्योंण कु प्रयास करे गै।

सन् 2012 मा बिना सरकारी मदद क सभी रैबस्यों न बाड़ाहाट को थौळ (माघ मेळा) क व्यवसायिक आयोजन सि हटिक जन सहयोग सि येतैं एक धार्मिक

अर सांस्कृतिक स्वरुप दिनी यांमा पैला दिन बाड़ाहाट क्षेत्र क आराध्य कंडार देवता क साथ पांडव कालीन लक्षेस्वर महादेव मंदिर बिटी पैदल जात्रा करी जड़भरत घाट पर देवता क गैल मकरैणी स्नान करी विधि विधान सि पुजा करे गयी यखी मा खिचड़ी प्रसाद को आयोजन भि करेगे यांका बाद यख बिटी कंडार देवता कि डोली क साथ पूरा क्षेत्र क लोग रामलीला मैदान (जै तैं पुराणा समौ मा तप्पड़ बोले जांदु थौ) आई, देवता का बाजगी मदन अर मख्खन लाल क ढोल-दमौ कि थाप पर अपडा पहाड़ी पैरवार पैरिक जनानी अर मंणस्यारू ना रांसू अर तान्दी नाच का साथ कंडार देवता रामलीला मैदान पहुंची। यांका बाद बाड़ाहाट कि देव थात चमाळा कि चौंरी पर पौन्छया जख श्री कंडार देवता कि डोली तैं विरजमान करी लोगु न पांडव नृत्य करी, जनसहयोग सि होण वाळा ये मेळा मा हाथी कु स्वांग बणाये गै जै पर श्री कंडार देवता कि भोग मूर्ति तैं विरजमान करी पूरा बाड़ाहाट नगर मा सोभा यात्रा निकळी। बाड़ाहाट का रज्जा कि ईं सवारी को लोगुन न फूलु कि बरखा से स्वागत करी, बड़ाहाट क थौळ मा लोगु तैं जो सांस्कृतिक रंग दिख्यैन सि सरकारी आयोजन मा कभी नि दिखेण्या था अर पूरु बड़ाहाट नगर आपदा क घौ डर अर दु:ख कि तस्वीर पर हैंसि, उलार, नई उमंग का रंग भरिक नया उत्साह सि जीवन ज्यूँण कि कामना क साथ रांसो तांदी नाच मा झूमण लगी। तबरी बीटी अभी तक लगातार पुराणी परम्परा क अनुसार यु पौराणिक बाड़ाहाट को थौळ स्थानीय जन्ता द्वारा जनसहभागिता सि सम्मपन्न होणु छ।

सामाजिक सहभागिता सि बाड़ाहाट का थौळ का सफल आयोजन ना यु दिखै दिनी कि जीवन कि गति प्राकृतिक अवरोध क अग्नै झुकदी नी बल्कि दु:ख म समाज कठ्ठु ह्वै जांदु अर जीवन भूत तैं भुलिक भविष्य कि तरफ चलि पड़दु, बाड़ाहाट क थौळ न यु भि सिद्ध करी दिनी कि कै आयोजन क वास्ता बस धन अर तंत्र कि जर्वत नि होंदी बल्कि लोक अर मन सि भि बड़ा सि बड़ा आयोजन करे जै सकेंदा, यु सुखद थौ कि ये आयोजन सि समाज एक जुट ह्वे अर एक पुराणी परम्परा फिर से जीवित ह्वेगे। ❑❑

पोथि मिली

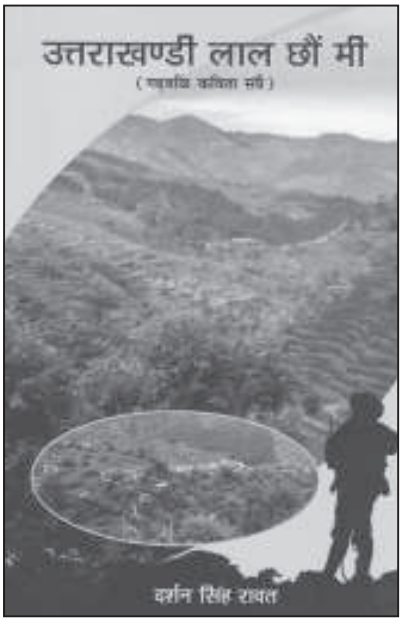

उत्तराखण्डी लाल छौं मी
(गढ़वळि कविता संग्रै)
लेखक : दर्शन सिंह रावत
वर्ष 2016

खैरि पहाड़ कि (कविता) बीर सिंह राणा
प्रकाशक-हिम उत्तरायणी
आरजेड 26 पी/66बी, गली नं० 7
इन्द्रापार्क नई दिल्ली-110045
मूल्य : 50 रु०

मरोज त्योहार

सुरेन्द्र पुण्डीर

हमारा जीवन मा-त्यौहारु को बौत महत्व छ, जीवण जीणा का वास्ता इन्सानन् न जाणि कथगा सफर तै करि। अर वैन ईं प्रकृति सि बि बौत कुछ सिखी। संघर्ष करीक अपणा खातिर बाटू देखी, हमारा लोक जीवन मा यू त्यौहारु कूं अपणू अलग स्थान छ। मरण-जीणक अलावा न जाणि कथगा रीति छन रिवाज छन जूंमा वह ज्यूंदू छ तथा वूंका बाना व अपणी थाति तै पछाणदों, जबारि-जबारि वै ते कै सामान्क जरूरत पड़ी त वैन यूंका सातिध्या मा जाइक अपणी खुशी तै लौण की कोशिश करी, अर यै तै एक विस्तार दिनी।

हिमालय को यो भू-भाग मा न जाणि कथगा जाति आये अर यख की खूबसूरती देखीक् यखीक् ह्वेगेन। जवारि ये लोग आई होला-उन अपणी संस्कृति अर समाज कू कुछ हिस्सा बि ईमा मिलाईक ई संस्कृति सणि मजबूत बणै। अर अपणा अलग-अलग रंग विखेरणा मा सफल ह्वे।

यख एक छोर बटि दूसरा छोर तक कथगा जाति छन, उकी अपणी मान्यता छ-अपणा भांति-भांति का तरीका छन-अपणी अलग पछाण छ। पर सुल्ला-सुल्ला यह संस्कृति अपणी पछाण खोणी छ। गौ खालि ह्वेगेन, संस्कृति बि ये बाटा लुप्त ह्वेगेन। जमाना बदलेगै हमारा यूं रन्त रैबार तै कैकी असगार लैगी। आधुनिक समाजन त ईंते बिगाड़ियाली। वैकू सरूप बदल देनी। आज हम तैं अगर अपणु समाज बचौण त हम सणी येका बारा मा सौचणु होलु। गौं-गौं खालि ह्वेगेन त य परम्परा कनि बचलि। ये खातर हम तैं कमर कसणि होली-नई नीति बणोणी होली।

हमारा गढ़वाळ मा उन ता भांति-भांति की जाति छन जन जाति समाज छ। गढ़वाळ मा, जौनपुर रंवाई अर जौनसार बावर को क्षेत्र छ-यो क्षेत्र अपणी अलग परम्परा अर संस्कृति क रंग बिखेरण मा सबसे अगनै छ, यून यख की संस्कृति को बचौण को प्रयास करणां रौंदन। मौ मैना मा यख 'मरोज' को त्यार होन्दू । जौनसार क्षेत्र मा मरोज को यो त्यार 'मौ' मा होन्दू मरोज शब्द को अर्थ होन्दू मरु अर रोज-यानि माघ का पूरा मैना खुशी मणोण को त्यार। हैका अर्थ मा यो त्यार वाखरा मारुणु को त्यार वी छ। ये जन जाति क्षेत्र का अलावा पूरा गढ़वाळ अर देश का माघ को मैनू एक पवित्र धार्मिक मैनू होन्दू। ये

जन्म : 4 जुलाई, 1956
प्रकाशन : जौनपुर के लोक देवता, जौनपुर के तीज-त्योहार, जौनपुर की लोक-कथाएँ, जौनपुर का सांस्कृतिक एवं राजनैतिक इतिहास, जौनपुर की लोक बोलियों का अध्ययन, गॉड ऑफ जौनपुर
सम्पर्क : प्रवक्ता, राजकीय इण्टर कॉलेज, घोड़खुरी, टिहरी गढ़वाल
मो० : 7409626154.

मैना मा लोग शराब मांस खाण मा परहेज कर दीना। पर यख ये पूरा मैना दारु अर, मास कू सेवन करदन। हर घर मा नाच गाणा होन्दन, मैमानु की मैमानी होन्दी–पूरा मूल्क मा एक–दूसरा गौ बटि मैमान औन्दा अर गाँव मा प्रत्येक घर मा रोज बारि–बारि नाच गाणु होन्द–यू गीत थै 'मरोज क गीत' बोलदन यख का गीतों का वर्गीकरण मा मरोज का गीतू की विधा अलग न्यारी छ।

ये त्यार का मनोण का खातिर लोगो को अलग–अलग विचार छ। कुछ लोग बोलदान् कि यो त्यार ह्यून्द (जाड़ों) मा होन्दू। पैली ये इलाका मा हियुं पड़दु छौ। काम धाम कुछ नि होन्दु छ। लोग–बाग जाड़ा का खातिर लाखडु–घास न्यार जमा कर दींदा थया। अर पूरा मैना ह्यूंद को मैना नाचणा गाणा–आणा–जाणा मा वित्तै देन्दा थया। एक और मान्यता या बि छ कि यो त्यार अपणा पितरों की याद मा मनै जांदू। या बी मान्यता छ कि अपणा परिवार की कुशल क्षेम रखणा खातिर यो त्यार मनै जांदू। अर देवता तै खुश करण खातिर बलि दी जांदी।

या त्यार मणाणा का पिच्छनै एक मत मान्यता और बि छ। महाभारत कथा का अनुसार जवरि पांडव जुआ क्रीड़ा मा अपणु सबि कुछ हार दीनी, तबारि दुर्योधन अर दु:शासन ना द्रोपदी को। चीर हरण करै द्रोपतीन तबरि, या कसम खाई कि वू दुशासन का खून सी अपणु मुड भिगौंलु। यख पांडव कालीन संस्कृति छ। ये क्षेत्र मा वैखातियाँ बखरा का प्रतीक माणिक वैकी बलि दीक–अपणु बदला लीन्द। ये वास्ता या परम्परा यख छ।

गौं मा कुल देवता की पूजा भी यी बलि से जोड दान। पूरा माघ का मैना लोग बाग या त्यार कू मणोद। सगराद का एक दिन पैली मासत मा बाखरा की बलि दी जांदी। पौष का मैना बलि दी जान्दी। मौ वख बि पवित्र मैन माणि जांदू। मासन्त का दिन गौं मा खूब चैल–पैल होन्दी। गौं मा पैलु बाखरु–सयाणा (लम्बरदार) को मारे जान्दो। मडांण चौक मा बाखरा काट्या जान्द। वै दिन घर की महिला–व्रत रख दी। माँ देवी की पूजा कर दी। बाखरा तैं मंडाण चौंळ मा लैक वैसणी पूजै जान्दू–पाणि चौल गैरदान्–जवारि बाखरु झुणै जांदू त लोग बोलदान् की कुल देवतान् मान्यता स्वीकार करि यालि। तब वैंका बाद बाखरु काटदान्।

गौ घर मा बाखरा तैं सुधार जांदू–मांस तैं काटि–काटिक कूड़ का भीतर टांगै जान्दो। बाखरा की खल्ड़ी निकाली जांदी सुखैयक वीं खल्ड़ी काम मा लाया जान्द, कुछ लोग बैठणा खातिर खाल काम मा लाय जान्दी। खल्ड़ी (खाल) का झोला–यख का जीवन मा बौत उपयोगी छ। गाँव घर मा मैमान आंदा–जांदा छन वूंका वास्ता मास बणौण अर सूर पिलौण को रिवाज छ। गौ मा नाच गाणा की शुरुआत सयाणा का घर वटीन शुरू होन्दू–प्रत्येक दिन एक–एक घर मा नाच–गाणा को कार्यक्रम शुरू होन्दू। वै दिन की खाणा–पीणा को बन्दोबस्त वै परिवार का जिम्मा छ। 'मरोज के गीतों' अलग अर बेजोड़ परम्परा छ। रात मा पैली चौरी मा तांदी लगै जांद और फिर घर का भीतर नाच गाणों को परोग्राम होन्द या मा कबारी छोड़ा का माध्यम सी आपसी प्रतियोगिता बि होन्दी। संगराद का दिन मास नी खांद घर मा वै दिन खिचड़ी बणदी अर दान मा बि दाल–चौंळ दिये जांदा।

मास खाण की अपनी अलग मान्यता छ। कै दिन बाखरा को हिस्सा खाणू चैन्दू यै सबि खाणा की परम्परा छ। पैलि त गाँव मा वतेरु मोड़ होन्द छ। बाखरा काटणा का खातिर, बाखरा काटणा की बि अलग प्रतियोगिता होन्दी छ पर आज का परम्परा समाप्त हौण बैठिगी। गौ घर मा त्यार का बांटा दैण की परम्परा ध्याणिक वैंकू हिस्सा दिये जान्दो छौ वे तैं बटवारु लेदार बोले जादू–वटेंर मा 4 रोटी–एक पव्वा दारु व मास कू छोटू हिस्सा दीयू जांदू छ। वटैर वख जै मैमानी करद्यो मरोज कू आठवा दिन खोड़ा होन्दू। वै दिन बाखरा की सिरी, खुटा, भुनौन की परम्परा छ। भूतण का वाद वै तैं घर मा लैक प्रसाद का रूप मा खाणु जरूर पड़दु या त्यार का पिछनै हमारी संस्कृति का भीतर जब शरीर तै क्या खाणु चैन्दी वैंकू क्या जरूरत छ वैंका पूरा करणा का खातिर या परम्परा वणी होली। अषाढ़ मा मछली खाण की परम्परा छै जेभा–'मौण' त्यार मणैय जान्द, जाड़ौ मा शरीर तै मास अर शराब की जरूरत होन्दी त मरोज क त्यार मणैय जान्दू।

आज का बखत ये क्षेत्र मा या परम्परा खतम होण बैठगि। पैसा का जमाना मा तो रोज ही त्यार छ। आज आर्थिक आधार कमजोर होण व पैसा की बरबादी का खातिर गौ मा त्यार वन्द होण बैठिगि। पर आज यू त्यार सणी सांस्कृतिक विरासत का रूप मा बचौण की भौत जरूरत छ। ❑❑

मकरैणी संगरांद अर मेळा थौळा

राजेश जोशी

हिन्दुओं मा त्यारों तैं मनोंण को जो उलार दिखेंदु वन उलार हौर कै मा भि नि दिखेंदु किलै कि हौरु का इथगा त्यार बि त नि छन जथगा हिन्दुओं का छन, अर फिर हर त्यार का पिछाड़ी जो हमारी धार्मिक मान्यता छन वूं कि त बात हि निराली छ, हमारा सब्बी त्यारु कि एक धार्मिक गाथा छ एक धार्मिक कारण छ, यन्नी एक धार्मिक त्यार छ मकरैणी संग्रादि को त्यार जैकु बड़ु हि महातम छ शास्त्रु का हिसाब सि यनु बोले जांदू कि जब भगवान् सूर्य नारायण धनु राशी तैं छोड़िक मकर राशी मा प्रवेश करदा अर सूर्यनारायण भगवान् कि उत्तरायणी गतिशुरू ह्वे जांदी तब यु पर्व मनये जांदू यु एक इनु त्यार छ जो सैरा देश मा मनाये जांदू हाँ पर मनौंण को ढंग अलग-अलग छ पुराणा दाना सयाणा बतौंदन कि पूष का मैना भगवान् जी पाताळ लोक मा स्येणक तैं चलि जान्दन ये वास्ता यी पृथ्वी लोक मा धर्म का कुछ बि कारज नि होंदा अर जब बिच्दा पूष का मैना अर लगदा मौ (माघ) का संक्रांति काल मा सूर्य भगवान् उत्तरायण होंदन तब औंदन भगवान धरती लोक मा वापिस अर तब्बी होंदन सब्बी धर्म का कारिज ये वास्ता मौ कु मैंनु धर्मी मैनु बोले जांदो ये पावन पर्व माँ द्यब्तों कि पुजापाठ अर संग्राद का दिन न्हायेण को भौत महातम छ सौ अश्वमेध जज्ञ् का बराबर को पुण्यफल मिलदु इनु छ शास्त्रु मा लिख्युं, मकर संग्रांदि का पर्व को पुराणा जमाना बटी बड़ो भारी व्यापारिक महत्व भि छ, ये कारण सी हि ये दिन मेळों को भि आयोजन होंदु।

मेळा थौळों का बारा मा जब जब भि कखी बात होंदी त मन म कै भान्ति का सुखीला स्वीणा ऐ जान्दन अर मन पुराणी नयी यादु मा डूबण-उतराण ल्हगी जांदू, सौन्जड्यों का गैल घुमणु पर्व न्हयेणु द्यव्तों कि डोलियों दगड़ी नाचणु अर पूजा पाठ कैरिकी मेळों मा रिटणु दुकानियों म द्याख्णु कि क्य-क्य सामान छ ल्यायुं, सैरा साल हम जाग्याँ रैंदा छा कि जब थौळ होलू तब ल्यौलू मैं अफुक तैं फलाणी चीज अर थौळ मा हि लेंदा भि छा,चर्खियों म बैठ्णों को शौक, सर्कस अर कठपुतली वळौं से लीक तैं बुड्यों को उलार भि असमान पर होंदु,

जन्म : 30 जनवरी, 1973
वरिष्ठ रंगकर्मी एवं कवि
रंगमंच : वर्ष 1987 से रंगमच पर सतत सक्रिय राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर पूर्णकालिक, नुक्कड़ नाटकों एवं लोक नाटकों मे अभिनय।
लेखन : नाटक-दास्ताने भूकम्प, यमपुरी में हंगामा, अनेकों पत्र पत्रिकाओं मे लेख व कवितायें प्रकाशित
सम्प्रति : अध्यापन
सम्पर्क : जोशी मोहल्ला, जोशियाड़ा, उत्तरकाशी
मो० : 9410197910

घर मा औण जाण वळौं को भि खूब रंदु छौ थौळ लग्युं, कै शान्ति कि कथा कै भान्ति कि छ्वीं बथा घर म भि मन हैरियाळ् ह्वे जांदू छौ यूँ दिनु, पर हाँ जख तक धार्मिक महातम कि बात छ त मकर संग्रांदि का दिन बिटी सैरा देश मा भान्ति-भान्ति का थौळ लग्दन।

भारत हि न बल्कि हमारा पड़ोसी देश नेपाल म भि होंदन ये पर्व पर थौळ अर बोले जांदू माघे संग्रांदी ,थारू लोग बोलदन माघी ये दिन वख भि लोग नहेन्दा, दान पुन करदन् तिल, घी, मिठू, कंदमूल खौक देव थान जान्दन्।

त सब्सी पैली अफ्वी बटी शुरुआत करला मतबल कि बाड़ाहाट का थौळु बटी। यु सबसे पुराणु धार्मिक सांस्कृतिक अर व्यावसायिक थौळु छ मकर सग्रांदी का दिन पाटा-संग्राली गौं बिटी श्रेष्ठ द्यब्ता कंडार कि डोली का दगड़ा-दगडी हौर द्यब्तों कि डोली भि पर्व स्नान थैं उत्तरकाशी पौछण लग जन्दिन अर वैदिन सी हि थौळु कि शुरुआत माने जांदी थौळु मकर संग्रादी 14 जनवरी सि 21 जनवरी तक होंदु, दुरु-दुरु का लोग अपड़ी धार्मिक आस्था ल्हेकी पर्व न्हायेणों को औंदा अर गैला गैल सामान भि ल्ही जान्दा मुल्यैक, ऊन का बणायां सामान का साथ-साथ जड़ी बूटी भि ल्ही जांदा था पैली पर अब जड़ी बुट्यों पर सरकारी प्रतिबन्ध छ, अब यख देश का सभी हिस्सों का लोग औंदन सामान बेचण अर बडू बजार ल्हग्दु दुरु-दुरु गौं बिटी अब भि लोग वनी श्रद्धा लीक औंदा जन पैली औंदा था, खास बात जो ये थौळा कि छ व य छ कि य भूमि काशी विश्वनाथ भगवान् कि छ ये वास्ता यख का माघ स्नान को हिन्दू पौराणिक मान्यताओं का हिसाब सी बड़ो भारी महातम छ।

उत्तराखण्ड मा हरिद्वार से लीक कुमाऊँ तक सब्बी जगौं मा यो त्यार उत्तरायणी का नौ सि मनाये जांदो, गढ़वाळ मा ये तैं खिचड़ी संग्राद भि बोळ्दन, पिथौरागढ़ अर बागेश्वर तैं छोड़िक सारा कुमौं मा मकर संग्रादी का दिन घुघुत बणाये जांदा अर हैंका दिन कौवों तैं खलाये जांदा वखी पिथौरागढ़ अर बागेश्वर मा मासान्ति का दिन संगरांद सि एक दिन पैली हि घुघुत बणाये जांदा अर मकर संग्रान्दी का दिन कौवों तैं खलाये जांदा अर त्यार को नौ बोले जांदो घुघुतिया त्यार अर बोले भि जयेन्दो "काले काले कावा काले काले घुघुत मावा खाले खाले" वन संग्रान्दी को यो त्यार नदियों का संगम पर हि ज्यादा लगदो ये कारण सि बागेश्वर तैं भि तीर्थराज बोले जांदो किले कि वख भि सरयू अर गोमती को संगम छ अर यी जगा को महातम स्कन्द पुराण का मानसखण्ड मा मिलदो।

तमिलनाडु मा ये त्यार तैं पोंगल बोल्दन अर चार दिनों तैं मनोंदन पैला दिन भोगी पोंगल, दूसरा दिन सूर्य पोंगल तीसरा दिन मट्टू पोंगल या कनु पोंगल अर चौथा अर आखरी दिन कन्या पोंगल मनाये जांदो पैला दिन कबाड़ फुके जांदो दूसरा दिन लक्ष्मी कि पूजा होंदी तीसरा दिन पशुधन पूजा होंदी, पोंगल मनौण का वास्ता न्हाये ध्वाए कि चौक मा माटा का भांडों पर खीर पकोंदन अर व खीर परसाद का रूप मा बांटे जांदी। यख बेटी अर जवांई को बिशेष रूप मा स्वागत करे जांदो। कर्नाटक, केरल अर आन्ध्रप्रदेश मा ये त्यार तैं संक्रांति हि बोल्दन। असम मा मकर संग्रान्दी तैं माघ बिहू या फिर भोगाली बिहू का नौ सि मनौण को रिवाज छ। राजस्थान मा ये पर्व पर स्वागवंती जनानि अपड़ी सासु को आशीर्वाद लेंदिन दगड़ा-दगड़ी स्वाग चिह्न चौदह कि संख्या मा पूजी क तैं चौदह बामणों तैं दान देये जांदो, ये परकार सि मकर संग्रान्दी का द्वारा भारतीय संस्कृति कि झलक सैरा देश मा देखेंदी।

कुमौं-नेपाल का नजिक छ ये कारण सि नेपाल का व्यौपारी सिलाजीत, कस्तूरी, दानपुर कि चटाई, डाला सुपा, तांबा का भांडा, लुवा की भदाळी (कढै) जन हौर भि भौत कुछ अज्यों बि ल्ह्योंदा बेचणक। वख बि ये पर्व को खास महातम छ।

उत्तर प्रदेश मा बि इलाहबाद, गंगा जमुना, अर सरस्वती का संगम पर भि बड़ो भारी थौळ लगदो अर माघ मेला का नौ सि जाणे जांदो यु थौळ मकर संग्रादी बिटि सैरा मैना चल्दु खर मॉस मा किले कि सब्बी शुभ

कारज बंद रंदन अर मकर संग्रादी का दिन खुल्दा त यनु मने जांदो कि सब शुभ दिनों कि शुरुआत मकर संग्रान्दी बिटी होंदी, गंगा स्नान त वन चित्र शिला, रामेश्वर अर हौर जगा बि मनैंदु उत्तर प्रदेश म भि ये तैं खिचड़ी त्यार बोल्दन।

हरयाणा अर पंजाब म यो दिन लोहड़ी क नौ सि मनये जांदो संग्रादी सि एक दिन पैली लोग ब्यखुनी दां आग जगे कि अग्नि देव कि पूजा करदा तिल, गुड़, चौळ अर भुन्या मुंगरि का दाणों कि आहुति देक पूजा करदा ये तैं तिलचौंळी बोल्दन, लोग मुन्फळी अर रेवड़ी बांटिक लोकगीत लगान्दा अर खुशी मनौंदा ये दिन सरसों को साग अर मकई कि रोटी (लय्या को साग अर मुंगर्यूं की रोटी) खाण को महातम छ नयी ब्वारियों अर नया जन्म्याँ नौन्याळ तैं लोहड़ी को विशेष महातम छ, बिहार मा मकर संग्राद तैं खिचड़ी का नौ सि मनोंदा अर ये दिन काळी दाल, चौंळ, तिल, च्यूड़ा, गौ, सोना, ऊनी कपड़ा, काम्बली दान देंण को अलग हि महातम छ।

महाराष्ट्र मा यु पर्व स्वागवंती जनान्यूं क तैं भौत महातम वाळु माने जांदो ये दिन स्वागवंती जनानी कपास, तेल, अर लोंण जनी चीज हौर स्वागवंती जनान्यूं तैं दान मा देन्दन तिलगूल नौं को हलवा बि बांटे जांदो गुड़ अर तिल बांटणा को बि रिवाज छ अर बाँटदि बक्त "तिल गूल ध्या आणि गोड गोड बोला" भि बोल्दी जान्दन।

बंगाल मा यु त्यार पर्व स्नान का बाद तिल दान करणा कि प्रथा का दगड़ा मनौंदा यख गंगासागर मा हर साल बड़ो भारी थौळ लगदो यख यनी मान्यता छ कि गंगा जी मकर संग्रादी का दिन रज्जा भागीरथ का पिछने-पिछने चलिक तैं कपिल मुनि का आश्रम सि ह्वेक तैं सागर मा मिलगी थैं। कुछ कथों मा जसोदा जी को बि जिक्र होंदो कि जसोदा जी न जख कृष्ण भगवान तैं पुत्र रूप मा पौण का वास्ता ये दिन व्रत करी थौ, अर व जगा गंगा सागर हि छ तबी त बोले जांदू कि—"सारा तीरथ बार बार गंगा सागर एक हि बार"।

तमिलनाडु मा ये त्यार तैं पोंगल बोल्दन अर चार दिनों तैं मनोंदन पैला दिन भोगी पोंगल, दूसरा दिन सूर्य पोंगल तीसरा दिन मट्टू पोंगल या कनु पोंगल अर चौथा अर आखरी दिन कन्या पोंगल मनाये जांदो पैला दिन कबाड़ फुके जांदो दूसरा दिन लक्ष्मी कि पूजा होंदी तीसरा दिन पशुधन पूजा होंदी, पोंगल मनौण का वास्ता न्हाये ध्वाए कि चौक मा माटा का भांडों पर खीर पकोंदन अर व खीर परसाद का रूप मा बांटे जांदी। यख बेटी अर जवांई को बिशेष रूप मा स्वागत करे जांदो।

कर्नाटक, केरल अर आन्ध्रप्रदेश मा ये त्यार तैं संक्रांति हि बोल्दन।

असम मा मकर संग्रान्दी तैं माघ बिहू या फिर भोगाली बिहू का नौ सि मनौण को रिवाज छ।

राजस्थान मा ये पर्व पर स्वागवंती जनानि अपड़ी सासु को आशीर्वाद लेंदिन दगड़ा-दगड़ी स्वाग चिह्न चौदह कि संख्या मा पूजी क तैं चौदह बामणों तैं दान देये जांदो, ये परकार सि मकर संग्रान्दी का द्वारा भारतीय संस्कृति कि झलक सैरा देश मा देखेंदी।

मकर संग्रान्दी को महातम—शास्त्रों का हिसाब सि दक्षिणायन तैं द्यब्तों कि रात बोल्दन अर उत्तरायण तैं द्यब्तों को दिन बोल्दन यांका वास्ता ये पर्व मा जप, तप, दान, स्नान, श्रद्धा, तर्पण जनि धार्मिक कारिजु को विशेष महातम छ यनु भि बोल्दन कि ये पर्व मा दिन्याँ दांन को फल सौ गुणा बढ़िक तैं मिलदो—

माघे मासे महादेवः यो दास्यति घृत कम्बलम।
स भुक्त्वा सकलान भोगान अन्ते मोक्षं प्राप्यति।।

मकर संग्रान्दी बिटि दिन बड़ा अर रात छोटी होण ल्है जान्दन मतबल यो पर्व अंधकार पर परकाश कि विजय को पर्व बि छ ये वास्ता बि ये को बड़ो महातम छ वन त हमारा सब्बी पंचांग चन्द्रमा कि गति पर आधारित छ पर मकर संग्रान्दी को पर्व भगवान् सूर्य नारायण कि गति तैं आधार मानिक तय करे जांदो ये कारण सि यो पर्व हर वर्ष 14 जनवरी का दिन हि औंदु, ये त्यार कि कई मान्यता छन जनि कि ये दिन भगवान् भास्कर अपड़ा बेटा शनि तैं मिळण वैका डेरा अफ्वी जान्दन किले कि शनि देव मकर राशी का स्वामी छन त यो दिन मकर संग्रान्दी का नौं सि जाणे जांदो। महाभारत कि एक कथा मा बि छ कि भीष्म पितामह न बि अपड़ा शरीर छोड़ण का वास्ता मकर संग्रान्दी को दिन छांटी थौ। यूँ सब्बी बातु न एक बात त सपा बिंगण मा छ औणी कि ये पर्व को सैरा देश अर कखी-कखी विदेशु मा बि बड़ो भारी महातम छ यो पर्व हमारा देश अर हमारी संस्कृति कि पछाण छ।

❑❑

जौनसार की मकरैंण

डॉ० जी०डी० भट्ट

शिक्षा : एम०ए०सी०,पी०एचडी (मानव विज्ञान)
प्रकाशन : सामाजिक मुद्दों पर शोध पत्र प्रकाशित लेख अर प्रकाशित
सम्पर्क : हिमालय कॉटेज, 35 सृष्टि विहार अजबपुर, देहरादून
मोबाइल : 9412050757

उत्तराखण्ड मा त्यौहार पर्वों कू बड़ू महत्त्व छ: यख हर मैना, हर मौसम या ऋतु मा क्वी न क्वी त्यौहार मानाये जांदो। यख का लोग बड़ा उल्लारया घणी का होंदन, यि अपणा सुख दुख यू त्यौहारू का माध्यम से ही आपस मा बांटदन। उत्तराखण्ड का त्यौहारू की एक और विशेषता य छ: कि जब भी सूरज भगवान अपणा स्थान बदलदू और कै हैंकी रेखा पर जांदू तै दिन जरूर क्वी न क्वी त्यौहार मनाइये जांदू। यनी एक त्यौहार मकरैण कू त्यौहार भी छ: ये दिन सूरज भगवान मकर रेखा पर प्रवेश करदू, उत्तरैण ह्वे जांदू ये दिन पूरा उत्तराखण्ड मा मकरैंण कू त्यौहार मनाये जांदू। यन त उत्तराखण्ड का ज्यादा तर ये दिन पर गंगाजी व संगम मा स्नान करण कू रिवाज छ पर उत्तराखण्ड का अलग अलग हिस्सो मा मकरैण कू त्यौहार अलग अलग तरीका मनाये जांदू ।

उत्तराखण्ड को जौनसार क्षेत्र मकरैंण ही ना बल्कि पूरु माघ मैना ही त्यौहार का रूप मा मनौंद जेतै माघी त्यौहार बोल्दान, ये त्यौहार कू जौनसारी संस्कृति मा बड़ू महत्त्व छ, यख यू त्यौहार मकरैण सी तीन पैली दिन बटी शुरू ह्वे जांदू जख पूरा उत्तराखण्ड मा मकरैंण व्रत रखण कू त्यौहार छ वखि जौनसार मा यू त्यौहार बखरा मान और सिकार खाण कू त्यौहार छ और यही परम्परा और जगा सी अलग छ संग्राद का तीन दिन पैली सबी घरु मा लगदा नाम को भोजन बणैये जांदू जैसन आटा तै भुनी कर चूरमा की तरै सी तैयार करे जांदू, वे का दगड़ी पिनवे जो कि कोदा का आटा सी हलवा की तरह मिठु व नमकीन होंदु हर घर मा बणये जांदू। वे दिन यी खाणु खाये जांदू और दगड़ा ही गौ का बाजगी सन बि दिए जांदू।

वे का अगला दिन सभी लोग लगदा खैकी अपणी अपणी छानियों मा जांदान जख कि हर परिवार कू माघ मैना का खातिर एक बखुरु पळ्यूं रैंदु जौनसार की या प्रथा छ कि क्वि परिवार कथगा भी गरीब किलै न हो उ माघ त्यौहार का खातिर एक बाखरु जरूर पालदु। सब

लोग लैंन लगै तै एक का बाद एक साथ साथ गों मा ल्योंदन गों माघ यों बखरों तै गों की साजी जगा (जै तै चौक बोल्दान) मा कठी बांधदन जख मा एक कार की दिखवाता भी ह्वे जांदी कि कीकू बाखरु कथगा बड़ू छ जैकु बाखरु बड़ू उ मवासु उथगा सेठ।

वाका बाद सुरु ह्वे जांदू बखरा मारण कु काम जै परिवार मा हाल मा क्वी मुर्दा मर्यू होन्दू सबसे पैली वे मवासो को बाखरु मारे जांदू ये माने जांदू कि आज का बाद उकु त्यौहार खुलिगे। वाका बाद येक एक करी तै सब का बाखरा मारे जांदान कुछ लोग अपणा बाखरु अफि मारदन और कुछ का बखरा उ लोग मारदान जु बखरा मारण का माहिर होंदान। ये का बाद चौक ही मा कई प्रकार की प्रतियोगिता होदिन जनकी वजन उठाण, रस्साकस्सी, और कई प्रकार का करतब जैमा विजयी तै लोग इनाम देदान। वांका बाद सब लोग अपणा बाखरै सिकार अपणा अपणा घर ले जांदान और अपणा घर वे को खून और आनंदड़ो को भुंइया बड़ोंदन वे दिन क्वे कैका घर नि जांदान, त्यौहार सन सभी आपण घर मा ही मानोंदन ये दिन क्वे मेहमानदारी म नि जांदू।

त्यौहार का अगला दिन बिवार्यी नोनी का मैती अपणी बेटी का सैसर बाखरा लेकि आंदन जैमा सिकार, लातड़ चूड़ा आदि चीज होंदेंन ससुराल वाळों सन देंदान । ये दिन घर मा मेहमानों को अणु जणू लग्यूं रैदू। संग्राद का दिन सभी घरु मा चरुचरु बरबरू सिकार भात बणये जांदू, और परिवार का बुजुर्गु सन खाणा खाण तै बुलैई जांदू व आशीर्वाद लिए जांदू, ये खाणा तै सजा बोले जांदू। वांका बाद गौं का सब लोग जनानी और मर्द अलग अलग सभी घरु मा गीत लगान्दु लगान्दु जादान और बाद माघ सब लोग साजि चौक का कट्ठा होंदन और सभी जनानी और मर्द मिलि जुली तै गीत व नाच करी तै खुशी मनोदन। संग्राद को अगलु दिन मसाण कू दिन होन्दू और वे दिन क्वे कैका घर नि जांदू सभी लोग अपणा घर पर ही रौंदान।

उत्तराखण्ड को जौनसार क्षेत्र मकरैंण ही ना बल्कि पूरु माघ मैना ही त्यौहार का रूप मा मनौंद जेतै माघी त्यौहार बोल्दान, ये त्यौहार कू जौनसारी संस्कृति मा बड़ू महत्त्व छ, यख यू त्यौहार मकरैण सी तीन पैली दिन बटी शुरू ह्वे जांदू जख पूरा उत्तराखण्ड मा मकरैंण व्रत रखण कू त्यौहार छ वखि जौनसार मा यू त्यौहार बखरा मान और सिकार खाण कू त्यौहार छ और यही परम्परा और जगा सी अलग छ संग्राद का तीन दिन पैली सबी घरु मा लगदा नाम को भोजन बणैये जांदू जैसन आटा तै भुनी कर चूरमा की तरै सी तैयार करे जांदू, वे का दगड़ी पिनवे जो कि कोदा का आटा सी हलवा की तरह मिठु व नमकीन होंदु हर घर मा बणये जांदू। वे दिन यी खाणु खाये जांदू और दगड़ा ही गौ का बाजगी सन बि दिए जांदू।

वांका अगला दिन बाटी मेहमानों को अणु जणू सुरु ह्वे जांदू, सभी लोग अपणा अपणा रिस्तेदारू का घर जादान। जौं का नया-नया रिस्ता होयां रैदान उ माघ का मैना जरूर अपणा रिस्तेदार सन अपणा घर मा बुलै की बाटू खोलदान वे दिन जरूरी रूप सी घर का सिकार बणाई जांदी। पूरु माघ को मैनू सिकार खाण कू मैनू होन्दू, पूरा मैना भर सिकार खाये जांदी जो गौ का संभ्रांत मवासु होंदू उ एक दिन पूरा गौ सन खाणु खलोन्दु जेतै बोईदोल बोल्दान वे दिन उ फिर बाखुरु मारदु व सिकार भात की दावत करदू ये तरह जौनसार मा माघ त्यौहार की अलग ही संस्कृति छः जो कि उत्तराखण्ड का कै भी और हिस्सा मा नि पाये जांदी। यख माघ मैना मुख्यतै सिकार खाण का त्यौहार का रूप मा मनैये जांदू। यख हर परिवार मा, हर घर मा बाखरु मरे जांदू जै सन यु लोग साल भर तक पाली तै रखदान। माघ त्योहार का खातिर जौनसार को हर व्यक्ति जरूर अपणा घर आंदू यख य कहावत भी प्रचलित छ कि यदि क्वे जेल म भी हो तो माघ त्यौहार का खातिर वे सन कम सी कम एक दिन घर अणु जरूरी छ। ❑❑

रंवाल्टी कविता

लोक मा हमारी बोली भाषौं की अपणि अनोखी ल्हसाग छ ज्व बोलण मा पढ़ण मा भौत सुन्दर लगद अर वां को भाव बि अलग तरौं से दिखेंद। रंवाई क्षेत्र मा रंवाल्टी बोले जांद। गढ़वाळि मा क्षेत्रवार भाषै टोन अलग अलग ह्वे जांद अर यान इलाकों को पता चलद भाषा सूणि कैकि कि क्व क्षेत्रै कि छ। धाद का ये अंक मा रंवाल्टी कवि दिनेश रावत की कविता—संपादक

यख

बारऽ मईनु क त्यार यख
जिकुड़ियों मा उल्लार यख।
भाईयों माऽ भयात छन
मनखिऊँ मा छः प्यार यख।।
देवी-देवतों कऽ थान यख
मनखी बड़ महान यख।
पौणू जतरा जू भी आन्दू
पांदु बढ़ू सम्मान यख।।
जीण मरनऽ कु साथ यख
रिश्तों की छः थात यख।
काम लउडु हो चाई बड्ढु
बड़द सौ-सौ हाथ यख।।
बेटी, ब्वारी कु मान यख
लउडा-ब्ड्या कु ध्यान यख।
खैरी चाई जत्या भी हो
मुखड़ी मा मुस्कान यख।।

ब्वै

क ट कतरऽ झैल्दी ब्वै
जुठऽ कोलऽ मा पल्दी ब्वै।
दिनभर रन्दी धारू अर गाडू
रात छोरों क दगड़ खेल्दी ब्वै।।
गिचकु गास बईरऽ गाड़ी किन
छोर्‌री-छोरों माऽ बांटदी ब्वै।
छोरों कि गेर भरिईं देखि किन
भूख आपड़ी बिसरी जांदी ब्वै।।
खट्‌टू-मिट्‌ठू जू बी दैंदू कोई
फिण्डक बांधी ल्यांदी ब्वै।
दारकऽ आई किन सबु छोरों कऽ
बांटऽ आपु लगांदी ब्वै।।
नौ-नौ मईनु पेट फुण्डू ली किन
सारऽ काम निपटांदी ब्वै।
भूख-तिस जब अति होई जांदी
चोपडू माटू चबांदी ब्वै।।
सन्तान को मुख देखणऽ क बान
सारी डाऽ बिसरी जांदी ब्वै।
सुइल्या बगति भी घर अर बणु को
सारू काम निपटांदी ब्वै।।
कौलऽ क बाळऽ दूध पिलाण
सैर- बण न दारक आंदी ब्वै।
एकलाशी की कन्नि खाई कि
झट बुढी होई जान्दी ब्वै।।
छोरी-छोरों कऽ हण-खाण कऽ दिन
देखी बी नि पांदी ब्वै।
बाळऽ छोरों क ज्वान होण तक
दुनिया छोड़ी जांदी ब्वै।।

❑❑

बुड-बुड्‌या

बुड-बुड्‌यों देखि किन
ज्वान बेटा-ब्वारी यण खीज्यों।
कि सी बिचारऽ कणिक बाच गाढौं
त दुईया दांत-दाड़ा कूरचों।
राथि-ब्याल्या की
त्यों कि काण्या लगौं कि
'ई दुईया आपु बैस्सी-बैस्सी खौं
अम्मु देखी किन कुड़कुडांद रौं।
अब जऽ बुड-बुडिया दुईया न रई
अब चलि पता कि
त्यों बिन कतरी खरी आइई।
अबऽ दाराग कोई लम्पू बी न जगांदू
चैनु-चाऊ बइरनऽ भितर नाऽ ल्यांदू

नाऽत त्यों कि बिचारू की आग औजेई रऽती
समाणी की फुल्टी सजाईं रऽती
चैन-चाव सब्बा बांदी रऽत
पाणि क पणेडऽ भरीं रऽत
डोखरू फुण्डनऽ जतेलि अमऽ दारागऽ आतऽ
खट जाई किन बिचारऽ चा बणातऽ
छोरी-छोरों भी दच्चाड़ी धरऽत
द्वार-पात सब्बा उगाड़ि धरऽत।
अबऽ थकी-कुसाई किन दारऽक ओं
तति पाछक्या चैन-चाव अर छोरों समाऊँ
टपरई-टपरई किन लाखड़ि-छौल्की लोणों
आद्‌यारात फुण्डि चुल्ठों बी आग ओज्यों
अद्‌काच्चू-पकिऊं छोरी-छोरों खलौं
निन्दरा क बस कोई कणिक खाईजों
कोई भुक्या सुतौं
अम जोरू-कस्म्यार आँसू बगौं।
अब जाणि कि निर्भाग्युं बुड़-बुड्‌या न मिल्द
भाग्यानु क त्यों बिगैर घर-बार न चल्द।

❑❑

गढ़वाळी साहित्य मा श्रृंगार रस

डॉ० सुरेन्द्र दत्त सेमल्टी

जन्म : 11 अक्टूबर, 1955
प्रकाशन : 8 पुस्तकें प्रकाशित
सम्मान : शैलेश मटियानी राज्य शैक्षिक पुरस्कार से सम्मानित
सम्प्रति : माध्यमिक शिक्षा मा अध्यापन
सम्पर्क : ग्राम व पत्रालय पुजार गाँव, चंद्रबदनी, टिहरी गढ़वाल
मो० : 9690450659

देवभूमि गढ़वाळ मा ह्र्यां-भर्या घणा जंगल, छछड़ाट करदा गाड़ गदरा, सीढ़ीनुमा ड्वखरा पुंगणा, सुरसुर्या बथौं.....

जनु हरेक मनखि तै अपणि तिर्प बुलौंदन तन्नि गढ़वाळी बोलि मा अलिखित अर लिखित साहित्य बि जखमां श्रृंगार, वीर, करूण, हास्य, अद्भुत, वात्सल्य जना सभी रस विद्यमान छन सि अपणि तिर्प आकर्षित करदन। जख तक श्रृंगार रस की बात छ त एका जो द्वी भेद संयोग अर वियोग छन यूं दुयौं मा इतना जादा साहित्य मिल्यूं कि वख पर कै शोध ग्रन्थ तैयार ह्वे सकदन।

अब प्रश्न यु बि उठदो कि श्रृंगार रस पर इतना जादा साहित्य उ चा अलिखित छ या लिखित कनै रचे गि? बात स्पष्ट छ, एक अखाणु छ जनु खवा अन्न उन होंदो मन, जनु प्यवा पाणि उनि होंदि बांणी। यख कि आब-हव्वा, नाज-पाणि सब शुद्ध थौ, जौं लोगोंन वांको उपभोग करि, शारीरिक श्रम करिक अन्न पैदा करि, वांसि जख या तिर्प परिश्रम कन्न सि वूंको शरील नीरोग ह्वे वक्खि हक्कि तिर्प वै अन्न खैक शुद्ध हवा पाणी का सेवन सी सब्बि लोगो का तन बदन नीरोगा का दगड़ा-दगड़ी द्यखण मा बि सुन्दर स्वांणा बणिक यक्का हक्का का मन तैं अपणि तिर्प आकर्षित कर्दि रैन। प्रेमी प्रेमिका यक्का हक्का रूप सौन्दर्य पर मोहित ह्वे तैं गीत गुणगुणान लग्यन, साहित्यकारून बि अपणा गीत, कविता, कथा, वार्ता, नाटक जनि कै विधाओं मा खूब दिल खोलितैं रूप, नंगु बिटि सिंगु तक वर्णन करि। संयोग श्रृंगार का साथ ही वियोग श्रृंगार का वर्णन कन्न मा गढ़वाळी साहित्यकारून क्वी कंजूसी नि दिखाई, वांका पैथर बि क्वी गाणि नि ह्वेतैं वास्तविकता छ।

गढ़वाळ मा पैली आवागमन की क्वी सुविधा नि थै अर नहि खाण पेण, रण कि हर बात कि बड़ि तंगि थै यख रोजगार का साधन बि नि था मर्द लोग अक्सर रोजी रोटी का जुगाड़ मा प्रदेश चलि जांदा था। अर घर मूं रै जांदि थै यखुलि जनानि। मैत सि दूर जखकि क्वी खबर सार त रै दूर उंची-उंची धार, घणा जंगल....होण सि मुल्का बि दर्शन तक नि ह्वे सकदा था। सै सैसर्यों को ककड़ाट अलग, र्वै-र्वै तैं बितदा था दिन। एक वियोगिनी नारी कि मनोदशा सटीक ढंग सी व्यक्त कन्न वाळो साहित्य बि गढ़वाळ मा भौत मिल्दो, उ बि मौखिक अर लिखित द्वी प्रकार सी उपलब्ध छ जै पर आज बि शोध द्वारा संकलित अर संग्रहित कन्न की आवश्यकता छ।

उदाहरण का तौर पर कुछ साहित्य ये लेख मा उद्धृत कन्नूं छौं जैसी गढ़वाळी साहित्य मा शृंगार रस की पुष्टि होली। गढ़वाळि साहित्य का आरम्भिक काल मा लीलानन्द कोटनाला की लिखीं एक कविता छ जख मा एक वियोगिनी नारी प्रदेश जयां अपणा पति का वियोग सी दुखी छ साथ ही वा वूं नार्यों का संयोग को बि वर्णन कर्दी जौं का पति दगड़ा मा छन–

स्वामी मेरो परदेश गै तो, द्वी तीन होई गैन मास
अज्यूं तई कुछ सुणी निमणी ज्यूं को ह्वेगे उत्पास
जौं का स्वामी घरू छन, तौंको होयों छ विलास
रंग विरंगी चादरे ओढ़ी ओढ़ी अड़ोस पड़ोस सुहास

बलदेव प्रसाद शर्मा 'दीन' न बि 'रामी' रचना द्वारा रामी नामक नायिका जैंको पति घर छोड़िक चलिगि थौ। एक दिन जब वा पुंगड़ा मा गुड़ाई कन्नी छै एक जोगी ऐतैं वीं का बारा मा पुछदो, तब वा अपणा नौं, गौं का दगड़ा-दगड़ी अपणो वियोग ये प्रकार से व्यक्त करदी–

मेरा स्वामी न बि छोड़ी घर, निर्दयी ह्वे गेनि मेई पर
ज्यूंरा का घर नी जगा मैको, स्वामी बिछोह ह्वयूं छ जैंको
रामी तैं स्वामी की याद ऐगी, हाथ कुटिल छूटण लेगे

वियोग शृंगार की परम्परा मा योगीन्द्र पुरी को कविता संग्रह 'फुलकंडी' मा संग्रहित रैबार नौं कि कविता बुनियादी ढुंगा को काम कर्दी–

पौन त प्राण मेरी, दासी छौं मैं बि तेरो
जैं दिशा भौंर मेरो, तैं दिशा भारी फेरो
देखि स्वामी को डेरो, बोलि रैबार मेरो
भौंर तू प्राण मेरो, केशरू को रसिया
भौंर अळसीगे तेरो, यो गुलाबी सी फूल

गढ़वाळी साहित्य मा शारीरिक सौन्दर्य, नारी का नग-ठग, चन्नू-ब्वन्नू जनि बातों को बि खूब वर्णन करेगी। अबोध बन्धु बहुगुणा न अपणी एक कविता सबु कि बौ बदेणि बौ मां यो चित्र इनु खैंचि–

सबु कि बौ बदेणि बौ त्यारो घुंघरू बाज्यो छम
घणा गौं का बाठा, औंदी तु बांदी
दुहाते माया बांटदी जांदी गजब कदी तू आंख्योंन खांदी
तरसेंद त्वै पर जै बि दिखेंदी हर कौथगेर त्वे पर मर्यू छ

ये ही प्रकार को एक दृष्टान्त प्रीतम भरतवाणा का गीत 'च्यूड़ि' मा बि दिखेंदो–

छमा छम हात्यूं मा च्यूड़ि बजदिन
गिची रन्दी पट्ट बौगी, रतन्याळी आंखी
मिठी छुई सी लान्दीन

पैनी नजरून मिठी, छुरी ना चलई
खुटु बिटि मुण्ड तलक, छईं तू कमाल
बड़ो बुरू होंदो यो सत्तरौं साल

प्रीतम भरतवाण न अपणि 'क्य चीज' गीत मा बि नायिका ये प्रकार सी करिक पुरुष का वास्ता वीं को शृंगार अर चाल ढाल नशीली चीज सि बतौंदि बोलि–

सनकौण्या सुरम्यळि आंखि तेरि,
ज्वानि को बोझ पतळि कमर मा
खुटु बिटि मुण्ड तक सारा,
माया को रोग बाळि उमर मा तेरा रंग ढंग मा नशा,
तेरि आंखि नशीलि छिन सान्यूं मा लांदि छुई,
तेरि बात नशीलि छिन
तेरि आंख्यौन दिल का गौं मा पछांण लाई
सच्चि बात छ या,
तेरि बाळि माया लगि मेरा दगड़ मा

गढ़वाळि साहित्य मा चौंफळा गीतों को बि खूब प्रचलन रै इ मिलन गीत ब्वले जांदन, यूं गीतूं मा अंग प्रत्यंग को वर्णन बि करे जांदो–

सिर धौंपेली लटकाई कनी काळा सर्प की केंचुली जनी
सिन्दूर से भरी मांग कनी नथूली मा गड़ी नगीना जनी
स्वर मा मिठास कनी ? डांड्यों बासदी हिलांस जनी

चौंफळा गीतों मा जीजा-स्याळी, द्यूर-भौज की हंसी मजाक, प्रशंसा जना प्रसंग बि औंदन जो संयोग शृंगार का साहित्य मा वृद्धि कर्दन।

मारी बाखरी पूज्यो मसाण बौ का हाथ भलि रसाण
सड़क फुंड बाखरा मेरा ब्याखनदां जाण बौ का डेरा
पल्या पताला बासी त कवा बौ बणिगे बजारी हवा
बौ छ मेरी रिक पठोली बौ कि धोती कैन लटोळी ?

चौमासा, बारहमासा, मिलन गीत, खुदेड़ गीत, चौंफळा जना हजारो-हजारों गीतों का द्वारा गढ़वाळी साहित्य मा शृंगार रस को वर्णन करेगे। मात्र गीत न बल्कि लौकिक गाथाओं जनो जीतू बगड्वाळ, भानु भौंपेलो, गढू सुम्याळ, मालू राजुला, कालू भण्डारी, जसी, सरजू कौंळ अर और कै गढ़वाळी गाथाओं मा संयोग अर वियोग शृंगार द्यखण को मिल्दो।

यां का अलावा गढ़वाळि लोक कथाओं जन मानियों अर आछ्रयों की कथा, राजकुमार राजकुमारियों की कथा, वीर भड्डू जनि कै कथौं मा चा उ लिखित होन चा अलिखित शृंगार रस सी युक्त छन।

अगर जो इनो बुले जावो कि गढ़वाळ की सारी धरती ही शृंगार रस सी भरीं छ त यख मा क्वी अतिशयोक्ति नि छ। यख का तीज त्योहार होन या ऋतु मैना हो सब शृंगार का रस मा रंग्यां छन समय अर स्थिति का अनुसार इ थड्यागीत या बासन्ती गीत, होली गीत, बाजूबन्द, छोपती, लामण, झुमैलो गीतों का माध्यम से शृंगार रस की वर्षा कर्दन।

❑❑

पंदेरी तीस, घट्ट की भूख कख छै?

कमल रावत

जन्म : 1 जनवरी, 1975
शिक्षा : एम०ए० थिएटर
सम्पर्क : ग्राम व पत्रालय-खण्डाह, पट्टी कटूलस्यूं, पौड़ी गढ़वाल
सम्प्रति : स्वरोजगार
सम्पर्क : 9627275873

*वे साल मकरैण से पैली अर पूष मैना क आखि*री दिनूँ सग्गर (झौड़) छा पोडंया, भैर चौक तिरबित पंदेरी पोडणी अर तिबरी बैठका भितिर, अगेठाऽ चरी तरफां बैठी हुक्का कश खैंचदा, मेरा दादाजी, जेठा दादाजी, रतन चचा, द्वि-तीन आस-पड़ोस क बोडा जी अर विश्वप्रसाद पंडतजी। बैठकै खोळी मा हारमोयिम पर सुर लगादों बादी कोन्ना दादा क गीत सुणणा छा-

"आसन्ती को पाट, वासन्ती को पाट,
गौरा को पाट, सावंला को पाट,
नीला चौरी उझान को पाट
मानवचाणी को घट्ट लगायो,
द्वाराहाट मा दौर मंडल चिणौ,
खिमसरी हाट मा खेल लगायो,
रणाचुली हाट मा राज रमायो आसंदी ळे।"

गीत क बाद वू गीत कू अर्थ बिंगादो

"माराज ठाकुरो, कत्यूरी राज्जों क अपणा राज मा मानचवाणी घट्ट लगायां छा, जगा-जगा वूं क न्याय क वास्ता नैल छा, राजमोहल छौ, खिमसरी हाट मा वूं का मल्ल लडदा छा, अर रणचूली हाट मा वूं को राज दरबार लगदो छौ, बड़ा धर्मी छा कत्यूरी राज्जा।"

"अच्छा, त यी घट्ट कत्यूरियों क जमाना मा भी छा? ' दादाजीन पूछी'।

"हाँ माराज, पहाड़ी संस्कृति मा घराट को बडो माथम रैं, राजों का समय बटि परम्परा चली आणी छ। कै राजो को अत्याचार बतौण ह्वै त बोले जांद छौ कि फलाणन बांजा घट्टों बटि भग्वड़ि उगै।"

"अच्छा।"

"हाँ जी। अब मी एक औखाणो पूछणो छौ, जवाब सिर्फ छुटा ठाकुर नरेन्द्र सिंह देला, ठीक च?" कोन्ना दादन मैं तरफां देखी बोली। मीन 'हाँ' मा मुण्ड हिलांई।

"मेरू बुवाजी द्वि बलद लैन, एक खडु रांद अर हेको रिगणूं रांद, बतावा क्या?"

"घट्ट" मीन जवाब देई।

"कनमा पता हवे माराज?"

"रोज तुम यू ही औखाणा पूछदां" मेरा जवाब से सभी हैंस पडीन।

शम्भू सबूको तें वखीमु रोटी लै गे। हैंका पांडा मेरी मां अर द्वि दीदी रोटी बणाणी छैं। माच्छों को साग बणयूं। सबूंन मंदरा मा बैठी रोटी खैन। खाणा बाद सबी माळू क पत्तों क पुडखा अर पाथला बणाण लगीन। मौउ सोलह गति फौजी चचाऽ ब्यों छौं। कोन्ना दादा अपडी हारमोनियम पर सुर निकालणूं रैं।

"कोन्ना भै।" दादाजीन बोलि।

"हाँ ठकरो"।

"भै त्वेन भोळ घट्टाऽ पाटाऽ दान्त बणैणन।"

"बण जाला"।

"मीन भोळ पंडतजी दगड़ी नहेणो ढुंढप्रयाग जाण अर वखी बटि 'सरू' मू पडियारगौ जाण, न्योतु पतरू दे कि आण, ब्यों को समै इसी रै गे।"

"ठीक च माराज।"

"घट्ट तेरा हवाला, जिम्मदारी को काम च। शम्भू भी रलो, पर तू जाणदो छैं घट्ट फूटी त घट्ट रांड, पंडालो टूटी त घट्ट रांड। होशियारी से राण पोडलो, हमारा ही यख रै, खै पै, ठीक च?"

"मैं से निश्चिन्त रावा ठाकुरो, तुम आराम से जावा, मी देखलो।" कोन्ना दादान भरोसू दिलै।

"दादा घट्ट खबेस आंद, हाँ, ओबरा वेका माच्छा रांदन खैयां, कभी-कभी ऐंच घट्ट परो पिस्यान चाटी चली जांद।" शम्भू न चेताई।

"पूष मौउ मैनो यन होदूं छ तू डरो न भै, कोन्ना भै तें।" दादाजीन शम्भू टोकी।

''हूँ, मी जान खबेसेऽ मुण्डली ये लाठन डंगडौंऊ।"

कोन्ना दादन अपडु लाठू उठै कि बोली अर सभी हैंसेण लगीन।

रातभर छवीं बती रैन लगणी अर मी दादाजी क काख पर निवाति मा सेई गयूँ।

ग्यूँ-जौ क पिगंला फूल्लूं क सेरा-पुंगडों क बीच, खण्डाह गाडा छाला छौ हमारू घौर। बगल मा बगदी गाड 'सर्र-सर्र'। इनै-उनै सेरा, ऐंच ग्यूँ-जौ कि सार। हमारू घौर क्या छौ लंदा-लंदा मा चार मंजिली पहाड़ी पठाळ्यूं को कुडो छौ, ओबराऽ तौळ ओबरा अर आखिरी 'फेन्ड ओबरू' जख घट्टे घेरण रिंगदी छैं।

एक दिन दादाजी मैं सणे घट्ट दिखाणूं लीगीन। ऐंच कूली बटि पाणी तौळ पदाळौ ह्वेकी धार बणैकी ओबरा, भेरण घुमाणु छौ। भेरंण दगड़ी क्वीलो जुडूयूँ, जू ऐंच घट्टऽ ऊपरी पाट रिंगाव। पाट दगड़ी रेडो जुडूयूं, जै पर घुघती टक-टक करी क नाज क सात-आठ बीज पाट उंद पोडण देव। घट्ट रिंगणो च अर नाज पिसेणो च। पिस्यानऽ खुशबू उडणी। नजीक पिस्यां-अणपिस्यां थैला रखयां छन। बगलै खोळी मा शम्भू आराम करणो छ।

सुबरी जब मी उठयूँ त दादाजीऽ छतरी, टोफी, लाठी जगा पर नी दिखेन, मी समझ गयूँ दादाजी अर पंडतजी श्रीनगर चली गेन। वे मकरैणा दिन हमतें खाण मा खिचड़ी, घ्यू अर उडदै पकौड़ी खाण मा मिली। भैर बरखा रुक-रुक लगी रैं अर दिन भर घट्ट बटि ठक-ठक छेनी की आवाज आणी रैं।

खण्डाह आठ गौं की चट्टी, छुटु बजार, सौदा पता मोळ लेणे जगा, नाज कुटौण-पिसौणे जगा छैं। खण्डाह

गाड़ पर नौ-दस रिंगदा घट्टु मा ओणी, असनोली, पीपलकोटी, गिरगौं, बछेली, चडीगौं, कोटी-कमेडा, केन्द्र बटि नाज पिसोणो लादां छां, ठेट श्रीनगर, उफल्डा, ऐंठाणा बटि भी लोग नाज लौदां छा।

क्वी-क्वी लोग घट्टु बासा भी रांदा छा, वखी खाण सैण, मेल-मिलाप, राजी-खुशी पूछणो अड्डा छौ घट्ट।

पुराणी मालगुजारी अर पधान चरी हमारा ही कुटुम्ब मा छैं। हमारी दुकान सम्भालण वाळा मेरा दादाजी गौं पदान होण का दगड़ी 'लालाजी' भी छा। पिताजी नौकरी पर अर मां क जिम्मा खेती बाडी, धैन-चैन, लाखडु पाणी सब छौ, मेरी द्वि जेठी दीदी माँ कू हाथ बटांदी छै। मेरी खाणी पेणी, पढै-लिखै सब दादाजी क हाथ छै। कक्षा तीन को मैं विद्यार्थी, पाटी बोळख्या लेकी दादाजी क दगड़ी नजीकऽ स्कूल आंद-जांद छौ, अर मी द्वि दीदी मैं से बड़ि कक्षा मा छैं।

रोज ब्याखुनी बकत मां मैं अफ दगड़ी गौडा मूड़ि जांदि, गौडा बैठदी, घट्ट बटि रोटीयूं तैं पिस्यों लांदी अर खत्यूं-पडयूं पिस्यांन सोरी, गौडा तें पाणी मा मिलैकि खाणो देदं।

एक दिन दादाजी मैं सणे घट्ट दिखाणूं लीगीन। ऐंच कूली बटि पाणी तौळ पदाळौ ह्वेकी धार बणैकी ओबरा, भेरण घुमाणु छौ। भेरंण दगड़ी क्वीलो जुड़ूयूँ, जू ऐंच घट्टऽ ऊपरी पाट रिंगाव। पाट दगड़ी रेडो जुड़ूयूं, जै पर घुघती टक-टक करी क नाज क सात-आठ बीज पाट उंद पोडण देव। घट्ट रिंगणो च अर नाज पिसेणो च। पिस्यानऽ खुशबू उडणी। नजीक पिस्यां-अणपिस्यां थैला रखयां छन। बगलै खोळी मा शम्भू आराम करणो छ।

सुबरी जब मी उठयूँ त दादाजीऽ छतरी, टोफी, लाठी जगा पर नी दिखेन, मी समझ गयूँ दादाजी अर पंडतजी श्रीनगर चली गेन। वे मकरैणा दिन हमतें खाण मा खिचड़ी, घ्यू अर उडदै पकौड़ी खाण मा मिली। भैर बरखा रुक-रुक लगी रैं अर दिन भर घट्ट बटि ठक-ठक छेनी की आवाज आणी रैं।

रुमूक पोडयां शम्भू अर कोन्ना दादा रोटी खाणौ ऐन त माँ ते बतै—

"आज घट्ट नी चलण। खबेश बार-बार भेरंड रोकणो च। शैद मा वेन आज ऐंच ऐकी घट्टो पिस्यांन भी चटण।"

"मीन भी सुणी वेकी खर्र-खर्र, बडु जिण्ड खबेश च वू।" कोन्ना दादान भी हां मा हां मिलै।

रोटी खाणा बाद मां, मी अर शम्भू सुरुक करी ओबरा घट पोछयां। घट्ट रूकयूं छौ। माँ न केड़ों की मुट्ट जगैई अर लेन्ड ओबरा फेंकी। घट्ट रिंगण लगी। छिबडाट सुणे।

"माँ घट्ट कन मा चली ?" मीन पूछी।

"टोणू होदं यू टोणू।" माँ न चुप राणो इशारू करी मैं समझै।

"शम्भू।" माँ न बोली।

"हाँ चच्ची।"

"क्या खबेश तैं मोरी बटि आंद पिस्यान चटणो ?"

"मैं जाण मा।"

"त यन कर ते पटेला लगो, ये पटेला ह्वेकी खबेश भितिर त आलो पर भैर नी जैं सकलो। तू घट्टा अडया मोर ठीक करी लगै दी भैर बटि। आज हमुन खबेश यखी ग्वाडण।"

"ठीक च चच्ची, अब तुम जै लियां।"

थोड़ी देर मा शम्भू भी अडया मोर लगैकि ऐंच तिबारी ऐगी।

खाण-पेणा बाद, आस-पड़ोस कि चच्ची-बड़ी, दीदी सब हमारा तिबरी ऐगिन। अगेठो घुरक्ये गी अर काफी रात तलक कोन्ना दादा किस्म-किस्म क गीत रै लगाणो। भैर बरखा झुकीं।

मेरा बगलै खतंडी क पेट पोडंया शम्भू तें मीन पूछी—

"शम्भू त्वे खबेश से डैर नी लगदी ?"

"कतै ना।"

"शम्भू क्या तेरो खबेश, अपडा आंखोन दिखोयूँ च ?"

"हां, हा, कई दां, पूरा शरील पर वेका कछा लम्बा बाला होदंन, हाथ खुट्टों पर बड़ा-बड़ा नंग। लाल टार्च सी अंगार, अर सुफेद-सुफेद उकुरौं सी मुख।"

"कतरू बडू होदं वू खबेस ?"

"कुकुर जतरू, ना-ना भैंसा जतरू, अरे यार वू अपडो शरील छुटु-बड़ो कर सकदो च।"

"शम्भू, क्या तू मैं कबारी खबेश दिखाली ?"

"मी त्वे मेवा क पेडा देलू।"

"ठीक च मैं त्वे खबेश दिखोलू, अब मैं सेण दी।" अर दिन भरऽ घट्ट परो थकियूँ शम्भू सै गी। मी उठयूँ अर सीधा जैकी माँ दगड़ी पोडग्यूँ।

सुबेर बिन्सरी बरखा सग्गर थम गै छा। पौड्या डांडा जनै ह्यूँ पोडयूँ छौं, वे किट्टकिटादां जड्डा मा, शम्भू भैर फुन्ड बटि ऐई अर हाफंदू-हाफंदू वेन माँ तें खबर दिनी कि—

"हमारा घट्ट भीतिर खबेश गवाडियूँ च, भिभडाट मचै कि वू भैर आणे कोशिश मा च, शैद मा वू मोरीया रस्ता भैर नी जै सकी।"

"अच्छा, अब क्या करला ? माँ न पूछी।"

"मी इन करदूं कि लोखूं बुलैकि लांद।" शम्भून सलाह करी।

"ब्याली गुलेथ ठ्ठा दैवते पूजै छैं, तू इनक र लोखूं तें बतैं कि, भागी कालदास धामी बुलै लौं। ठीक च ? मी तब तलक गौडू बैठदों।"

"ठीक च चच्ची, मी जांद।" शम्भू उल्टा खुट्टोन भागी।

"मरळो ते खबेशऽ, पंदेरी तीस अर घट्टकी भूक कख छै।" कोन्ना दादा खबेश ते भौं-कुच्छ बबणाणू।

घड़ी एक बाद मीन, मेरी दीदीयूँन अर माँ न ऐंच बटि देखी, हमारा घट्टऽ भैर लोखूं कि भीड़ लाठा-डंडों लेकी जमा होयीं च। कालदास धामी एक काला डांग म बैठयूं च। रतन चचाजीन होशियारी से बच-बचै कि घट्टऽ किवाड़ हुगाड़िन त फक्क करी क्वी कालो सी मनखी ताकत लगै कि उकली उब भागी। लोग हल्ला मचौण लगीन। ठडंन कांपदो, कोन्ना दादान लाठू उचकै कि धै लगै—"भाल्लु छ रे, भाल्लु, छु।"

❑❑

विजय की विजय गाथा

दीपक बेंजवाल

जणदा छा उत्तराखण्ड किलै मांगी ? किलैकि पाड़ का लौगो तै मूलभूत सुविधा चैंदी छै! रोगजार चैंदू छौ! पलायन का खातिर लड़नै तैं नीति चैंदी छै! पर 16 सालौ मा हम रूदंड़ा ही लगौणा रैया, इनमा क्वे छ्वटी सी उम्मीद जगौ त सारू मिलद जै पलायन से लड़न का वास्ता उत्तराखण्ड मांगी छौ ती उम्मीद तै जगौदूं च बरसू गौ कू एक नौनयाळ 'विजय' रुद्रप्रयाग जिला मुख्यालय बटि 3 किलोमीटर दूर तूना-बौठा मोटर मार्ग पर च ' बरसू ' गौ। पलायन का कारण 17 साल पैली यू गौ जनशून्य ह्वेगी छौ। कब्बि यख 35 से भी जादा परिवार रैदा छा। पुनाड़ का सैकारू अर ये इलाका का विद्वान बामणै की थाती 'बरसू' की संपन्नता यखै तिबार अर कूड़ौ देखि साफ पता लग जांदी, जनशून्य होण का बाद भी गौ का शेष रयां एकाध कूड़ौ मा रंगत बची च, जौमा शायद द्यब्तौ का ठौ छा, अर साल मा एकाद बार कब्बि यखा रैबासी कठ्ठा ह्वेकि तौंकि साफ-सफै अर पूजा प्रतिष्ठा कर अपणा गौवासी होणे संगराद बजै देंदा छा 17 साल बटी यी पीड़ा तै सै सै कि बरसू गौ कथ्या बार र्‌वै होलू कैन द्‌येखी, पर सच छौ कि अपणा मुल्क मा बिरणू होण को भारी दु:ख सारी छौ ये बरसू गौ न पर पलायन का ये अध्यंरा मा उज्यळु लैकि गौ लोटी बरसू को एक ज्वान विजय, जन नौ तन सोच जी हाँ बिजे की बिजयगाथा सुणला त विश्वास नी होलू पर आज बरसू गौ कि चखळ-पखळ देखला त विश्वास ह्वे जालू। तीन साल बटी अपणा गौ बरसू तै ज्यूदा धन्न का खातिर गौ मा यखूली रौण वाळा विजय की या दृढ़ इच्छाशक्ति ही उम्मीद की नयी गंगा बगाणी च जनशून्य ह्वया 35 मवसौ का बरसू गौ मा द्वी दर्जन से अधिक मकान त छन पर यै पर रौण-खाण का क्वे नी, अधा से बी ज्यादा कूड़ा टूटी तै खंद्वार बणया छन, त हेर देख का अभाव मा गौ की तिबारी भी टूटणी छन, बरसू की स्वाणी बसागत वाळी 'बाखली' भी उजड़नै कगार पर, कखि धूरफै पठाल रणी च त कखि चौक मा घास जमी च, दूर-दूर तलक बाजा पुंगड़ा अपड़ी खैरी खुद बतौणा छन इन देखिक शैद ही क्वै गौ बणीक औलू, फेर भी विजय न सू सोची जै तै

जन्म : 23 जून, 1985
कृति : मांगळ, (गढ़वाली लोक परम्परा गीत) ईष्टदेव महर्षि अगस्त्य
सम्प्रति : लेखन अर संपादन
मो० : 9536006170.

हम पाड़ी दिवास्वपन मणदा छा। आखिर हम मू पाड़ वापस न औण का कत्ति बहाना भी छन अर कति मजबूरी भी छन पर विजय जन मजबूत इच्छाशक्ति नी छ।

आज से तीन साल पैली विजय न अपणा गौ तै आबाद कन्नै योजना पर काम कन्न शुरू करी, सबून नौ धरी, मखौल उड़ै बोलि कि विजय तू बौळया ह्वेगी, यखुली कनक्वै रौलू तख। पर ये गौ की थाती मा अब्बि भी पुरखौ को सत्त बच्यू छौ, विजय का नौ जन उंदकार ह्वे छौ, ठीक तन्नी जन भौत समय पैली सतजुग मा राजा सगर का दस हजार नौनौ को उद्धार कन्नौ तै तीसरी पीढ़ी मा भगीरथन जन्म लीनी छौ, यख भी कै पीढ़ी का बाद बरसू गौ तै जिलौण का वास्ता भगीरथ का रूप मा 'विजय' को जन्म ह्वे। तौन भर्‌या पूरा परिवार होण का बाद भी यकुलास जीवन स्वीकार करी, इलैकि गौ फेर से गुलजार ह्वो, इलैकि पलायन का चलदा 'गैर बसागत' होण को महादंश ध्वये जे सकू, सब कुछ सौगू नी छौ, पर तौको त्याग, समर्पण अर मीनतन सैरी नकारात्मक भावनाऔ तै पिछनै छौण दीनी। पिछला तीन साल बटी गौ मा यखुलि रैकि विजयन गौ की वीरानगी मा उम्मीदौ रंग भन्न मा कामयाबी हासिल कर दीनी।

तकरीबन 17 साल पैली विजय अर तौको परिवार रुद्रप्रयाग बजार मा बसी छौ, विजय का पिताजी यखी पोस्टआफिस मा काम करदा छा, नौकरी का खातिर गौ त छोड़ली छौ पर गौ से मोह नी छूटी। गौ की कूड़ी खैनी ही रै, सैरा बरसू गौ मा विजय और तौका परिवारे कूड़ी ही लिंटर वाळी च, बाकी सब पठलस्यूँ। गौ मा औण जाण लग्यू रै त गौ का परति भावना भी बढ़नी रै, विजय का मन मा गौ का परति प्रेम त छौ पर दु:ख भी छौ कि गौ किलै छोड़ी, ब्यौ ह्वई त जिम्मेदारी भी ऐ, जीवन की आपाधापी मा बगत कम ह्वे पर गौ की परति खुद कम नी ह्वे। दंदोळ मा पड़या विजय का मन तै गौ जाण पर संतुष्टि मिल जांदी छै, अर एक दिन आखिरकार विजयन गौ वापस जाण को निर्णय कर ही दीनी। सौंगौ नी छौ यू निर्णय पर विजय को मन पक्कू ह्वेगी छौ, गौ लौटण का बाद सबसे पैली विजयन गौ का बांजा सग्वाड़ौ, पुगड़ौ मा भुज्जी उत्पादन कन्ने सोची, चार ठुला पुगड़ौ मा अलू लगैकि यै कि शुरुआत भी करी पर पाणी की कमी से अलू की सैरी पैदावार खराब ह्वेगी, पैली विफलता से विजय निराश नी ह्वे, खुद का संसाधनौ म्येटिकी 4 किमी०

तीन साल को एक-एक दिन विजय न गौ का वास्ता अर्पित करी, हर विचार, सोच गौ का वास्ता छै, कनक्वे गौ आबाद होलू, कनक्वे लोग गौं बणौकी आला या धुन लगी रैंदी। विजय गौ तै यन बणाण चंदा न कि लोग खुशी-खुशी गौं बौणी कि ऐ जौ, फेर न क्वे मजबूरी हो अर न क्वे बहाना। गौ कौ तै गौ की खुद लगणी रै तौका बना भी प्रयास करी, साल भर मा होण वाळी गौ की पंचैती पूजै मा भावनात्मक जुड़ाव बणौण का खातिर विजयन गौ का सब्बि द्यब्तौ को एक फोटो फ्रेम तैयार करीकि गौ की समलौण रूप मा लिजाण का आग्रह करी, गौ कौ तै पसन्द भी आयी, कत्ति लोगून मदद कन की पेशकश भी करी, पर गौ से जांदी सार सी अपणो वादौ बिसरग्या। फेर भी विजयन हार नी माणी, विजय को ब्वोन च कि आज न त भौळ गौ का लोग बौणीक आला, हमरू बरसू गौं फेर से गुलजार होलू। तौका मन मा गौ का खातिर भौत योजना भी छन, सी गौ मा सरकार की 'होम स्टे' योजना की शुरुआत भी कन चांदा छा, जै को छव्टू सू प्रयास भी तौन शुरू करी, गौ की नयी पीढ़ी का जो लोग अब कब्बि कबार गौ आंदा सी तौकी आवाभगत करदा, खाणौ अर पाणी की सुविधा भी देंदा। तौ तै उम्मीद च क्वे न क्वे जरूर अपणा गौ का खातिर तौ जन वापस औलू, फेर मिली जुली कि गौ तै सजौण संवरन को प्रयास अगिन बणौला।

दूर बटी पाणी की एक नयी पैपलाईन बिछाई, अपणा हाथ-खुटा मारीक या छवटी कामचलौ व्यवस्था चालू त ह्वे पर उत्पादन का वास्ता या भी पर्याप्त नी ह्वे सकी हा इथग्या जरूर ह्वे कि अपड़ा दौर तौका बांजा पड़या बाड़ा सग्वाड़ौ मा हरी भुज्जी, मटर, अलू, गोबी, गाजर, धणिया उपजण लगी, छेमी अर तोमड़ी की छिल भी खूब फैली, यी पैली कामयाबी से बल मिली पर यो काफी नी छौ, अब्बि त और अगिने बणन छौ।

बिना पाणी को को काम ह्वे सकद छौ, या सोचण वाळी बात छै, लागत भी कम लगौ अर मुनफा भी ह्वो, फेर मुर्गी पालन का रूप मा विचार उपजी, विचार अच्छू छौ पर फेर जगा की समस्या सवाल उठौणी छै, गौ कि टूटी साळ देखिकि विचार आयी, किले न येको उपयोग करी जौ, फेर शुरू ह्वे साळ ठीक कनौ कार्य, चार पुरणी साळयौ तै रिपेयर करी, मौ-माटा से लीपी की विजय को ड्रीम प्रोजक्ट 'पाड़ी पोल्ट्री फार्म' शुरू ह्वे। शुरूआत मा 20-25 चूजा ही छा, म्येसी-म्येसी पर चूजौ की संख्या बणाई, अब मीनत रंग लैण बैठीगे, मुर्गा बड़ा ह्वया त खरीददार भी औण लग्या, पैली आस-पास का गौ का, फेर बजार का लोग भी। ये से उत्साहित ह्वेकि विजयन हाल ही मा एक पक्को सीमट कौ पाल्ट्री हाउस भी बणाई जैमा 200 से भी अधिक बायलर ऐ सकदन, जल्दी ही ये पर भी बायलर पाळणौ काम शुरू ह्वे जालू।

मुर्गियों का चारा का वास्ता बाजार औण जाण लग्यू रैदू छौ, त आवारा ग्वोरू पर ध्यान जै, गाजी पाती की या दुर्दशा देखिक विजय को मन फेर विचलित ह्वे, गौ बचौण का अपणा मिशन मा गौमाता की सेवा कन्न को बीड़ा भी उठेली। जब भी बजार जया यौ-यौ ग्वोरू भी दगड़ा लया। तौ का वास्ता भी पुरणि साळौ तै रिपेयर करीक दुरस्त करेगे, यखुलि घास कटी, म्वौळ स्वोरी, बौणी म्येळिन, पाणी पिलायी अर ये सेवा कार्य तै भी पूरा मनोयोग से कन लग्या, आज बाजार द्वी दर्जन से अधिक आवारा ग्वोरू विजय की हेर देख मा छन। ये सेवाकार्य की एक ओर विशेषता भी च कि कै भी ग्वोरू त विजय ज्यूड़ा या सागळन नी बांधदा, तौकू मणन च जब ग्वोरू तै माँ बुल्ये जांद त माँ तै बंधन मा किले रखण, बात छवटी जरूर छै पर दिल मा विजय का परति श्रद्धा का भाव जगौण तै भौत बड़ी। तीन साल को एक-एक दिन विजय न गौ का वास्ता अर्पित करी, हर विचार, सोच गौ का वास्ता छै, कनक्वे गौ आबाद होलू, कनक्वे लोग गौं बणौकी आला या धुन लगी रैंदी। विजय गौ तै यन बणाण चंदा न कि लोग खुशी-खुशी गौं बौणी कि ऐ जौ, फेर न क्वे मजबूरी हो अर न क्वे बहाना। गौ कौ तै गौ की खुद लगणी रै तौका बना भी प्रयास करी, साल भर मा होण वाळी गौ की पंचैती पूजै मा भावनात्मक जुड़ाव बणौण का खातिर विजयन गौ का सब्बि द्यब्तौ को एक फोटो फ्रेम तैयार करीकि गौ की समलौण रूप मा लिजाण का आग्रह करी, गौ कौ तै पसन्द भी आयी, कत्ति लोगून मदद कन की पेशकश भी करी, पर गौ से जांदी सार सी अपणो वादौ बिसरग्या। फेर भी विजयन हार नी माणी, विजय को ब्वोन च कि आज न त भौळ गौ का लोग बौणीक आला, हमरू बरसू गौं फेर से गुलजार होलू। तौका मन मा गौ का खातिर भौत योजना भी छन, सी गौ मा सरकार की 'होम स्टे' योजना की शुरुआत भी कन चांदा छा, जै को छब्टू सू प्रयास भी तौन शुरू करी, गौ की नयी पीढ़ी का जो लोग अब कब्बि कबार गौ आंदा सी तौकी आवाभगत करदा, खाणौ अर पाणी की सुविधा भी देंदा। तौ तै उम्मीद च क्वे न क्वे जरूर अपणा गौ का खातिर तौ जन वापस औलू, फेर मिली जुली कि गौ तै सजौण संवरन को प्रयास अगिन बणौला।

विजयन गौ मा फलोत्पादन की दिशा मा भी प्रयास करी जै वास्ता तकरीबन 400 फलदार डाळा भी लगाया, तीन साल पैली लगया तौ डाळौ पर अब मौळयार औण लगी अर उम्मीद छ कि जल्द ही यू पर फल लगण भी शुरू ह्वे जाला। ब्वन तै यी पहल छव्टी-छव्टी जरूर छन पर कै मिसाल से भी कम नी छन। सुख, वैभव अर अपणा परिवार से दूर गौं अर जन्मभूमि का खातिर जीणे तौंकी लालसा उम्मीद जगौण वाळी त छैंछ दगड़ा दगड़ी या भी सीखांदी कि मन मा संकल्प ह्वो त वीरान ह्वयां गौऊ तै भी गुलजार किये जै सकदू। विजय सेमवाल हमरा पहाड़ अर सैरा उत्तराखण्ड तै एक नज़ीर भी छन, हम सब्बि को दायित्व च कि पहाड़ का वास्ता अलख जगौण वाळा यन कर्मठ युवाओ तै प्रोत्साहन दिये जावो, सम्मानित करे जावो।

❑❑

बैजु की बामणी

राकेश मोहन कण्डारी

गोरख्याणी गढ़वाळ का इत्यास मा अत्याचार, धांधलरौई अर अव्यवस्था खुणि बदनाम छ। गोरख्याणी को नौ सूणी आज बि घर गौं फुण्डे दाना सयाणो का शरील का कांडा झझरै जांदन। गोरख्याणी गढ़वाळ का इत्यास मा एक काळू धब्बा छ। गोरख्याणी गढ़वाळ की राजकीय अव्यवस्था की कहानी छ। फरवरी 1803 मा गोरखा सेना अमर सिंह थापा अर हरिदत्त चांतरिया (नेपाल राजा को काका) का नेतृत्व मा गढ़वाळ पौंछि ठीक ये ही टैम फर गोरख्या सेना को दुसरो दल मक्कु थापा अर चन्द्रवीर कुंवर का दगड़ा कुमौ मा मौजूद छ। यो दल गढ़वाळ का दक्षिण पूरब बटै लंगूरगढ़ी ह्वे कि श्रीनगर फर आक्रमण करणो खुण ऐ। गढ़वाळ का रज्जा त अपणी निर्बल सेना का सारा आक्रमण को भरसक मुकाबला करी। गोरख्या सेना न खून खत्री कर दिनी। गोरख्योन गढ़वाळी सैनिक अर बेकसूर प्रजा थै आलू मूळा की तरौं खुखरियोंन काट दिनी। गढ़वाळ को राजा प्रद्युम्न शाह (पंवार वंश को 54वों राजा) 14 मई, 1804 का दिन खुडबुड़ा मोहल्ला देहरादून मा 12000 गढ़वाळी सिपायों का दगड़ा लड़ै मा मारे ग्याई। अब गोरख्या सरदारून लूटपाट, स्वाणी स्त्रियों को हरण करण शुरू कैर द्याई। गोरख्यो तैं देखी कि घर गौं की लौड़ी बूण भाग जांदी छै। धनवान लोग अपणो धन खडै देंदा छा। गोरख्योन प्रजा फर बड़ा अत्याचार करीन। बुड्या बुडड्यिों थैं वो पराळ बांधी कि आग लगै देंदा छा। लोग कै कै मैनो तक जंगल मा लुक्या रैनी। गोरख्या सरदार प्रजा पर इथगा कर लगांदा छा कि कर उपज से ज्यादा ह्वे जांदा छा। जो कर नि दे सकदो छौ वे थै बाकी लगान पर बेच दींदा छा।

हरद्वार मा हरकी पैड़ी का बगल मा गोरख्यों की चौकी छै। जख 3 से 30 वर्ष का गढ़वाली लाये जांदा छा अर 10 रु० से लेकी 150 रुप्या मा बेच दिये जांदा छा। इनो अनुमान लगै जांदो क गोरख्याणी का दौरान द्वी लाख गढ़वाळी दास, दासी नीलामी कैरी बिचे गेनी, अर नेपाल भेजे ग्येनी जो आज बि नेपाल मा छिन। ई सैरी लूटपाट, जुल्म अमानुसता का पैथर बि एक अबला नारी की कथा छ।

जन्म : 30 जून, 1971
शिक्षा : एम०ए० अंग्रेजी, हिन्दी, बी०एड० व पत्रकारिता स्नातक
प्रकाशन : पुनाड़ से रुद्रप्रयाग
सम्प्रति : प्रभारी प्रधानाचार्य, रा०उ० मा०वि० पालाकुराली, रुद्रप्रयाग
सम्पर्क : मो० : 8650416124.

18वीं सदी का आखिरी आखिर मा रामा अर धरणी नौ का फौजदार भयौंन अपणा रिश्तादार नित्यानंद की मौत को बदलो राजा का दिवान कृपाराम डोभाल थै मरवै दे। अर रजा थैं अपणा ईशारों पर नचाण लग ग्येनी। रजा थै कठपुतली बणै कि रामा धरणी अफी राज चलाण बैठ ग्येनी। अब राज मा आर्थिक गड़बड़, पक्षपातपूर्ण शासन, अन्यो से प्रजा बि भारी दुखी रै।

1791 मा गोरख्यों का दगड़ा एक सन्धि ह्वे जैका अनुसार गोरख्या लंगूरगढ़ी बटै वापस चली ग्येनी। सन्धि का अनुसार 12000 रु० सालाना कर नेपाल थैं दिये जालो। अब गढ़वाळ राज की स्थिति इथगा खराब ह्वेगे छै कि तीन साल बटै नेपाल थैं 12000 रु० कर नि दिये सकिन। अब स्व० दीवान कृपाराम डोभाल का रिश्तादार मौका की ताक मा बैठ्यां छा। उन कुंवर पराक्रम शाह थैं अपणा षडयन्त्र मा मिलै कि थैं फौजदार रामा थै पैनखण्डा मा मरवै दे अर धरणी थैं शितला की रेती श्रीनगर मा मरवै दिनी। बस यखी बटै श्रीनगर शासन फर बिपत्ती शुरू ह्वेगी। रामा-धरणी की मौत का बाद खण्डूड़ी परिवार की या स्त्री जै थैं बैजु की बामणी बोलदिन। इन बोल्यें जांद कि या स्त्री नेपाल राजगुरु की कन्या छै जो कि खण्डूड़ी परिवार मा बिवांई छै। अपणा पति की मौत का दुख मा रोन्दो-रोन्दो सीधा नेपाल पौंछी अर बदला लेण की बात बोली।

तब नेपाल राजगुरु ने नेपाल का राजा मा बोली कि गढ़वाल मा यू ताण्डव करवै। गोरख्याणी से तंग ऐ कि तैं गढ़वाळ का राजौन अंग्रेजों मा मदद मांगी। अंग्रेजोन तुरन्त सेना भेज दिनी अर 1815 मा गोरखा सेना परास्त ह्वेगी। सिंगोली की संधि ह्वे। सन्धि का अनुसार गढ़वाल नरेश अपणी राजधानी टिरी लीगी अर गढ़वाल का द्वी हिस्सा ह्वे ग्येनि। एक ब्रिटिश गढ़वाल अर दूसरो टिहरी गढ़वाल।

रामा धरणी

महाराजा प्रद्युम्न शाह जीन 1775 बिटि 1803 गढ़वाल की गद्दी संभाली। यों का शासन काल मा राज व्यवस्था ठीक नि छै। दरबारियों मा घमोसा-घमोसी छै। फौजदार एक दुसरा थैं सै नि सकदा छा। पराक्रम शाह माराज छाया, इन बुले जांद कि सुदर्शन शाह को जलम बि 1784 मा राजा का कुमौं दौरा का दौरान ह्वे छौ। ठीक वेई टैम पर नेपाल का पाड़ी इलाका मा एक ईनी राज शक्ति को जलम ह्वेगी छौ जैन गढ़वाळ अर कुमौं राज कि चूल हिलै दिनी। 1790 मा गोरख्या अगनै बढ़िन अर वेई साल सैरा कुमौं फर गोरख्यों को राज ह्वेगे। यीं जीत से गोरख्यों का हौसला हौर बढ़ गेनी अर 1791 मा गोरख्योंन गढ़वाळ पर आक्रमण कैर द्याई पर लंगूरगढ़ी मा असवाल ठाकुरून अर निरवाली रौतुन गोरख्यों थै अड्डये दिनी अर कड़ी टक्कर दिनी।

एक साल की लम्बी लड़ै का बावजूद गोरख्या लंगूर गढ़ी नि कब्जे सकिन। ठीक में ही टैम फर नेपाल पर चीन को आक्रमण ह्वेगी। ये कारण गोरख्या सेना पिछनै हट गैई पर कुछ टैम बाद गोरख्या फेर लौट गेनी। ईबारी दां गढ़वाळ नरेशन गोरख्यों का दगड़ा सन्धि को प्रस्ताव रखी। 12000 रुप्या सालाना कर पर संधि ह्वे। ये कारण से श्रीनगर दरबार को शासन तंत्र ढिल्लु पड़ि गे। नित्यानंद खण्डूड़ी का पास सैरा राज की जिमदारी छै पर वूं पर कुमौं का हर्षदेव जोशी का दगड़ा सांठ-गांठ को आरोप लगी अर दरबार न खण्डूड़ी का आंखा गढ़वै देनी। यो काम वूंका वंशज रामा धरणी तैं अच्छु नि लगी अर उन दीवान कृपाराम डोभाल का विरुद्ध षडयन्त्र कैर दे। अर अपड़ा दगड़ी देहरादून का फौजदार घमण्ड सिंह थै मिलै दे। देहरादून का फौजदार घमण्ड सिंह न कृपाराम डोभाल को सिर कलम करवै दिनी। अर रामा-धरणी न प्रशासन पर अपड़ो शिंकजा कसणु शुरू कैर दे। अर असरदार जगों पर अपणा आदिम बैठाण शुरू कैर दे। अर दरबार मा खण्डूड़ी बन्धुओं की तूती बोलण लगी। दरबार को सैर्‌या राजपाट अब खण्डूड़ि्यों का हाथ मा ऐगी। खण्डूड़ी बन्धु इथगा तागतवर ह्वेगी छा कि राजा बि उं से नाराज चलणा छा पर बेबश छा।

बाद मा दरबार का वूंका विरोधी सब एक ह्वेगेनी अर उं फर यो आरोप लगी कि उंल श्रीनगर दरबार को सोना को सिंहासन नेपाल पौछै दिनी। राजान दण्ड स्वरूप रामा धरणी थैं प्राणदण्ड देदे। अर दगड़ा मा बैजु खण्डूड़ी बि मोर ग्याई। बैजु की पत्नी नेपाल राजगुरु की कन्या छै। बैजु की रामणी रोन्दु-रोन्दु नेपाल दरबार मा ग्याई अर वीन अपणा पति की मौत को बदला लेण की गुहार लगै। ई घटना का बदला मा गोरख्योंन गढ़वाळ मा गोरख्याणी थैं अजांम द्याई।

उद्‌मातो खण्डूड़ी काट्‌यो सिंहासन नेपाल पौंछायो
आफु खान्दा बासमती, राजौं देन्दा कोदो
(खण्डूड़ि्यों का बारा मा गढ़वाळ मा या औखाण परसिद्ध ह्वे)

❑❑

सोलर ड्राइंग नाज सुखौणों को महत्वपूर्ण जरिया

डॉ० ईशान पुरोहित

बी स साल पैला फुंड फरायुं खाणों कु पैकेट मिली जेका भित्तर जु अल्लू सुखै थे चिप्स बणे थे छा धैर्यानं वु खराब नि होयां छा। जब पत्रकारोंन या बात चिप्स बणोंण वालि वीं कम्पनी थे पूछी त वोन बोलि कि हमुन चिप्स बणोंण से पैलि वैकि सैरी नमी सोखिली छै जै से वु कब्बि सड़ी नि सकुद अर अलास्का कु तापमान भौत कम छ वैकी वजै से वु खराब नि ह्वे। यैकु मतलब यु ह्वे कि कै भी कृषि पदार्थ थे लंबा टैम तक संरक्षित राखणों थे हमतें सिर्फ कुछ भौतिक अवस्थाओं थे नियंत्रित करण की आवश्यकता छ।

जब मैं स्कुल्या छौ त गर्मी छुट्ट्यों मा अपणा ममकोट या बुडकोट जान्दु छौ जु ऊँचा डांडा वाळा इलाकों मा बस्यां गौं छन। तब मि देखुदू छौ कि मेरी बुड्डी का संतरा बचै थैं रौंदा छा धर्या। ह्यूंद का मैना पाक्यां संतरा जेठ तक क्वे कनके बचे सकुद यु अपणा आपमा सोचण वाळि बात छै। जब बुड्डी थे पुछुदू छौ कि यि संतरा छै मैना तक कनके बचायां त तब समझ मा औन्दु छौ कि तकनीक अर उपाय सिर्फ मशीन से नि बणदा बल्कि प्रकृतिन इंसान थे सोचणे अर वै पर अमल कने शक्ति दीनी च। ह्यूंद जब संतरा पाकि जांदा त लोग भली भली दाणी अलग छाण देंदा। वों थे हल्का सुखैते सटयूं का या झंगोरा का बीच मां या कै बी नाज दगड़ी धौर देंदा। नाज मा नमी भित्तर नि जै सकदी अर फलों थे जरूरी मात्रा की हवा बी मिलणी रौंदी। डांडों बिटिन रूड़ी मा जब बि क्वे समौण औंदि त वैमा लुकारा पाछा संतरा रौंदा धेरयाँ। अगर के भग्यान थे यि संतरा नसीब होयां हो त वी बतै सकदो कि किथगा मिठास रौंदी छै यों मा जुकि ह्यूंद मा बी नि रौन्दी छै। आज बी हमारा घरों मा लोग बुतणों थे आदु, पिंडालु, हल्दू जन कृषि उत्पाद लोग माटा मा खड्ये थे संरक्षित रौखदा।

उत्तराखंड का पहाड़ी छेत्र सैकड़ों प्रकार की जड़ी बूट्यों, औषधीय पादपों, विशिष्ठ कृषि उत्पादों वास्ता प्रसिद्द च लेकिन अब्बि तक बि पहाड़ी क्षेत्र का लोगों यों उत्पादों की खेति व्यावसायिक रूप मा नि अपनाई। भौत लोगोंन कोशिश बि करि लेकिन पर्याप्त जानकारी, तकनीक, स्थापित बाजार अर खरीददारों की पूरि जानकारी का नि होण का वजह से सफल नि ह्वे सक्यां। भौतिकी विभाग, गढ़वाल

जन्म : 5 सितम्बर, 1979
शिक्षा : एम०एस०सी० भौतिकी, पीएच-डी० सौर ऊर्जा
रुचि : स्वतन्त्र लेखन, राष्ट्रीय पत्रिकाओं में कई कहानियां और लेख प्रकाशित
उपलब्धि : देश के प्रतिष्ठित संस्थानों में अतिथि प्रवक्ता, उच्च शैक्षणिक संस्थानों में 50 से अधिक व्याख्यान, 150 से अधिक शोधपत्र प्रकाशित
सम्प्रति : विश्व बैंक में ऊर्जा विशेषज्ञ
सम्पर्क : सी-93, फेस-1, डी०डी०ए० फ्लेट, कटवारिया सराय, दिल्ली-16
मो० : 9899113184

विश्वविद्यालय मा प्रोफेसर जी0सी0 जोशी अर डॉ गुंजन पुरोहित दगड़ मैथें उत्तराखंड का उच्च पर्वतीय छेत्रों मा पाए जाण वाला कत्ति औषधीय उत्पादों (आंवला, हल्दी, बैड़ा, हैड़ा, मिर्च, बासिंग, निम्बू आदि) की सोलर ड्राइंग पर काम करण को मौका मिलि छौ जेका भौत अच्छा परिणाम आयां छा।

हमारा देश मा किसानों की आत्महत्या एक भौत बड़ू कलंक च जु आज तक बी बदस्तूर जारि च। हम लोग अगर किसानों की समस्या का मूल मा जौला त समझ मा औलु कि सिर्फ बैंकों बिटिन लीन्यू कर्ज वोंकि आत्महत्या की वजह नी च। अतिरिक्त उत्पादन हमारा देश की भौत बड़ी समस्या च। सोचण वालि बात चा कि बारामासी भुज्जी का दाम भी हमारा देश मा हर साल पांच रुपया किलु से लेकर सौ रुप्या किलु तक बदलणा रौंदा। जब उत्पादन ज्यादा होंदु त कीमत कम हवे जान्दि अर कत्ति बार त किसानों थे वथ्या कीमत बी नि मिल्दी जथ्या वु बीज बूतण अर फसल उगौण मा लगौंदा। फसल से स्टोर कन्न की तकनीक अर सुविधा हमारा देश मा भौत कम छन जैकि वजह से मजबूरी माँ किसानों थे अपणी फसल नुक्सान मा बेचण पड़दि या फिर कत्ति बार बर्बाद बी कन्न पड़दि। मैंन देश का कई राज्यों मा किसान अपणी फसल सड़क पर फरौणा देख्यां छन। यु सिलसिला अगर साल दर साल चलणु रौंद त किसान आत्महत्या तक करि देंदा। देश का कई राज्यों मा किसानों की आत्महत्या का पिछना अगर आप कारण देखुँ त तकनीकों कु नि होण बी एक भौत बड़ू कारण दिख्येलु। अगर किसानों मुं अपणा कृषि उत्पादों थे सही तरीका से सुखोंण अर संरक्षित कने तकनीक उपलब्ध ह्वो त बैठे मैंगा बीज खरीदी थे सस्ती फसल बेचणे जौरत नी पड़लि। कृषि छेत्र से जुड़यां हमरा किसान भै बंद अगर यों छोटी छोटि बातों पर ध्यान दयों त तकनीकों कु फैदा उठै थे वु अपणी आर्थिक स्थिति भौत हद तक सुधारि सकदा। अतिरिक्त उत्पादन थे नियमित अर संरक्षित करणा का वास्ता कोल्ड स्टोरेज की जरूरत होंदी जैकु हमारा देश का ष छेत्र मा भौत बड़ू अभाव च। किसानों की ज्यादा फसल यांका बाना बर्बाद होन्दी किलै कि वोंमू समुचित तकनीक नि छिन अर जु तकनीक बाजार मा छिन बी वु खरीदण वोंका बसे नि रौन्दि। कत्ति बार त हमारा देश की सरकारि मंड्यो मा अनाज लाखों टन सड़ी जान्दु जेथे सरकार दारु बणोंण वाली कम्पन्यों थे नीलाम करदी जैसे किसानों अर देश की आर्थिकी कु भारी नुक्सान होंदु। अब आप लोग सोचा कि अगर हमारा राज्य का पहाड़ी छेत्रों मा अतिरिक्त पैदावार थे लोग सूखै थे बाजार मा उपलब्ध करौंण शुरू करि दयों त हमारि निर्भरता भैर का बाजारों पर कम ह्वे सकदि।

घाम से कृषि उत्पादों थे सुखोंण वालि तकनीक थैं हम सोलर ड्रायर (सौर शुष्क) बोल्दा जु मुख्यत: द्वी प्रकार का होन्दा। पैला सोलर ड्रायर थे डारेक्ट टैपो ड्रायर बोल्दा जैमा एक चौंबर रौन्दु बणायुँ जैकि छत या ऐंच वाळु हिस्सा एक सीसा से ढ़क्यूं रौन्दु। भित्तर कु पृष्ठ लाखड़ा से लेकर अल्मुनियम कु बी ह्वे सकुद जु ई बात पर निर्भर करदु कि कै प्रकार का उत्पाद थे सुखोंण का वास्ता हम ड्रायर बनोणा छन। सोलर ड्रायर मा बी हम घाम थैं तापीय ऊर्जा मा परिवर्तित करदा। किलै कि कृषि उत्पादों थैं सुखोंण का वास्ता ज्यादा तापमान नि चौंद वांका बाना ड्रायर बणोंण का वास्ता भौत साधारण टैप कु सामान चौन्द। यैकि कीमत बी ज्यादा नि होन्दी अर सरकार की तरफ से न्यूनतम सब्सिडी बी मिल्दी। कई प्रकार का अर बड़ी बड़ी क्षमताओं का सोलर ड्रायर बाजार मा उपलब्ध छिन। लकड़ी कु काम करण वालु क्वे आदिम सोलर ड्रायर थैं घौर मू बी बणे सकद। सोलर ड्रायर मा कृषि उत्पादों थैं सुखोंण की प्रक्रिया थोड़ा सा अलग होन्दि किलै कि कृषि उत्पाद थैं सीधा घाम का संपर्क माँ नि रौखदा। सूर्य से पृथ्वी पर औण वाला घाम (विकिरण ऊर्जा) मा कुछ विकिरण कृषि उत्पादों थे नुकसानदायक बी होंदु जैतैं हम पराबैंगनी विकिरण बी बोल्दा। यु विकिरण ष उत्पादों का पोषक तत्वों थे फूकि बी सकुद जैसे वैकि गुणवत्ता खराब ह्वे जान्दि। कृषि उत्पादों थैं सीधा घाम मा सुखोंण कु यु एक भारी नुक्सान बी होंद। ये कारण चा कि फूलों, चायपत्ती, इलायची, कॉफी, काजु जन उत्पाद जौंकि कीमत भौत ज्यादा होन्दी थे सीधा घाम मा नि सुखौन्दा जबकि यौं थैं सुखोंण का वास्ता एक खास वातावरण मा भौत कम मात्रा कु तापमान चौन्द।

हमारा राज्य का पहाड़ी छेत्रों मा लद्दाख स्पीति जनु छेत्रों का मुकाबला ज्यादा हरियाली, जनसंख्या अर सुविधायें मौजूद छिन जौंकू उपयोग हम अपणि आर्थिकी मजबूत बणोंण का वास्ता करि सकदा। लद्दाख मा अमूमन हर गों मा वखा निवासियोंन घाम कु सबसे ज्यादा उपयोग करयूँ च चाहे वो बिजली ह्वो, खाणों पकौंण ह्वो या फिर नाज संरक्षित कन्न ह्वो। समुद्रतटीय क्षेत्रों मा रौण वाला लोग मच्छा सुखोंण अर लंबा समय तक संरक्षित रौखण का वास्ता सौर ऊर्जा कु उपयोग करदा। हमारा राज्य मा बी जलवायु का अनुरूप कृषि अर ष उत्पादों का लंबा टैम तक संरक्षण मा सौर ऊर्जा तकनीक भौत कारगर हवे सकदी। ❑❑

उत्तराखण्डी चुनौ को मण्डाण

सुरेन्द्र भट्ट

लयवा त साब जन्नि साल 2017 लगि वन्नि उत्तराखण्ड मा तिरीस दिन तक ल्हगण वाळा चुनौ का मण्डाण को भोंपु बजिगि। वनु त गढ़वाळ मा नौराता मण्डाण, अठ्वाड़, डाळि, पण्डवार्त, लांक, जना बानि बानि का खौळा मेळा ब्वाल होंदि रंदा था जो जादा दिनु तक नि चलदा था, पर लोकतन्त्र का चुनौ को यो मण्डाण पूरा मैना दिन तक रलु जै मा कै बानि का खबेश नाचला। बिधान सभा नौं का मण्डुला भितर क्वी सत्तरेक पश्वा थरपेला। जूंदाळ पिठैं तैयार छ। द्यू धुपाणु रख्यूं छ। कत्यूं पर पश्वा दिस्टा देण बैठिगिन। चुनौ आयोग ढोल कालिदास बणी क तैं घुण्ड्या रांसु लगाणू छ, नेतौं तैं चुनौ लड़णौ तैं पंचान्न लग्यूं छ, वैकि बार्ता मिसाईं छ—

'हे नेतौं जागता ह्वे जावा,
टैम ऐगि सुनिन्दा नि रा वा।
झट पट टिगटु तैं ऐ जावा।'

घिणताबुतणि घिणताबुतणि घिणताबुतणि ता मण्डाण लग्यूं छ। बीच-बीच मा नेतौं तै चुनौ आयोग समझौण्यूं बि छ कि खबरदार मेरा मैत्यौं चुनौ का मण्डाण मा यथगा सि जादा खर्च नि करि सकदा, बिना पुछ्यां भौं कैका कुर्डौं पर अपणा कागज, झण्डा डण्डा नि टांग्यन, सुदि भौं कै तैं भौं कुछ नि बोलि सकदा। तुम तैं हद-हद केरि छन जु औगा बौगा जैल्या त तुम्हारि भल्यार नि छ होण्या!' बानि बानि का नेता मण्डाण मा नाचण्यां छन। नेता डुकरताळि मान्यां छन, घोसण्या पतरू को जुद्ध जुड़्यूं छ। यथगा म मण्डाण को बाजु बदलि जांदु, हरदा कु बाजु मिसेगि—

'हे हरदा, हे हरदा,
जु अफ्वी म नि लड़दा,
हे हरदा।
यखुलि नि पड़दा
हे हरदा।
जनता सि डरदा,

जन्म : 2 दिसम्बर, 1954
प्रकाशन : लुप्त होती हमारी संस्कृतिक विरासत
संतमंगळ्या (उपन्यास)
सम्प्रति : स्वतंत्र लेखन
सम्पर्क : मकान नं० 41, लेन-15
आदर्शनगर जौलीग्रांट, देहरादून
मो० : 9917625888

हे हरदा, हे हरदा।
नन्दन का बिज्जु पर,
हे हरदा।
आरोप नी जड़दा,
हे हरदा।
अपणा खास खास दगड़्या,
हे हरदा।
फण्डु नि रड़्दा, हे
हरदा, हे हरदा!!

घिण्त, घिण्ता तु घिण्त घिण्ता-घिण्त घिण्ता तु घिण्त घिण्ता घम्माचूर्ण कु मण्डाण लग्यूं छ। पीडीएफ का पश्वा हरदा का गल़ा भेंटणा छन कि दिदा आतूर नि होण, हम छौं तेरा गैल, तु डार न मैति। हम तेरि दगड़ि था, अज्यूं बि छौं अर भोळ बि रौला। पर दिदा हम तैं कुर्सि कि सैल करौण पड़लि, दिदा। तेरू क्वी कुछ नि बिगाड़ि सकदु।

चुनौ मा कांग्रेस का पश्वा नाचला, बीजेपी का पश्वा बि छन बमकाणा, क्वी हाथि तैं छ घस्यौण्यू त क्वी सैकिल छ टमट्यौण्यू। मण्डुला मा क्वी फूलु (कमल) ल्हीक जाण क तैयार छ त क्वी सैकिल सप्पा करीक सल्यौण्यूं छ। क्वी हाथ पंजा जोड़ीक खड़ु छ त क्वी छ बोन्यूं कि मैं हाथि (ब०स०पा०) मा औलु। कत्यूं कि कुर्सि (उ०क्रां०द०) टमट्यायीं छ। कैका कटार, दाथड़ा (वाम दल) पळ्यायां छन। सबि पश्वा लग्द बग्द करीक मण्डुला का भितर जाण क कौंपणा छन, वूं पर चुनौ कु कौंपारू छुट्यूं छ। सफेद-सफेद झगुंलौं पैरीक नाच ल्हगण वाळु छ। पश्वा घोसणा पत्रूं बांचि-बांचि का बाकण्या छन कि मैं जितैल्या त मैं यनु कल्लु, तनु कल्लु, पर जूंदाळ (वोट) मैं तिरपां डाल्यन लो, मेरा मैत्यौं!

ऐंसु 2017 का चुनौ मा त बड़ा मण्डुला का बड़ा रौळ, मूडि दिदा (मोदि दिदा) को मूड बि यनु छ कि देखा सै बिना रुप्यौं को कनु नाचदन अब यि पश्वा अर कथगा ठगेंदन अब लोग बाग। भौत कठण छ अब चुनौ आयोग का गुल्ल पिल्ल सौणा कि यनु बि न अर वनु बि न। अब क्वी पश्वा उचाणा नि धरि सकदु कि जु मैं तूस ह्वेगि त तुम्हारि मन इच्छा पूरि करलु। चुनौ आयोग कि केरि बांधीं छन, बानि-बानि कि बाधा खड़ि करीं छन कि खबरदार जो पश्वा औगा बौगा जालु, वैकि खैर नि छ। खैर सब ठीकै छ, पर भैरन जो नेता जथगा उजल़ा झुनका पैरदु दिखेगि उ मण्डुला (सरकार) पेट जैक तैं वथिगि मैलाण्य करतब करदु बि दिखेगि। विधानसभा नौं का ए मण्डुला भितर तेरू-मेरू, बामण-ठाकुर, देशि-पाड़ि, कुमैंयां-गढ़वाळि जना रोगुन हमारू यु लोकतंत्र दुख्यारू बणैलि। हमारू यु लोकतंत्र ल्यम्दु झ्यमदु नि चैंदु बल्कि करकरू-मरमरू अर टगटगु चैंदु जांसि कि वोट देण का बाद लोग खौल्यौण का बजै खुश रयां चैंदान।

पिछलि दां साल 2012 मा बि उत्तराखण्ड मा चुनौ को मण्डाण ल्हगि थौ, पर तबरि कुछ यना पश्वा मण्डुला पेट थरपेण्यन जु पैलि पैलि त ठीक रैन पर जौंन बाद मा मण्डलु लस्ट पस्ट करि दिनि, कुचील बणै दिनि। चुनौ का टैम पर नाचि त यूं पर कुछ हौर थौ, पांच सालौ बाळकंट जै का नौ को थौ वीं बाधा पर यि नि रै सक्या, अर मण्डुला पेट बाद म यूं पर हैको देबता ऐ पड़ि। यूं तैं खूब अजमैलि अब धाम्यूं (जनता) न, अब यना पश्वा (नेता) अपणा छैल मगि बि चलि जाला तब्बि मण्डुला (विधान सभा) कि तिरप देखि बि नि सकदा, जाण तै रै दूर। वख जै त यि अपणा हाथ (कांग्रेसी पश्वा का रूप मा) खुटौ न था पर वख ल्हग्यन फूल भजण, मेटण। भोळ ह्वै सकदु कि

यि हाथि कि सवारि करि दयौन य सैकिल मा कखि हैकि धार भागि जौन! को जाणदु! यूं पर त क्वी बि देबता नाचि सकदु, क्वी भरोसु नि छ यनौं को! यना पश्वा 15 जनवरी बिटि कौंपण बैठि जाला, बाकला बि, नाचला बि अर 15 फरबरि का दिन अफ्वी घरे जाला, जब यूं तैं क्वी धुपाणु नि मिल्लु। मण्डुला पेट अब लस्ट पस्ट को खेल ऐथर नि चलि सकदु।

पांच साल पैलि ह्वे बि कुछ यनु थौ कि न त हाथ निकळि मजबूत अर न फूल खिलि सकि छटगैक। जबी बड़ा-बड़ा नचाड़ हि लटगिगेन तब औरू कि क्य मजाल कि सरकार बणौण कि सोचदा! सौतर नचाडु मा मण्डुला पेट यकि बानि का 28 पौंछिन अर हैकि बानि का 32। मण्डलु कैका बोन्न पर चलदु यां तैं 36 पश्वा यक्कि बानि का जरूरि था चैण्यां पर तख कुछ यना फरिस्ता बि था पौंछ्यां जु मण्डाण मा अपणा दम पर नाचि कुदि था, तौन बिजय बहुगुणा तैं, जो चुनौ का ये मण्डाण मा न त नाचि थौ, न वै पर कुछ कौंपि थौ अर कैन यनु नि जाणि थौ कि ये पर औण ठुलु देबता! तौं फरिस्तौं का दम पर बहुगुणा तैं थरपेगि ठुला देबता का रूप मा। जौं पश्वौं न बिजय बहुगुणा तैं थरपि उ कुछ दमदार टैप का फरिस्ता था यां तैं हि त यूं तैं पी०डी०एफ० मतलब कि 'पैदैसि दमदार फरिस्ता' बोलेगि। पर ये बहुगुणा नौं का ठुला देबता सि कुछ पश्वा खिमसाण ल्हग्यन। वै तैं ठुल्ला देबता का खादरा बिटि भैर छटगौण कि ताण मान्न ल्हगिन। कुछ यनि कळां रचेगि कि ठुलु देबता बिजय बहुगुणा लठिगि पड़ि अर हैक्का छली बली नारैण हरदा (हरीस रौत) नौं का पश्वा पर ठुल्ला देबता न दिस्टा दी दिनि। पी०डी०एफ० नौं का फरिस्तौं न फिर नया पश्वा तैं दम दिनि, वै कु पूच पकड़ि अर मण्डलु वै तैं समोकि दिनि। बस फिर क्य हेाण थौ ठुल्ला देबता आपसै मा ठोकर्याण बैठिग्यन। **देबतौं कि लड़ै मा मण्डुला भितर बरसु बरसु तक खतमण्डाणि रै मचीं, खुर्दम खुर्दा का सिवै हौर कुछ नि ह्वे! कबि ठुल्ला देबतौं का बीच यनि भचगताळि बि ह्वेन कि जां कि चोट थैड़ दिल्लि का मण्डुला का रौळ तकन सुणि अर बीच बचौ करि**। यना करि बोली का, भौत-भौत मुस्किल सि यूं पश्वौं कि पांच साल कि बाधा पूरि होण वाळि छ। अर अब फीर फौंर्यां छन अगल्या पांच सालै कि बाधा मा बंधण का, मण्डुला भितर बैठण को फिर बाजु ल्हगि। भंकोरू बजिगि, जौं-जौं पर राजनीति नौं कि खौस छ व उबडण ल्हगि अर ये थौल़ मा बौंखल़ेण कि जौं तैं रौंस ल्हगदि वूं का बौंल़ा बटोल़्यां छन, सफेद रंग का झगुला घाम मा सुखौण्यां छन जनु बोल्यौ यूं झगुलौं बिगर नि छन लोग भकलौण म औण्या!

ऐंसु 2017 का चुनौ मा त बड़ा मण्डुला का बड़ा रौळ, मूडि दिदा (मोदि दिदा) को मूड बि यनु छ कि देखा सै बिना रुप्यौं को कनु नाचदन अब यि पश्वा अर कथगा ठगेंदन अब लोग बाग। भौत कठण छ अब चुनौ आयोग का गुल्ल पिल्ल सौणा कि यनु बि न अर वनु बि न। अब क्वी पश्वा उचाणा नि धरि सकदु कि जु मैं तूस ह्वेगि त तुम्हारि मन इच्छा पूरि करलु। चुनौ आयोग कि केरि बांधीं छन, बानि-बानि कि बाधा खड़ि करीं छन कि खबरदार जो पश्वा औगा बौगा जालु, वैकि खैर नि छ।

खैर सब ठीकै छ, पर भैरन जो नेता जथगा उजल़ा झुनका पैरदु दिखेगि उ मण्डुला (सरकार) पेट जैक तैं वथिगि मैलाण्य करतब करदु बि दिखेगि। विधानसभा नौं का ए मण्डुला भितर तेरू-मेरू, बामण-ठाकुर, देशि-पाड़ि, कुमैंयां-गढ़वाळि जना रोगुन हमारू यु लोकतंत्र दुख्यारू बणैलि। हमारू यु लोकतंत्र ल्यम्दु झ्यमदु नि चैंदु बल्कि करकरू-मरमरू अर टगटगु चैंदु जांसि कि वोट देण का बाद लोग खौल्यौण का बजै खुश रयां चैंदान। हम सब्यूं तैं चेति बरती क तैं चैंदन अपणा अपणा पश्वा थरप्यां ये मण्डुला भितर।

❑❑

बोलचाल से फल्दि-फुल्दि च भाषा!

वीरेन्द्र पंवार

जन्म : 13 सितम्बर, 1962
कृत्तियां : इनमा कनक्वे आण बसन्त, बीं, छ्वीं-बथ, गीत गौं का, कथगा खौरि हौर (अनुवाद)
सम्पादन : फोल्डर धाद परसुण्डाखाल-1994, 1995, 1998 फार्मा-मैग (फार्मेसी)-2011, एलिक्जिर (फार्मेसी)-2012 पत्र-पत्रिकाओं मा लेखन अर सम्पादन
सम्मान : स्व० दयालसिंह असवाल स्मृति सम्मान-2014 (अ०भा० उत्तराखण्ड महासभा)

ये दौर मा जैं तरौं से गौं-गौळौं तक गढ़वाळि भाषा का बोलदारा कम होन्दा जाणां छन, इना हाल मा गढ़वाळि समाज थैं लगणूं छ कि अब गढ़वाळि भाषा को क्या होलु अर औण वळा कुछ बर्सु बाद गढ़वाळि भाषा बोलचाल मा भि रालि कि ना! किलैकि क्वी भि भाषा बोलचाल मा रौण से ही फल्दि-फुल्दि। कुछ साल पैलि साहित्य अकादमि का एक सर्वेन बताइ कि उत्तराखण्ड मा गढ़वाळि भाषा का बोलदारा अबारि 25 लाख से जादा छन।

सन् 2011 कि जनगणना रिपोर्ट औण से पता चल सकदु कि उत्तराखण्ड अर सैरा देक्क मा कतगा लोग छन जु गढ़वाळि भाषा बोलदन। उम्मीद छ कि ईं रिपोर्ट मा गढ़वाळि भाषा बोलदारों कि संख्या मा काफि बढ़ोत्तरी दिखेलि। याँकु कारण यो च अर या आस इलै बन्धीं छ किलैकि सन् 2011 कि जनगणना होण से पैलि भाषा-प्रेम्यूंन गढ़वाळि बोलदरों से संचार का कै ना कै जरिया से, चाहे उ अखबार होन, या प्रचार-प्रसार का हौरि माध्यमु से लगातार अपील करि कि उ जनगणना मा मातरिभाषा का कॉलम् मा अपणि भाषा गढ़वाळि लिखाउन। सन 1991 कि जनगणना का हिसाब से पूरा देश मा जौं लोखुन गढ़वाळि तैं अपणि मातरिभाषा लिखाइ, उ तकरीब 19 लाख छा।

उन क्वी कुछ भी बोलु पर गढ़वाळि भाषा प्रेम्यूँ थैं मोटा तौर पर लगणूँ छैं छ कि पिछल्या बीस-तीसेक बर्स मा गढ़वाळि भाषा का बोलदारा बढ़ि छन। इ बोलदारा हौर बी जादा ह्वे सकदन, ईं बात मा क्वी शक नी। रिपोर्ट अपणि जगा च, पर गढ़वाळि भाषा बोलदारा अर भाषा-प्रेमी रोज देखणां अर मैसूस कन्ना छन कि नई पीढ़ि मा गढ़वाळि भाषा बोन्न-बच्याण वळा जरा-जरा कै कम होणा छन, व्यावहारिक रूप से औण वळा समै का वास्ता भाषा-प्रेम्यूं कि चिन्ता ईं तरप बटी बढणीं छ। ईं हालत मा भाषा को क्या होलु या देखण वळि बात रैलि।

अबारी ज्वान छ्वालि को गढ़वाळि भाषा से लगाव बस इतगै दिखेन्दु कि या पीढ़ि गढ़वाळि का गित्तु अर संगीत थैं थ्वड़ा भौत पसन्द कन्नी छ अर ये वजै से भाषा कि तर्प थ्वड़ा भौत वूँको सोर जाणूं छ। निथर भौत सा लोखु थैं ईं तर्प बटी भी चुकापट्ट होन्द दिखेणीं छ। कतगा बि बकळा कळेजा वळा होला पर ईं तर्प का दिखेन्दा हालात अब भाषा–प्रेम्यूँ कि फिकर बढ़ौन्दि नजर औणीं छ। क्वी भि भाषा नईं पौंळ का जरिया ही ऐथर बढ़दि, पर गढ़वाळि कि नई पौंळ जैं तरौं से भाषा बोन्नु–बच्याणु कम कन्नी छ, वांसे भोळ गवाळि अर गढ़वाळि भाषा कि हालत क्या होलि, भगवान जाणु! किलैकि भाषा त इस्तमाल कि चीज छ, भाषा तैं वीं भाषा का बोलदरों कि जुबान मा जादा से जादा रैण चैन्द। जुबान मा रैण से ही भाषा ऐथर सरकदि। लिखण से भाषा का स्वरूप थैं ज्यूँन्दा रखणैं कोशिश ह्वे सकदन पर भाषा बढ़दि अर फलदि–फुल्दि बोलचाल से छ। अगर भाषा बोलदारों कि जुबान मा नि रैलि त इतगा त तै च कि एक दिन वा बुस्ये जालि।

मेरा भौत सारा दगड़्या लिख्वार ईं बात तैं मण्ला कि गढ़वाळि भाषान् पिछल्या तीनेक दशक का दौरान जतगा तरक्की करि, गढ़वाळि भाषा कि इतगा तरक्की कबि भी कै दौर मा नि । आज प्रदेश स्तर पर गढ़वाळि थैं पाठ्यक्रम मा शामिल कन्नै बात अर कोशिश होणीं छ। राष्ट्रीय स्तर पर भाषा तैं संविधान कि आठवीं अनुसूचि मा शामिल कन्नै बात होणी छ–या गढ़वाळि भाषा कि सबसे बड़ि तरक्कि छ। ये दौर मा गढ़वाळि भाषा का वास्ता चौदिशु, चौछोड़ि बटि आन्दोलन जना काम नि होन्दा, त भाषा केवल किताबु का भित्र ग्वड़ेकि रै जान्दि। बोन्नौ मतलब यो छ, कि अगर गढ़वाळि भाषा तैं बचाण त सबसे पैलि गढ़वाळि बोलदरौंकि जुबान से भाषा को इस्तताल होणु जरूरि छ, भाषा इस्तमाल कि चीज च, भाषा बोले जाणि जरूरि छ। इखमु जब हम भाषा तैं बचाणै बात करदां त, भौत सारा लोगु का मन मा इना सवाल बी औन्दन कि क्या गढ़वाळि भाषा खतरा मा छ या मोन्नी छ, जु यांतैं बचाणै बात होणी छन। सच्चै या छ कि कै बि भाषा तैं जब क्वी इस्तमाल हि नि करलु त भाषा अफ्वी चलन से भैर ह्वे जालि। इखमु यो छ भाषा तैं बचाणौ मतलब।

हर्बि–हर्बि अपणि भाषा मा बोन्नु–बच्याणु छोड़दा जाणा छन। खास करिक गढ़वाळि कि नई पीढ़ि का लोग। एक बात साफ लगणीं छ कि गढ़वाळि भा ा बोलदारा अलग–अलग कारणु से अपणि नई पीढ़ि तैं अपणि भाषा बोन्नौ मौका नि देणा छन। लोग नई पीढ़ि मा अपणि भाषा का संस्कार नि भोर सकणां छन।

अपणा ओर–पोर देखां त मैसूस होन्दु कि भाषा का निब्त अस्सी का दशक वळि पीढ़ि चेताळि त रै छ, पर नई पीढ़ि तक अपणि भाषा पौंछाण मा लगातार बर्तमान पीढ़ि से क्वी न क्वी चूक होणी रै ज्वा आज बि जन्यो–तनि छ। गढ़वाळि कि नईं पीढ़ि का जादातर नौन्याळ आपतैं इन बोलदा मिल जाला कि 'मैं गढ़वाळि को बींग तो जाता हूँ, पर बच्या नहीं पाता हूँ।' आखिर इनि नौबत किलै औणी छ! सोचण वळि बात या छ कि मौजूदा पीढ़िन अपणि भाषा तैं अपणा नौन्याळु मूं सौंपण मा संकोच किलै करि अर अज्यूं बि गढ़वाळि बोलदरौं का भित्र भाषा का निब्त इनि क्या डौर छ बैठ्यीं! अबारी इना कतगै सवाल उठ सकदन!

पर सवाल यु उठदु कि आखिर इन किलै होणू च? आंकड़ा बताणां कि—गढ़वाळि भाषा का बोलदारा बढणा छन, पर हैंकि तर्प समाज मा साफ दिखेणू छ कि लोग

देखे जाउ त एक समै तक या दिक्कत गढ़वाळि भाषा बोलदरौं कि मानसिकता से जुड़ीं रै। वूँतैं लगि कि न हो उ ये मॉडर्न बोले जाण वला़ युग मा पिछड़यां लोगु मा गणे जाउन। एक डौर भाषा का निब्त इनि बि रै कि

गढ़वाळि भाषा मा रळे मिसेणां कारण न हो नौन्याळु तैं कान्वेन्टी शिक्षा ल्हेण मा दिक्कत आउ। मेतैं लग्दु कि ये दौर मा शिक्षा सबसे बड़ु कारण रये ज्यांसे गढ़वाळि भाषा कि बात कन्न वळि अर भाषा थैं सगचुले जादा बोन्न-बच्याण वळि बर्तमान पीढ़िन अपणि नइ पौंळ मा गढ़वाळि भाषा को छैल नि पोड़न दे।

अबारि अच्छि बात या लगदि कि गढ़वाळि भाषा थैं आन्दोलन का तौर पर ऐथर बढ़ौणै कोशिश अर लगातार अलग-अलग जरियों से चलाए जाण वला भाषा-आन्दोलन कखि ना कखि अपणु काम कन्ना छन। भाषा-आन्दोलन का ये लम्बा दौर बटि गुजरिक अबारि जब पिछनैं देखदां त, लगदु कि गढ़वाळि कि बर्तमान पीढ़िन पिछल्या तीसेक बर्स का दौरान गढ़वाळि भाषा का वास्ता भौत काम करि। ईं बात मा क्वी शक नी कि गढ़वाळि भाषा का वास्ता जतगा काम ईं पीढ़िन करि भाषा का वास्ता इतगा काम भाषा-इत्यास का कै बि कालखण्ड मा नि ह्वे। ये कालखण्ड कि शुर्वात 1980 का दशक बटि शुरू ह्वे ज्वा आज बी जारि च। गढ़वाळि भाषा कि बात संसद तक पौंछि, त येई भाषा आन्दोलन का कारण। पर जब जमीन अर भाषा कि हकीकत देखेन्दि त......!

गढ़वाळि कि नईं पीढ़ि का नौन्याळु तैं देखदां, त लगदु कि वूंतैं जतगा दिक्कत गढ़वाळि बोन्न मा औणी च, उतगै गढ़वाळि पढ़न मा भी। लिखण त भौत दूरै बात च। इलै चिन्ता ईं तर्प बटी बि होणी च कि भाषा का वास्ता ऐथर क्या होलु! आज नइ पौंळ भाषा का संस्कारु से भौत दूर च दिखेणी। सामाजिक अर सांस्कृतिक संस्कार भी हर्चदा जाणां छन। ज्वा पीढ़ि अबारि ज्वान च होणी, वींमा अपणि भाषा का निब्त थ्वड़ा भौत लगाव दिखेन्दु च, यु लगाव वूं मा तब हौर जादा मैसूस होन्दु, जब वूंथैं हौरि समाजु का बीच जाणौं मौका मिल्दु। तब वूंथैं मैसूस होन्दु कि मनखि कि अपणि भाषा होणि कतगा जरुरि छ। पर ज्वा पीढ़ि, शैरु मा हो चा गौं मा, अबारि प्राइमरि शिक्षा ल्हेणी छ, तरै-तरौं का दबौ का बाद ईं पीढ़ि का नौन्याळु तक पौंछदु-पौंछदु भाषा का रूप बदलेण लग गेनि। अबारि या पीढ़ि भाषा अर कैरियर का देखणन अंगरेजि अर हिन्दी का दबौ मा जादा छ।

मेरा भौत सारा दगड़या लिख्वार ईं बात तैं मण्ला कि गढ़वाळि भाषान् पिछल्या तीनेक दशक का दौरान जतगा तरक्की करि, गढ़वाळि भाषा कि इतगा तरक्की कबि भी कै दौर मा नि। आज प्रदेश स्तर पर गढ़वाळि थैं पाठ्यक्रम मा शामिल कन्नै बात अर कोशिश होणीं छ। राष्ट्रीय स्तर पर भाषा तैं संविधान कि आठवीं अनुसूचि मा शामिल कन्नै बात होणी छ-या गढ़वाळि भाषा कि सबसे बड़ि तरक्कि छ। ये दौर मा गढ़वाळि भाषा का वास्ता चौदिशु, चौछोड़ि बटि आन्दोलन जना काम नि होन्दा, त भाषा केवल किताबु का भित्र ग्वड़ेकि रै जान्दि।

बोन्नौ मतलब यो छ, कि अगर गढ़वाळि भाषा तैं बचाण त सबसे पैलि गढ़वाळि बोलदरौंकि जुबान से भाषा को इस्तताल होणु जरूरि छ, भाषा इस्तमाल कि चीज च, भाषा बोले जाणि जरूरि छ। इखमु जब हम भाषा तैं बचाणै बात करदां त, भौत सारा लोगु का मन मा इना सवाल बी औन्दन कि क्या गढ़वाळि भाषा खतरा मा छ या मोन्नी छ, जु यांतैं बचाणै बात होणी छन। सच्चै या छ कि कै बि भाषा तैं जब क्वी इस्तमाल हि नि करलु त भाषा अफ्वी चलन से भैर ह्वे जालि। इखमु यो छ भाषा तैं बचाणौ मतलब। ये हिसाब से नई पीढ़ि मा गढ़वाळि भाषा बोले जाणि उतगै जरूरि छ जतगा आज भौतिक विकास का ये युग मा मनख्यूँ का वास्ता औरि देसि या विदेसि भाषा बोन्नि जरूरि छन।

गढ़वाळि भाषा बोलदारी अबारि कि पीढ़ि तैं लग सकदु कि भाषा कि इन्नि नौबत का वास्ता हम बी कखि ना कखि जिम्मेवार छां। भाषा का सवाल गढ़वाळि बोलदरौंकि भावना से जुड़्याँ छन। पर बग्त जब सवाल पुछलो, तब वे दिन ईं पीढ़ि तैं इन अफसोस बि ह्वे सकदु कि आखिर इन क्या कारण रै होला कि उ नई पीढ़ि तैं गढ़वाळि भाषा का संस्कार नि दे सक्या,पर तबारि तक त शैत भौत देर ह्वेजालि, किलैकि भाषा का बारा मा बोलदन कि भाषा रातों-रात ना त बणदि छ अर ना बुस्येन्दि छ। पर इन भी बोलदन कि भाषा जनि चीज एकदां छुटगे त फेर वींकु वापस औंणु मुश्किल क्या तकरीबन असम्भव छ। छैं च कि ना! आपतैं क्या लगदु!

❑❑

एक समळोण्या आयोजन 'दून लिटरेचर फेस्टिवल'

• धमेन्द्र नेगी

विद्वानों कु ब्वलणु छ कि जु मनखि अपणि साहित्यिक अर सांस्कृतिक विरासत तै बिसिरि जान्द वु एक दिन जंगलि ह्वे जांद। भारत देश कि समृद्ध साहित्यिक अर सांस्कृतिक परम्परा तैं साहित्य अर कला का माध्यम से समझण अर समझौणा वास्ता समय-साक्ष्य प्रकाशन देहरादून न दून पुस्तकालय अर संस्कृति विभाग उत्तराखण्ड का सहयोग से दिनांक 24 दिसम्बर, 2016 अर 25 दिसम्बर, 2016 को द्वी दिनौ 'दून लिटरेचर फेस्टिवल-2016' को आयोजन क्रिश्चियन रिट्रीट एण्ड स्टडी सेन्टर राजपुर रोड, देहरादून मा कैरी।

देहरादून मा यु पैलो अवसर छयो जब पूरा देश बिटि साहित्कार पत्रकार, छायाकार, प्रकाशक अर साहित्य प्रेमी पाठक लगभग एक हजार कि संख्या मा यूं द्वी दिनौ मा एक जगा पर एकत्र ह्वेनि। देहरादून मसूरी का बीच घैणा जंगलाऽ बीच आयोजित ये आयोजन न साबित कैरि दे कि आज बि हमारा समाज मा साहित्य प्रेमियों अर उपासकों की क्वी कमि नी।

द्वी दिन का ये ऐतिहासिक साहित्योत्सव मा उद्घाटन का बाद कुल दस सत्र संचालित करे गैनी। प्रत्येक सत्र अपणा आप मा बड़ु रोचक अर ज्ञानवर्द्धक रै।

उद्घाटन सत्र को विषय छयो 'हिन्दी साहित्य का वर्तमान परिदृश्य अर नया मीडिया'। ये सत्रौऽ संचालन करि सुशील उपाध्याय जी न। वरिष्ठ साहित्यकार व समालोचक पुरुषोत्तम अग्रवाल जी न बोल कि साहित्यकारों तैं यीं बातैऽ समझ होण चैणी कि भारत मा सर्वाधिक संख्या युवा पाठकौ कि छ अर युवाओं का वास्ता भौत कम उपयोगी साहित्य रंचेणू छ। हमतैं अपणि वर्तमान समय को जरूरतै हिसाब से साहित्य रचण चैन्द। ये ही सत्र मा वरिष्ठ साहित्यकार लक्ष्मण सिंह 'बटरोही' जी न बोली कि साहित्य कला अर संस्कृति हमतैं अपणि जड़ौं से जुड़णौऽ काम करद। वून बोलीऽ पहाड़ैऽ संस्कृति, साहित्य व परम्परा भौत समृद्ध छ। हमतैं अपणि जड़ौऽ से सदनि जुड्यू रैण चैन्द।

उद्घाटन सत्र का पश्चात पैला सत्रौ विषय छयौ 'भूमण्डलीकरण अर हिन्दी कहानी'। जैकि अध्यक्षता कैरी सुभाष पन्त जी न। सत्रो संचालन युवा साहित्यकार अनिल कार्की न कैरी। जितेन ठाकुर, मनीषा कुलश्रेष्ठ अर कान्ता राय आमंत्रित वक्ता छया।

सुभाष पन्त जी न बोलि कि हम कहानीकारौंऽ जिम्मेदारी छ कि समाज मा जो कुछ बि होणूं छ, जो कुछ बि बदलाव आणू छ वे तैं ही हम अपणी कहानी को विषय बणैं कि पाठकोंऽ समणि प्रस्तुत करौं, ये कामऽ वास्ता कहानीकारौऽ संवेदनशील होणु भौत जरूरी छ।

जितेन ठाकुर जी न अपणा वक्तव्य मा बोलि, आज भूमण्डलीकरणऽ अर सोशल मीडिया इतगा प्रभावी छ कि कबि-कबि त साधारण कहानी बि अच्छु प्रचार पाणा कारण प्रसिद्धि पै जान्द अर भौत भलि कहानी बि पाठकौं तक सै ढंग से नि पौछि सकदि। पैला दिनाऽ दुसरा सत्रौऽ विषय छयो 'हिन्दी कविता चेतना अर पक्षधरता' ये सत्र की अध्यक्षता कैरी वरिष्ठ साहित्यकार लीलाधर जगूड़ी जी न अर सत्रौ सफल संचालन कैरी साहित्यकार अरुण देव जी न। राजेश सकलानी , आशीष मिश्र, वक्ता का रूप मा मंच मा उपस्थित रैनि। लीलाधर जगूड़ी जी को ब्वलणु छयो कि भारत देशऽ अधिकतर लिपियों मा भौत कम अन्तर छ, इलै यू वूं सबि भाषाओं तैं देवनागिरि लिपि मा हि ल्यखण चैन्द यां से रचनाकारों साहित्य जादा से जादा पाठकौं तक पौंछ लु अर हिन्दी भाषा समृद्ध होलि। वूं को ब्वलणु छयो कि क्षेत्रीय भाषाओं तैं संविधान कि छवीं अनुसूचि मा शामिल करणै क्वी जरूरत नी। राजेश सकलानी जी न बोली कि रचनाकारौ काम छ समाज तैं चितळु करणु। आशीष मिश्र जी को ब्वलणु छयो हमरा साहित्य बिटि जरा-जरा कैकि लोक कि किसराण हरचिदि जाणी छ। प्रतिभा कटियार जी न बोली कि समाज कि ज्वलन्त समस्याओं तैं हि कवि तैं अपणि रचनाओं विषय बणाण चैन्द। संचालक अरुण देवन विषय से भटकदा वक्ताओं तैं विषय पर लाणौ खूब कोशिश कैरी। पैला दिनौऽ सत्रौ विषय छयो 'स्त्री अर आधुनिकता' ये सत्र

की अध्यक्षता कैरी कमलापन्त जी न अर सत्रो संचालन कैरी गीता गैरोला जी न। मुख्य वक्ता का रूप मा शीवा असलम अर सुजाता तेवरिया जी मंच मा उपस्थित रैनी। शीवा असलम जी न चिन्ता व्यक्त कैरी कि नारी साख्यों बिटि अन्यो सैणी छ आज बि वीं तैं हमरो समाज कमजोर अर लाचार हि समझणू छ। वून बोलि कि हर धर्म हर क्षेत्र मा महिलाओंऽ समस्या अलग-अलग प्रकारैऽ छन, कखि त आज बि महिला हि महिलाओं कि बैरी-बणणी छन वूंकों हक छिनणा छन।

सुजाता तेवरिया जी को बोलणों छयो कि आज बि नारी बेडरूम अर किचन तक सिमिटि कि रैगे वे ही काम मा वीं वै सराहना मिलदि आज बि महिला तैं एक वस्तु से जादा कुछ नि मनै जान्दा। ये सत्र मा दर्शकों तरफ बिटि खूब सवाल ह्वेनि। सत्रैऽ संचालक गीता गैरोला जी न बोलि महिलाओं क हक कि लड़ै मा हम सब्यूं तैं अग्वड़ि आण चैन्द। सत्र कि अध्यक्षा कमला पन्त जी न बोलि कि प्राचीन समय बिटि वर्तमान तक जै आन्दोलन मा महिलाओं कि भागीदारी रै वो आन्दोलन भौत सफल आन्दोलन ह्वेनि।

पैला दिनऽ अन्तिम सत्रो विषय छयो 'कवि और कविता' कवि सम्मेलन की अध्यक्षता कैरी अतुल शर्मा जी न अर संचालन कैरी प्रमोद भारती जी न। स्वाति मलकानी, माया गोला, नदीम वर्मी, प्रतिभा कटियार, सुभाष तराण, अंवर खरबन्दा, मुनीष चन्द्र, राजेश आनन्द, जिया नहतौरी, शादाब अली, रेखा चमोली, नदीम विस्मित अर राकेश जैन ये सत्र मा आमंत्रित कवि छया। उपस्थित दर्शकों न कवि सम्मेलनोंऽ पूरो आनन्द ले। सबि कवियों न अपणी-अपणी रचनाओं का माध्यम से समाज कि समस्याओं अर समाज का घटण वळि घटनाओं तैं दर्शकों का समणि रखणौं प्रयास कैरी।

दून लिटरेचर फेस्टिवल-2016 का दुसरा दिनौ पैला सत्रौऽ विषय छयौ, 'लोक साहित्य : अतीत, वर्तमान अर भविष्य' वे सत्रै अध्यक्षता प्रभात उप्रेती जी न कैरी अर सत्रौऽ संचालन उमेश चमोला जी न कैरी। नन्द किशोर हटवाल, प्रभा पन्त, प्रीतम अपच्छ्याण अर महावीर रंवाल्टा जी वक्ता का रूप मा मौजूद रैनी।

सत्र का अध्यक्ष प्रभात उप्रेती जी को व्बलणु छयो कि, लोक वेखुण ब्वलदिन जु हमतैं आनन्दित केरि द्यो। अर बिना लोक साहित्य को होणू भौत असम्भव छ। इलै साहित्य तैं अगर ज्यून्दो रखण त लोक तैं ज्यूंदो रखण पोडलो।

युवा साहित्यकार प्रीतम अपच्छ्याण न बोलि कि लोक मा सामुहिकता होंदी इलै लोक मा भौत ताकत होंदी। महावीर रंवाल्टा जी को बवलणु छयो कि लोक ही साहित्य की आत्मा होंदि इलैई साहित्य कि आत्मा तैं ज्यून्दो रखणु भौत जरूरी छ। नन्द किशोर हटवाल जी न बोली कि लोक का भौत सि साहित्य बिखर्यू छ आज जरूरत छ त वै तैं उकरणऽ कि। उमेश चमोला जी को संयोजन भौत भलु रै।

दुसरा दिनौ दुसरो सत्र छयो 'बाल साहित्य : चुनौतियाँ अर संभावनाएँ' विषय पर अर ये सत्र की अध्यक्षता कैरी बाल प्रहरी का सम्पादक उदय किरोला जी न। सत्र मा दिनेश चमोला, सुरेश नौटियाल, उमेश चन्द्र, राजेश उत्साही अर शीश पाल सिंह जी वक्ता का रूप मा मौजूद रैनी अर सत्रौऽ संचालन कैरी मनोहर चमोली 'मनु' न।

उदय किरोला जी न बोलि कि बाल साहित्य तैं पत्र-पत्रिकाओं का उचित स्थान दिए जाण चैन्द। वूं न बोलि कि यना बड़ा आयोजनों मा बाल साहित्य तैं शामिल करण से बाल साहित्य को स्तर अनाहु होलु। राजेश उत्साही जी को ब्वलणु छयो कि साहित्य यनु रचे जाण चैन्द जु बच्चों अर बड़ों का पढ़णाऽ हिसाब से हो। दिनेश चमोला जी न बोलि कि पाठक यो स्वयं निर्णय करदन कि वूं तैं क्या पसन्द आणूं छ अर क्थ लिखे जाण चैन्द।मुकेश नौटियाल जी न बोलि कि बाल साहित्य तैं कल्पना जगत से उबु ल्याणै जरूरत छ। मनोहर चमोली 'मनु' न बोलि कि बाल साहित्य बच्चों कि कल्पना अर सृजन शक्ति का विकास करदा।

ये ही सत्र का समानान्तर एक हैंको सत्र बि संचालित करेगे, जैको विषय 'बाजार मीडिया व लोकतंत्र' ये सत्रैऽ अध्यक्षता कैरी कुशल कोठियाल जी न अर संचालन कैरी भूपेन सिंह जी न। सुन्दर ठाकुर, अनुपम त्रिवेदी, त्रेपन सिंह चौहान अर सुशील उपाध्याय जी ये सत्र मा वक्ता का रूप मा मंच मा मौजूद रैनी।

सुन्दर चन्द्र ठाकुर जी न बोलि कि आज मीडिया पूरी तरौं से बाजार का तरौ से चलणू छ जनता जन चाणी वुन नी होणू इलैई जनता का मीडिया का प्रति नाराजि बि बढ़ण लगीं छ। वूंन बोली कि पत्रकारों तैं जनता पक्ष लेकिकि पत्रकारिता करण चैन्द न कि सरकार पक्ष लेकि।

कुशल कोठियाल जी न बोलि समाज मा मीडिया कि छवि दिन प्रतिदिन नकारात्मक बणणी छ इलैइ जनता कि यीं सोच तैं लड़णाऽ वास्ता जनपक्षीय समाचारों तैं महत्व दीण पोडुलु। त्रेपन सिंह चौहान जी को बोलणो छयो कि मीडिया मा वे लोगों तैं ही औण चैन्द जो जनता को हित चन्दन तब ही लोकतंत्रो, यु चौथु स्तम्भ खड़ु रै सकद।

दुसरा दिनोंऽ तिसरो सत्र छयो 'कथेत्तर साहित्य समय अर समाज' ये सन्त की अध्यक्षता कैरी देवेन्द्र मेवाड़ी जी न अर बीज वक्तव्य दे प्रो० शेखर पाठक जी न ये सत्र का संचालन कैरी दीपक शर्मा अनहद न अर एस०पी० सेमवाल, नवीन नैथानी, तापस चक्रवर्ती जी ये सत्र मा वक्ता का रूप मा मौजूद छया।

शेखर पाठक जी न अपणा वक्तव्य मा पूरी दुनिया का कथेतर साहित्य तैं विशेषकर आत्मकथा, जीवनी अर यात्रा वृतान्त तैं इतना जबरदस्त ढंग से प्रस्तुत कैरी कि यनु लगणू छौ यन पूरो कथेत्तर साहित्य वून अपणी मुट्ठि मा समेटिकि रख्यूं होलू देवेंद्रमेवाड़ी जी न बोलि कि अगर साहित्य कि भाषा सरल अर पाठक तैं ध्यान मा रखि कि रचीं हो त साहित्य तैं बंचण मा आनन्द कि अनुभूति होन्द।

अन्य वक्ताओं न बि अपणि बात दमदार ढंग से रखि। दुसरा दिनौ चौथा सत्रऽ विषय छयो 'आंचलिक साहित्य चुनौतियाँ अर संभावनाएँ', ये सत्र की अध्यक्षता कैरी वरिष्ठ गढ़वळि साहित्यकार अर भाषाविद डॉ० अचलानन्द जखमोला जी न अर सत्रों संचालन कैरी युवा साहित्यकार गिरीश सुन्दरियाल जी न। रमाकान्त बेंजवाल, मदनमोहन डुकलाण, डॉ० हयातसिंह रावत, वीणापाणि जोशी अर भारती पाण्डे जी ये सत्र मा वक्ताओं का रूप मा मौजूद रैनी।

रमाकान्त बेंजवाल जी न बोलि आंचलिक साहित्य का समणि वर्तमान मा सबसे बड़ि चुनौती छ साहित्य तैं पाठकों तक पौंछाणा कि मदन मोहन डुकलाण जी न बोलि वर्तमान मा आंचलिक साहित्य मा हर विधा मा काम छ होणू। किताबौंऽ दगड़ा-दगड़ि समाचार पत्र बि लोक भाषाओं मा प्रकाशित होण चैन्दी किलैकि समाचार पत्र अधिक सरलता से जादा पाठकों तक पौछि जान्द। सोशल मीडिया कि अच्छै अर बुरै पर कि वून विचार रखीं। हयात सिंह रावत जी ने बोलि सरकार तैं लेखकों तैं प्रोत्साहित करण चैन्द अर स्तरीय साहित्य तैं प्रकाशन कि जिम्मेदारी लीण चैन्द वीणापाणी जी को बोलणो छयो कि नया लिख्वारों तैं प्रोत्साहित करे जाण चैन्द। भारती पाण्डे जी न अपणि पीड़ा रखी कि आज वो समय ऐगे जब एक साहित्यकार तैं अपणु हि रच्यूं साहित्य पढ़ना खुण वैतैं खरीदण प्वड़णूं छ।

सत्रौ कुशल संचालन गिरीश सुन्दरियाल जी न अपणि सुरीली आवाज मा एक लोक गीत सुणैकि अर कई अन्य उद्धरण देकी लोकभाषा की समृद्धता अर सशक्तता तैं दर्शकों का समणि रखी वूंक ब्वलणु छयो साहित्यकार त साहित्य रचणा छन अर जन-तन केरी वेतैं प्रकाशित बि करणा छन पर सरकार न यां तरफा बिटि बिल्कुल पीठ फरकयीं छ। सफेद हाथी का रूप मा सरकार भाषा उत्थानऽ वास्ता संस्थान खोल्यां छन।

दुसरा दिनौं अन्तिम सत्र को विषय छयो 'विभिन्न पुस्तकों पर चर्चा' जै को संचालन कैरी छायाकार अर साहित्यकार कमल जोशी जी न व्यावहारिक वेदान्त-सरला बहन समीक्षा राजेश सकलानी जी न कैरी साहिर लुधियानवीं अर मेरे गीत तुम्हारे-सुनील भट्ट समीक्षा मुकेश नौटियाल न कैरी। धार का गिदार-अनिल कार्की समीक्षा शशिभूषण बडोनी न कैरी।

ये द्वी दिनऽ ऐतिहासिक आयोजन मा साहित्य के दगड़ि प्रसिद्ध छायाकार कमल जोशी अर भूमेश भारती कि फोटो प्रदर्शनी अर प्रसिद्ध चित्रकार बी० मोहन नेगी जी कि कविता पोस्टर प्रदर्शनी दर्शकों के वास्ता आकर्षण को केन्द्र रै।

जनचेतना, समय-साक्ष्य प्रकाशन कि पुस्तक प्रदर्शनी का स्टॉल मा बि हर वक्त पाठकों कि भीड़ नजर आणी छै। 'वापस' संस्था द्वारा शुद्ध जैविक उत्पादों को स्टॉल बि अपणा तरफा ध्यान खैचणूं छौ। यूं द्वी दिनौ मा नूतन डिमरी जी कि पुस्तक 'कितने रंग' की बातें व सिद्धी लाल जी कि पुस्तक 'रंगड़्वाट' को लोकार्पण ह्वे।

आयोजन पैली बार ह्वे इलैइ समय प्रबन्धन मा कखिम जरा कमि लगणी छै जन कि बाल साहित्य अर मीडिया वला सत्र तैं समानान्तर चलयेगै जैसे दर्शक आपस मा बंटे गैनी।

❑❑

लोकभाषौं की सम्भावना अर चुनौती

• गिरीश सुन्दरियाल

समय साक्ष्य प्रकाशन द्वारा देरादूण मा जो साहित्यिक कौथिग वीरयेगे वा कई माइनो मा ऐतिहासिक अर उल्लेखनीय रये। मेरी जानकारी मा ये शहर मा कै प्रकाशन द्वारा इतगा बड़ो साहित्य पर केन्द्रित यो पैलो कौथिक रे होलू जैमा हिन्दी का अलावा कतगै लोकभाषा, आँचलिक भाषा का इतिहास वर्तमान से ल्हेकि वेकी विकास-यात्रा की अनेक साहित्यकारों की उपस्थिति मा उल्लेखनीय चर्चा-परिचर्चा ह्वे।

ये हि क्रम मा एक सत्र उत्तराखण्ड की आँचलिक भाषा साहित्य का नौ बि रये। ये सत्र मा गढ़वाळि-कुमाउंनी का साहित्यकारोन उत्तराखण्ड को लोक साहित्य: सम्भावना एवं चुनौतियाँ विषय पर अपणा-अपणा विचार प्रस्तुत करीने। यखम य बात साफ छ कि आँचलिक साहित्य मतलब गढ़वाळि-कुमाउंनी, जौनसारी समेत तमाम जनजातीय भाषा जो उत्तराखण्ड मा ब्वले जांदिन, यद्यपि य बात बि सैहि छ उत्तराखण्ड मा मुख्य रूप से गढ़वाळि अर कुमाउंनी भाषा को हि विपुल साहित्य छ। अन्य भाषौं का मौखिक साहित्य त बिजां ह्वे सकद पर लिखित का नौ पर सन्तराम हुई छ।

कार्यक्रम का उद्घाटन भाषण मा रमाकान्त बेंजवाल जी न बोले कि गढ़वाळि व कुमाँऊनी भौत प्राचीन अर समृद्ध भाषा छन, वून यूं भाषौं की शब्द सम्पदा अर समृद्धता को अनेकों उदाहरण दे की वर्णन करे। यख की प्रत्येक आंचलिक भाषा राष्ट्र भाषा हिन्दी तै हौर अधिक समृद्धि करि सकदन पर खेद को बिषय छ कि कुछ हिन्दी का तथा कथित फुन्द्या साहित्यकार यं भाषौं तैं हिन्दी को दुश्मन बतौणा छन य मात्र तौंकी दुर्बुद्धि अर लोक मा तौंकी अस्वीकार्यता तैं ही दर्शाद। दगड़ी ही यू फुन्दयौं तैं इन बि लग्द कि आँचालिक भाषौं का फलण-फुलण से तौंकी दुकनदरि चौपट ह्वे सकद यान हि सि यूं भाषौं तैं काळु खबरू बरोबर द्यखदन।

कुमाउंनी भाषा की पत्रिका 'पहरु' का सम्पादक डॉ० हयात सिंह रावत जीन बि कुमाउंनी भाषा को विस्तृत स्वरूप समिणि धैरि। वूंन बोले कि यूं भाषौं मा साहित्य की प्रत्येक विधा को वर्णन अर सृजन छ पण चुनौती या छ कि ये तैं पाठकों तक पौछणों भौत कठिन छ। संसाधनों की नितान्त कमी छ। सरकारी स्तर पर यूं भाषौं की क्वी सुणै नी छ होणी। कुछ हम जना जिदेर अर सनकी लग्या छन यूं भाषौं तै ठड्यौण मा। भाषा आम आदिम का प्रयास से ही अस्तित्व मा रै सकद।

वरिष्ठ साहित्यकार अर 'चिट्ठी-पत्री' का सम्पादक मदन मोहन डुकलाण जीन बोले कि यूं लोक भाषौं की अपार सम्भावना छन। आज सैकड़ों ग्रन्थ यूं भाषौं का मौजूद छन अर ल्यखवारू की संख्या बि दिन प्रतिदिन बढ़दै जाणी छ। लेकिन चुनौती बि कम नि छन। सबसे पैली चुनौती त पाठकों की समस्या छ अर कमोवेश ये प्रत्येक भाषा साहित्य की समस्या छ अगर पाठक छैं बि छ त भोल लेकी पढनौ तयार नि छन। यूं भाषौं का प्रति हमारा राजनीतिज्ञों मा क्वी राजनैतिक इच्छा शक्ति बि न दिखेंदी। यखै भाषा अपणौं कै बीच पर्‌या बणी छन्। साहित्य अकादमी द्वारा मान्यता प्राप्त व पुरस्कृत होणा का बावजूद भी राज्य विधान सभा यखै द्वी प्रमुख भाषौं तै संविधान की आठौं अनुसूची मा शामिल कराणौ क्वी प्रयास नि कनी छ।

सत्र का अन्य वक्तों मध्ये श्रीमती भारती पाण्डे, श्रीमती पाणि जोशीन बि अपणा-अपणा चिवार रखिने। कार्यक्रम कि अध्यक्षता करदारा डॉ० अचलानन्द जखमोला जीन आँचलिक भाषौं को भाषा वैज्ञानिक पक्ष प्रस्तुत करे। वून बोले ये पूर्णरूपेण वैज्ञानिक भाषा छन् यू तैं कै अन्य भाषा से कमतर नि समझे जाण चैंद। आँचलिक भाषौं को भविष्य भौत उज्जवल छ किलैकि निरन्तर नै ल्यखवार नै कितबि समिणि औणी छन् लगातार कार्यक्रम वीरेणा छन्। क्वी बि धाणी तबि ज्यूंदी रैंद जब वींका समिणि चुनौती हो। यूं भाषौं का समिणि भौत चुनौती छन् जो कि वींकी ताकत तैं हौरि बढौंदिन।

वास्तौं मा द्यखे जावु त गौं-गळा मा भाषा पैलीइ जन छ। शहरों मा न भाषा पैलि छै न अब, यख कार्यक्रमों का दौरान अचणचक सबुतैं अपणि भाषौं की चिन्ता ह्वे जांद। ल्यखवारू कलाकारू को भाषाई प्रेम कितब्यू अर कार्यक्रमु तक ही सीमित छ। यख तक कि जु यूं मान-सम्मान अर रुप्या बि कमौणा छन वूंकै हि घौर मा

यूं भाषौं को नौ लिंदरो नी छ। य बड़ी दुर्भाग्य की बात छ साहत्यकारों अर कलाकारों तैं दिल पर हाथ धौरी जरूर स्वचण चैंद कि हम अपणि भाषौं दगड़ि न्याय कना छौं।

कार्यक्रम का दौरान सुणदरा-द्यखदरोंन वक्तों से प्रश्न बि करिने जन कि एक व्यक्ति न पूछे कि आँचलिक भाषा की जो पत्रिका छन वूं मा जनजातीय भाषौं का वास्ता क्वी जगा छैं छ कि न? जनकि रवाल्टी रड़ मरछा-तोल्छा जाड़ आदि भाषा छन्। ये प्रश्न का जवाब मा संचालकन बि उत्तर दे कि पैलित यूं भाषौं को साहित्य उपलब्ध नी अगर उपलब्ध हो त गढ़वाळ मा जु एक मात्र पत्रिका 'धाद' प्रकाशित हूणी छ मि वींका तरपां बिटी आश्वस्त करदो कि हम जरूर यूं तैं स्थान द्यूला, पर लैलि यूं को साहित्य हम तक पौंछावा त सै। जौं भाषौं मा ल्यखेणू अर बंचेणू रालू वो छप्यालू बि द्यख्यालु बि अर सैंक्यालु बि। बिना साहित्य का भाषा का अस्तित्व पर ही प्र न चिहन लगि जांद। साहत्य ल्यखेणु बि जरूरी छ। कार्यक्रमु को वीरेणु बि जरूरी छ पर सबचुले जरूरी छ अपणा घौर अपणा समाज मा अपणि भाषा मा बच्चांणु, याखुणि बि क्य सरकारि मदद चयेंद?

❑❑

याद करे गेनि चन्द्र सिंह राही

• रमेश चन्द्र घिल्डियाल

चन्द्र सिंह राही जी थैं हम से बिछड्यां एक साल ह्वेगी। वूंकि पुण्य तिथि पर दिल्ली मा वूं तैं याद करेगे, वूंका गीतूं तैं गयेगे। यना कालजयी कलाकार थैं वूंकि कला का दगड़ि ही याद करेगे। जब बि वूंकि याद आंद त गुजर्यां बगत कि भौत सारि बथा एक-एक करिकी आंख्यूं कि समणि आण बैठि जांदी। वूंका दगड़ि बितयूं वो बगत अब एक समळौण बणिकि रैगे।

चन्द्र सिंह राही जी एक अच्छा कलाकार त छईं छा दगड़ि हि एक बड़ा मयळदु मनिख बि छा। वूंका दगड़ि बैंठिकि छ्वीं-बथ लगौण मा बड़ो आनन्द मिल्दो छयो। चन्द्र सिंह राही जी से मेरो सम्बन्ध पिछला पचास बरसु बटि छौ। जख तक मी थैं याद छ मेरि वूं दगड़ि पैलि मुलाकात सन् 1966 मा गढ़वाळ भ्रातृ परिषद का एक सांस्कृतिक कार्यक्रम मा हंसराज कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय मा ह्वे छै। वे कार्यक्रम मा वूं थै गढ़वाळी का जण्यां-मण्यां कवि कन्हैयालाल डंडरियाल जी ल्हेकि ऐ छा। वूंका दगड़ि एक हौर कवि मथुरा प्रसाद बमराड़ा 'बेचैन' जी बि छा जौं थै आज लोग बाबा बमराड़ा का नौ से जणदन। डंडरियाल जी न मेरा परिचय राही जी से अर बेचैन जी से करै। चन्द्र सिंह राही जी उबारि 23-24 बरस का रै होला। वूंको स्वाणो रूप, घुंघर्यळा बाल अर मिट्ठो बुलणो बच्याणो मीथें भौत प्रभावित करिगे। तब वो नया-नया दिल्ली मा ऐ छा अर लोगों का दगड़ि वूंकि जाण पछ्याण भौत सीमित छै। फिर वूंका दगड़ि मुलाकात अक्सर गढ़वाळि कवि सम्मेलनुं मा होण लगिगे। अपणि सुरीली आवाज से वो भौत जल्दि हि दिल्ली का संगीत कार्यक्रमु मा भौत लोकप्रिय ह्वेनी। वूंकि पछ्याण बणन बैठिगे। लोग वूंका गीतु थैं पसंद करण बैठिगेनि। धीरे-धीरे वो कामयाबी की सीढ्यूं पर चढ़दा गैनि। आकाशवाणी दिल्ली अर नजीबाबाद बटि वूंका गीत प्रसारित होण बैठिगेनि। जल्दि ही वो आकाशवाणी का 'ए' ग्रेड का कलाकार बणिगेनी।

चन्द्र सिंह राही जी थैं गायकी विरासत मा मिलि छै। वूंका बुबाजी बि खानदानी जागरी छा। चौंदकोट का गिंवाली गौं बिटि निकळि कि चन्द्र सिंह राही जी पूरा देश मा छै गेनि। गढ़वाळ अर दिल्ली का अलावा वूं थै बम्बई, कानपुर, लखनऊ, चण्डीगढ़, जयपुर अर देहरादून बिटि बि बुलावा औण बैठिगे।

चन्द्र सिंह राही लोक गायक का साथ-साथ भौत अच्छा गीतकार बि छा। वूंका गीतु का द्वी संग्रह रमछोळ अर गीतगंगा का नौ से प्रकाशित ह्वेनी। दगड़ा-दगड़ी वुंका गीतु का कतगै कैसेट बि बाजार मा ऐनी अर भौत पसंद करेगेनी।

एक अच्छा गीतकार अर गायक का दगड़ा-दगड़ि चन्द्र सिंह राही गढ़वाळी लोकगीत अर लोकसंगीत का अच्छा संग्रहकर्ता अर शोधकर्ता बि छा। वूंका पास लोकगीतों को अथा भण्डार छौ। भारत सरकार का संस्कृति विभाग से वूंथै गढ़वाळी लोकगीतों का शोध का वास्ता अनुदान बि मिलि छौ। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न बि वूंथै कतगै दां गढ़वाळी लोकसंगीत पर लेक्चर-डिमासट्रेशन का वास्ता बुलै छौ। यां मा क्वी संदेह नि छौ कि गढ़वाळी लोकसंगीत पर राही जी एक ऑथरिटी छा अर वेका विषय मा घंटो बोलि सकदा छा। डौंर अर हुड़का का दगड़ि लोकसंगीत की बारिकी समझौण मा वूंथै कमाल हासिल छयो। यांका दगड़ि हि लोकवाद्यों फर बि वूंकि अच्छी पकड़ छै। डौंर अर हुड़का बजौण मा त उ कुशल छैं ही छा यांका अलावा बसुंली, मोछंग, ढोल अर हारमोनियम बि उ भौत अच्छो बजांदा छा। गायकी त वूंकि बेमिसाल छै ही छै। वूंकि ढौळ, तान अर मुरक्यूं को बि क्वी जवाब नि छयो। हर बार वूंकि गायकी मा नयोपन अर ताजगी मिल्दि छै।

वूंको सदाबहार गीत 'सर्ग तारा जुन्याळी राता, को सुणलो तेरी मेरी बाता' यांको प्रमाण छ कि उ कैं श्रेणी का गायक छा। बेशक आज चन्द्र सिंह राही हमारा बीच मा नि छन। पर जब तक गढ़वाळी लोक संगीत ज्यूंदो रालो।

❑❑